तैयार करके शाम की तरफ़ रवाना की[1] ज़ैद बिन हारसा रज़ि0 को जो आंहज़रत सल्ल0 के गुलाम थे सिपहसालारी मिली और इर्शाद हुआ कि इनको दौलते शहादत नसीब हो तो जअ्फ़र तय्यार रज़ि0 और वह भी शहीद हो जाएं तो अब्दुल्लाह रज़ि0 बिन रवाहा फ़ौज के सरदार हों।[2]

गो यह मुहिम क़िसास लेने की ग़र्ज़ से थी, लेकिन चूंकि तमाम मुहिम्मात का अस्ली मेहवर तबलीग़े इस्लाम था, इर्शाद हुआ कि पहले उनको दावते इस्लाम दी जाए, अगर वह इस्लाम क़बूल कर लें तो जंग की ज़रूरत नहीं, यह भी हुक्म हुआ कि इज़्हारे हमदर्दी के लिये उस मक़ाम पर जाना जहां हारिस बिन उमैर रज़ि0 ने अदाए फ़र्ज़ में जान दी है, सनीयतुल वदाअ् तक आंहज़रत सल्ल0 ख़ुद फ़ौज की मुशायअत के लिये तशरीफ़ ले गए, सहाबा रज़ि0 ने पुकार कर दुआ की कि ख़ुदा सलामत और कामियाब लाए।[3]

फ़ौज मदीना से रवाना हुई तो जासूसों ने शुरहबील को ख़बर दी, उसने मुक़ाबला के लिये कम व बेश एक लाख की फ़ौज तैयार की, उधर क़ैसरे रूम (हिरक़्ल) क़बाइले अरब की बेशुमार फ़ौज लेकर मआब में ख़ेमा ज़न हुआ जो बुलक़ाअ् के अज़्लाअ़ में है, हज़रत ज़ैद रज़ि0 ने यह हालात सुनकर चाहा कि इन वाक़िआत से दरबारे रिसालत को इत्तिला दी जाए और हुक्म का इंतिज़ार किया जाए, लेकिन अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि0 ने कहा, हमारा अस्ल मक़्सद

(1) ज़ादुल मआ़द 3-381 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

(3) सीरतुन्नबी 1-506

फ़त्ह नहीं बल्कि दौलते शहादत है, जो हर वक़्त हासिल हो सकती है।[1] ग़र्ज़ यह मुख़्तसर गिरोह आगे बढ़ा और एक लाख फ़ौज पर हमला आवर हुआ, हज़रत ज़ैद रज़ि० बर्छियां खाकर शहीद हुए, उनके बाद हज़रत जअ्फ़र तय्यार रज़ि० ने अलम हाथ में लिया, घोड़े से उतर कर पहले खुद अपने घोड़े के पांव पर तलवार मारी कि उसकी कोंचें कट गईं, फिर इस बेजिग्री से लड़े कि तलवारों से चूर चूर होकर गिर पड़े[2] हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० का बयान है कि मैंने उनकी लाश देखी तलवारों और बर्छियों के 90/ज़ख़्म थे लेकिन सबके सब सामने की जानिब थे, पुश्त ने यह दाग़ नहीं उठाया था,[3] हज़रत जअ्फ़र रज़ि० के बाद अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने अलम हाथ में लिया और वह भी दादे शुजाअ़त देकर शहीद हुए, अब हज़रत ख़ालिद रज़ि० सरदार बने और निहायत बहादुरी से लड़े, सहीह बुख़ारी में है कि आठ तलवारें टूट कर गिरीं,[4] लेकिन लाख से तीन हज़ार का मुक़ाबला किया था, बड़ी कामियाबी यही थी कि फ़ौजों को दुशमन की ज़द से बचा लाए।

रसूलुल्लाह सल्ल० को इस वाक़िआ का सख़्त सदमा हुआ, हज़रत जअ्फ़र रज़ि० से आप सल्ल० को ख़ास मुहब्बत थी, उनकी शहादत का निहायत क़लक़ था, आप

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-375
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-378
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता
(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता, पूरी तफ़सील इब्ने हिशाम में मौजूद है, 2-379, 380

सल्ल0 मस्जिद में जाकर ग़मज़दा बैठे, उसी हालत में एक शख़्स ने आकर कहा कि जअ़फ़र रज़ि0 की मस्तूरात मातम कर रही हैं और रो रही हैं, आप सल्ल0 ने मना करा भेजा, वह गए और वापस आकर कहा कि मैंने मना किया, लेकिन वह बाज़ नहीं आतीं, आप सल्ल0 ने दोबारा भेजा, वह फिर गए और वापस आकर अ़र्ज़ की कि हम लोगों की नहीं चलती, आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि "तो इनके मुंह में ख़ाक भर दो" यह वाक़िआ हज़रत आइशा रज़ि0 से सहीह बुख़ारी में मन्क़ूल है, सहीह बुख़ारी में यह भी है कि हज़रत आइशा रज़ि0 ने उस शख़्स से कहा कि "ख़ुदा की क़सम तुम यह न करोगे (मुंह में ख़ाक डालना) और आंहज़रत सल्ल0 को तकलीफ़ से नजात न मिलेगी।"[1]

फ़त्हे मक्का

6 हि0 में जो मुआहदा कुरैश ने नबी सल्ल0 से बमक़ामे हुदैबिया किया था उसकी एक दफ़आ़ में यह था कि दस साल जंग न होगी, इस शर्त में जो क़ौमें नबी सल्ल0 की जानिब मिलना चाहें वह उधर मिल जाएं और जो कुरैश की जानिब मिलना चाहें वह इधर मिल जाएं।

इसके मुवाफ़िक़ बनी खुज़ाआ़ नबी सल्ल0 की तरफ़ और बनू बक्र कुरैश की तरफ़ मिल गए थे, मुआहदा को अभी दो बरस भी न पूरे हुए थे कि बनू बक्र ने बनू खुज़ाआ़ पर हमला कर दिया और कुरैश ने भी अस्लहा से

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए मौता

इम्दाद दी, अकरमा बिन अबी जह्ल, सुहैल बिन अ़म्र, (मुआहदा पर उसी ने दस्तख़त किये थे) सफ़वान बिन उमय्या (मशहूर सरदाराने कुरैश) खुद भी नक़ाब पोश होकर मअ़ अपने हवाली व मवाली बनू खुज़ाआ़ पर हमला आवर हुए, उन बेचारों ने अमान भी मांगी, भाग कर ख़ानए कअ़बा में पनाह ली, मगर उनको हर जगह बेदरेग़ तहेतेग़ किया गया, जब यह मज़लूम "اِلٰهَكَ اِلٰهَكَ" (अपने खुदा के वास्ते) कह कर रहम की दरख़्वास्त करते तो यह ज़ालिम उनके जवाब में कहते थे "لَا اِلٰـهَ اَلْيَوْمَ" (आज खुदा कोई चीज़ नहीं)[1]

मज़लूमों के बचे खुचे चालीस आदमी जिन्होंने भागकर अपनी जान बचाई थी, नबी सल्ल0 की ख़िदमत में पहुंचे और अपनी मज़लूमी व बरबादी की दास्तान सुनाई, अ़म्र बिन सालिम खुज़ाई ने पुरदर्द नज़्म में तमाम वाक़िआत गोश गुज़ार किये, उसके जस्ता जस्ता अश्आ़र दर्ज किये जाते हैं:

اِنَّ قُرَيْشاً أَخْلَفُوْكَ الْمَوْعِدَا　　وَنَقَضُوْا مِيْثَاقَكَ الْمُؤَكَّدَا

وَجَعَلُوْا بِيْ فِيْ كَدَاءَ رُصَّدا　　وَزَعَمُوْا أَنْ لَّسْتُ أَدْعُوْا أَحَدَا

وَهُمْ أَذَلُّ وَأَقَلُّ عَدَدَا　　هُمْ بَيَّتُوْنَا بِالْوَتِيْرِ هُجَّدَا

فَقَتَلُوْنَا رُكَّعًا وَّسُجَّداً

तरजुमाः "कुरैश ने आप सल्ल0 से वादा ख़िलाफ़ी की, उन्होंने मज़बूत मुआहदा को जो आप सल्ल0 से किया था तोड़ डाला, मक़ामे कदाअ़ में लोगों को

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-390, तारीख़े तबरी 2-153

घात में लगा दिया, वह समझते हैं कि हमारी इम्दाद को कोई नहीं आने का, वह ज़लील हैं और क़लील हैं, उन्होंने वतीर में हमको सोते में जा लिया, हमको रुकूअ़ व सुजूद की हालत में पारा पारा कर दिया।''

मुआहदा की पाबंदी, फ़रीक़े मज़लूम की दाद रसी, दोस्तदार क़बाइल की आइंदा हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से नबी सल्ल0 मक्का की जानिब सवार हो गए, दस हज़ार की जमईयत हमरिकाब थी,(1) दो मंज़िल चले थे कि राह में अबू सुफ़यान बिन अल हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुललाह बिन अबू उमय्या आंहज़रत सल्ल0 से मिले।

यह वह लोग थे जिन्होंने नबी सल्ल0 को सख़्त ईज़ाएं दी थीं और इस्लाम के मिटाने में बड़ी कोशिशें की थीं, आंहज़रत सल्ल0 ने उन्हें देखा और रुख़ फेर लिया, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा ने अ़र्ज़ कीः

''या रसूलुल्लाह सल्ल0! अबू सुफ़यान आपके हक़ीक़ी चचा का बेटा है और अब्दुल्लाह हक़ीक़ी फूफी (आतिका) का लड़का है, इतने क़रीबी तो मरहमत से महरूम न रहने चाहियें।(2)

इसके बाद हज़रत अली रज़ि0 ने उन दोनों को यह तरकीब बताई कि जिन अलफ़ाज़ में बिरादराने यूसुफ़ ने मुआफ़ी की दरख़्वास्त की थी तुम भी आंहज़रत सल्ल0 की

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फ़त्ह फ़ी रमज़ान

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-400, मुस्तदरक हाकिम 3-46, ज़हबी ने सनद को मुस्लिम की शर्त पर क़रार दिया है।

ख़िदमत में जाकर उन्हीं अलफ़ाज़ का इस्तेमाल करो, नबी सल्ल0 के अफ़्व व करम से उम्मीद है कि ज़रूर कामियाब हो जाओगे।

उन्होंने नबी सल्ल0 के हुज़ूर में हाज़िर होकर यह आयत पढ़ी:

تَاللّٰهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِيْنَ

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने जवाब में फ़रमाया:

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِيْنَ[1]

उस वक़्त अबू सुफ़यान ने जोश व नशात से यह अशआ़र पढ़े:

لَعَمْرُكَ إِنِّيْ يَوْمَ أَحْمِلُ رَايَةً لِتَغْلِبَ خَيْلُ اللَّاتِ خَيْلَ مُحَمَّدٍ
لَكُنْتُ الْمُدْلَجَ الْحَيْرَانَ أُظْلِمَ لَيْلَهُ فَهٰذَا أَوَانِيْ حِيْنَ أُهْدَىٰ وَأَهْتَدِيْ
هَدَانِيْ هَادٍ غَيْرُ نَفْسِيْ وَنَالَنِيْ مَعَ اللّٰهِ مِنْ طَرَّدْتُ كُلَّ مُطَرَّدٍ

"क़सम है कि जिन दिनों निशाने जंग इसलिये उठाया करता था कि लात (बुत का नाम) का लशकर मुहम्मद (सल्ल0) के लशकर पर ग़ालिब आ जाए, उन दिनों मैं उस ख़ार पुश्त जैसा था जो अंधेरी रात में टक्करें खाता हो, अब वक़्त आ गया है कि मैं हिदायत पाऊं और सीधे रस्ता जाऊं, मुझे हादी ने न कि मेरे नफ़्स ने हिदायत दी है और ख़ुदा का रास्ता मुझे उस शख़्स ने बताया

(1) ज़ादुल मआ़द 3-400

जिसे मैंने धुतकार दिया और छोड़ दिया था।"

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः हां! तुम तो मुझे छोड़ते ही रहे थे।[1]

नबी सल्ल0 की ख़्वाहिश यह थी कि अह्ले मक्का को इस आमद की ख़बर न होने पाए, चुनांचे ऐसा ही हुआ कि जब आंहज़रत सल्ल0 मक्का तक पहुंच कर बाहर ख़ेमाज़न हो गए, तो आप सल्ल0 ने हुक्म फ़रमाया कि आग के अलाव रौशन किये जाएं, चुनांचे इसकी तअ़मील की गई, उस वक़्त अबू सुफ़यान बिन हर्ब जासूसी की ग़र्ज़ से और हालात का अंदाज़ा करने के लिये उधर से गुज़रे और उनके मुंह से निकला कि इस शान का लशकर और इस तरह की रौशनी तो मैंने इससे पहले कभी नहीं देखी थी, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 इससे पहले हिज्रत कर चुके थे और इसी लशकर में मौजूद थे, उन्होंने अबू सुफ़यान की आवाज़ पहचान ली और कहा देखो रसूलुल्लाह सल्ल0 लोगों में तशरीफ़ फ़रमा हैं, कल क़ुरैश का अंजाम कितना हौलनाक होगा, फिर यह सोच कर कि कोई मुसलमान उनको देख लेगा तो फ़ौरन उनका काम तमाम कर देगा, अपने ख़ंजर के पीछे उन्हें संभाल लिया और नबी सल्ल0 के पास लाए, जब आप सल्ल0 की नज़र मुबारक उन पर पड़ी तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया, अबू सुफ़यान तुम्हारा भला हो.....क्या अभी तक इसका वक़्त नहीं आया कि तुम इस पर ईमान लाओ कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं,

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-401, मुस्तदरक हाकिम 3-46

उन्होंने कहा कि मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम हैं और किस क़दर सिला रहमी करने वाले हैं, ख़ुदा की क़सम मैं तो यह समझता हूं कि अल्लाह के सिवा किसी और मअ़बूद का वुजूद होता तो आज मेरे कुछ काम आता, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः अबू सुफ़यान ख़ुदा तुम्हें समझ दे, क्या अब भी इसका वक़्त नहीं आया कि तमु इस बात का इक़रार करो कि मैं अल्लाह का रसूल हूं, अबू सुफ़यान ने कहा मेरे मां बाप आप पर कुर्बान! आप कितने हलीम और कितने करीम और सिला रहमी करने वाले हैं, लेकिन जहां तक इस मुआमला का तअ़ल्लुक़ है इस बारे में मुझे अभी शुब्हा है, हज़रत अब्बास रज़ि0 ने फ़रमाया बंदए ख़ुदा! क़ब्ल इसके कि तुम्हारी गर्दन तलवार से उड़ा दी जाए इस्लाम क़बूल कर लो और गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं, यह सुन कर अबू सुफ़यान इस्लाम लाए और शहादत देकर इस फ़रीज़ा से उह्दा बरआ हुए।[1]

मुआफ़ी की सदाए आम

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने मुआफ़ी और अम्न व हिफ़ाज़त का दाइरा उस रोज़ वसीअ़ फ़रमा दिया कि अह्ले मक्का में से सिर्फ़ वही शख़्स हलाक हो सकता था जो ख़ुद मुआफ़ी और सलामती का ख़्वाहिशमंद न हो और अपनी ज़िंदगी से बेज़ार हो, आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़यान के

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-402, 403, ज़ादुल मआ़द 3-398, 401, 402

घर में दाख़िल हो जाएगा उसको पनाह मिलेगी, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा वह महफ़ूज़ है, जो मस्जिदे हराम में दाख़िल होगा उसको अम्न है, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अह्ले लशकर को हिदायत फ़रमाई कि मक्का में दाख़िल होते वक़्त सिर्फ़ उस शख़्स पर हाथ उठाएं जो उनकी राह में हाइल हो और उनसे मज़ाहमत करे, आप सल्ल0 ने इसका भी हुक्म फ़रमाया कि अह्ले मक्का की जाइदाद के बारे में मुकम्मल एहतियात बरती जाए इसमें मुतलक़ दस्त दराज़ी न की जाए।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत अब्बास रज़ि0 को हिदायत की कि अबू सुफ़यान को ऐसी जगह ले जाएं जहां से इस्लामी दस्तों की पेशक़दमी का नज़ारा हो सके, यह फ़ातिहाना दस्ते समंदर की मौजों की तरह मुतलातिम नज़र आते थे, मुख़्तलिफ़ क़बाइल अपने अपने झंडों के साथ गुज़र रहे थे, जब कोई क़बीला गुज़रता तो अबू सुफ़यान अब्बास रज़ि0 से उसका नाम दरयाफ़्त करते और कहते कि मुझे इस क़बीला से क्या सरोकार।[2] यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्ल0 बनफ़्से नफ़ीस एक मुसल्लह दस्ते में तशरीफ़ लाए जो सब्ज़ मअ़लूम हो रहा था, यह मुहाजिरीन और अंसार का आहन पोश दस्ता था कि उनकी सिर्फ़ आंखें नज़र आती थीं, अबू सुफ़यान ने यह मंज़र देखकर कहा कि खुदा की शान अब्बास यह कौन लोग हैं, उन्होंने जवाब दिया कि

(1) ज़ादुल मआ़द 3-403

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ऐना रक्कज़न्नबीयो सल्ल0 अर्रायता यौमल फ़त्हे

रसूलुल्लाह सल्ल0 हैं जो मुहाजिरीन और अंसार के जुलू में तशरीफ़ ले जा रहे हैं, उन्होंने कहा इनमें से किसी को इससे पहले यह ताक़त और शान व शौकत हासिल नहीं थी, ख़ुदा की क़सम ऐ अबुल फ़ज़्ल! तुम्हारे भतीजे का इक़्तिदार आज की सुब्ह कितना अज़ीम है, उन्होंने कहा, अबू सुफ़यान! यह नुबूव्वत का मोअ़जिज़ा है।

इसके बाद अबू सुफ़यान ने बुलंद आवाज़ से यह एलान किा कि ऐ कुरैश के लोगो! यह मुहम्मद (सल्ल0) इतनी ताक़त के साथ तुम्हारे पास आए हैं जिसका तुमको कभी तजर्बा न हुआ होगा, अब जो अबू सुफ़यान के घर में आ जाएगा उसको अमान दी जाएगी, लोग यह सुनकर कहने लगे, अल्लाह तुम से समझे, तुम्हारे घर की हक़ीक़त ही क्या है कि हम सबको उस घर में पनाह मिल सके? फिर उन्होंने कहा, जो अपने घर का दरवाज़ा बंद कर लेगा उसको अमान मिलेगी, जो मस्जिद (मस्जिदे हराम) में चला जाएगा उसको भी अमान मिलेगी, चुनांचे लोग मुंतशिर हो गए, अपने अपने घरों और मस्जिदे हराम में पनाह गीर हो गए।[1]

नियाज़मंदाना, न कि फ़ातिहाना दाख़िला

रसूलुल्लाह सल्ल0 मक्का में इस शान से दाख़िल हुए कि सर मुबारक अब्दीयत व तवाज़ोअ़ के ग़ल्बे से बिल्कुल झुक गया था, क़रीब था कि आप सल्ल0 की ठोड़ी ऊंट के

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-404, 405, सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब फ़त्हे मक्का।

कजावे से लग जाए[1] आप सल्ल0 दाख़िल होते वक़्त सूरए फ़त्ह पढ़ रहे थे।[2]

मक्का के इस फ़ातिहाना दाख़िले में (जो जज़ीरतुल अरब का क़ल्ब व जिगर और रूहानी व सियासी मर्कज़ था) अद्ल व मुसावात, तवाज़ोअ् और इज़हारे अब्दीयत का कोई अंदाज़ न था, जिसको आप सल्ल0 ने इख़्तियार न फ़रमाया हो, उसामा को जो आप सल्ल0 के मौला (आज़ाद कर्दा गुलाम) हज़रत ज़ैद रज़ि0 के साहबज़ादे थे, आप सल्ल0 ने अपनी सवारी के पीछे जगह दी, बनी हाशिम और अशराफ़े कुरैश में से जिनकी बड़ी तअ़दाद वहां मौजूद थी यह शर्फ़ किसी को हासिल न हुआ,[3]

फ़त्हे मक्का के रोज़ एक शख़्स ने आप सल्ल0 से गुफ़्तगू की तो उस पर कपकपी तारी हो गई, आप सल्ल0 ने फ़रमाया डरो नहीं इत्मीनान रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूं, मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का लड़का हूं जो गोश्त के सूखे टुक्ड़े खाया करती थी।[4]

मुआफ़ी और रहम का दिन है ख़ूंरेज़ी का नहीं

जब हज़रत सअ्द बिन उबादा रज़ि0 जो अंसार दस्ता के अमीर थे, अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे, उन्होंने कहा "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْمَلْحَمَةِ، اَلْيَوْمُ تُسْتَحَلُّ الْكَعْبَةُ، اليوم اَذَلَّ اللّٰهُ قُرَيْشاً"

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-405, मुस्तदरक हाकिम 3-50

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब दुख़ूलुन्नबी सल्ल0 मिन अअ्ला मक्का

(4) मुस्तदरक हाकिम 3-50, ज़हबी ने शैख़ैन की शर्त पर क़रार दिया है।

(आज घमसान का दिन है, और ख़ूंरेज़ी का दिन है, आज कअ़बा में सब जाइज़ होगा, अल्लाह तआला ने कुरैश को ज़लील किया है) जब रसूलुल्लाह अपने दस्ते में अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप सल्ल0 से इसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह सल्ल0 आपने सुना सअ़द ने अभी क्या कहा? आप सल्ल0 ने फ़रमाया क्या कहा है? उन्होंने वह सब दोहराया, सअ़द के जुम्ले को आप सल्ल0 ने नापसंद फ़रमाया और फ़रमाया "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْمَرْحَمَة، اَليومَ يُعِزُّ اللّٰهُ قريشاً، ويُعَظِّمُ اللهُ الْكَعْبَةَ" (नहीं! आज तो रहम व मुआफ़ी का दिन है, आज अल्लाह तआला कुरैश को इ़ज़्ज़त अता फ़रमाएगा और कअ़बा की अज़मत बढ़ाएगा)

आप सल्ल0 ने हज़रत सअ़द रज़ि0 को बुलवा भेजा और इस्लामी परचम उनसे लेकर उनके साहबज़ादे क़ैस रज़ि0 के हवाले किया[1] आप सल्ल0 ने यह ख़्याल फ़रमया कि उनके साहबज़ादे को परचम देने के मअ़ना यह होंगे गोया परचम उनसे वापस नहीं लिया गया है।

इस तरह एक हर्फ़ की तबदली (الملحمة के बजाए المرحمة फ़रमा देने) और एक हाथ को दूसरे हाथ से तबदील कर देने से (जिनमें से एक बाप का हाथ था दूसरा बेटे का) आप सल्ल0 ने सअ़द बिन उबादा रज़ि0 (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामे اَظهر مِنَ الشمس थे) की अदना दिलशिकनी के बग़ैर अबू सुफ़यान की (जिनकी तालीफ़े क़ल्ब की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान ऐसे

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुल फत्ह, फ़त्हुल बारी 8-9

हकीमाना बल्कि मुअ़ज़्ज़ाना तरीक़ा पर अंजाम दे दिया जिससे बेहतर तरीक़े पर तस्वीर में आना मुश्किल है, बाप के बजाए उनके बेटे को यह मंसब अता कर दिया, जिससे अबू सुफ़यान के ज़ख़्म ख़ुर्दा दिल की तस्कीन मंजूर थी, दूसरी तरफ़ आप सल्ल0 सअ़द बिन उबादा रज़ि0 को आज़ुर्दा ख़ातिर नहीं देखना चाहते थे, जिन्होंने इस्लाम के लिये बड़ी ख़िदमात अंजाम दी थीं।

मआ़मूली झड़पें

इस मौक़ा पर सफ़वान बिन उमय्या, अकरमा बिन अबू जह्ल, सुहैल बिन अ़म्र और ख़ालिद बिन वलीद के साथियों के दर्मियान कुछ झड़पें हुईं, जिनमें तक़रीबन एक दर्जन मुश्रिकीन मारे गए, इसके बाद उन्होंने शिकस्त क़बूल कर ली।[1] इसकी वजह यह थी कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इस्लामी लशकर के सालारों को यह हिदायत फ़रमा दी थी कि जब वह मक्का में दाख़िल हों तो सिर्फ़ उन पर हाथ उठाएं जो उन पर हाथ उठाए।

हरम से बुतों की सफ़ाई

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 मक्का में अपने मक़ाम पर पहुंच गए, और लोग भी मुत्मइन हो गए तो उस वक़्त आप बाहर तशरीफ़ लाए, बैतुल्लाह की तरफ़ रवाना हुए, वहां जाकर बैतुल्लाह के गिर्द तवाफ़ किया, उस वक़्त आप सल्ल0 के दस्ते मुबारक में एक कमान थी, कअ़बा में तीन

(1) इब्ने हिशाम 2-408

सौ साठ बुत थे, आप सल्ल0 इस कमान से उन बुतों को कोंचते थे, और फ़रमाते थेः-

جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

तरजुमाः हक़ आ गया और बातिल मिट गया, और बातिल मिटने ही की चीज़ थी। (सूरए इसराअ् 81)

इसी के साथ यह तमाम एक एक करके मुंह के बल गिरते जाते।

आप सल्ल0 को कअ्बा में कुछ तस्वीरें और शबीहें भी नज़र आईं और आपके हुक्म से उनको भी तोड़ फोड़ दिया गया।

जब आप सल्ल0 ने तवाफ़ पूरा फ़रमा लिया तो उस्मान बिन तल्हा रज़ि0 को जो कअ्बा के कलीद बरदार थे बुलवाया, कअ्बा की कलीद उनसे ली, दरवाज़ा खोला गया, और आप सल्ल0 कअ्बा में दाख़िल हुए, इससे पहले जब आप सल्ल0 ने मदीना हिज्रत से क़ब्ल एक दिन यह कलीद तलब फ़रमाई थी, तो उन्होंने सख़्त जवाब दिया था, और आप सल्ल0 से इहानत आमेज़ गुफ़्तगू की थी, और आप सल्ल0 ने हिल्म और बुर्दबारी से काम लेते हुए यह फ़रमाया था, उस्मान! "तुम कलीद किसी वक़्त मेरे हाथ में देखोगे, उस वक़्त मैं जिसे चाहूंगा उसे यह दूंगा" इसके जवाब में उन्होंने कहा था, "अगर ऐसा हुआ तो वह दिन तो कुरैश की बड़ी ज़िल्लत व तबाही का होगा" आप सल्ल0 ने फ़रमाया "नहीं उस दिन वह आबाद और बाइज़्ज़त होंगे" यह अलफ़ाज़ उस्मान बिन तलहा के दिलनशीं हो गए और

उन्होंने महसूस किया कि जैसा आप सल्ल0 ने फ़रमाया है वैसा ही होगा।[1]

जब आप सल्ल0 कअ़बा से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुंजी आप सल्ल0 के दस्ते मुबारक में थी, आप सल्ल0 को देखते ही हज़रत अली रज़ि0 खड़े हो गए और अ़र्ज़ किया, अल्लाह आप सल्ल0 पर दुरूद व सलाम भेजे आप सल्ल0 सक़ाया (पानी पिलाने का इंतिज़ाम) के साथ हजाबा (बैतुल्लाह की दरबानी) भी हमें अता फ़रमाएं।

नबी सल्ल0 ने फ़रमाया "اَلْيَوْمُ يَوْمُ الْبِرِّ وَالْوَفَاءِ" (आज का दिन तो सुलूक करने, पूरे अतीयात देने का है) फिर उस्मान को बुलाया, उन्ही को कलीद मरहमत फ़रमाई, और इर्शाद फ़रमाया कि "जो कोई तुमसे यह कलीद छीनेगा वह ज़ालिम होगा।[2]

अरब में दस्तूर था कि कोई शख़्स किसी को क़त्ल कर देता था तो उसके खून का इंतिक़ाम लेना ख़ानदानी फ़र्ज़ क़रार पा जाता था, यअ़नी अगर उस वक़्त क़ातिल न हाथ आ सका तो ख़ानदानी दफ़्तर में मक़तूल का नाम लिख लिया जाता और सैकड़ों बरस गुज़रने के बाद भी इंतिक़ाम का फ़र्ज़ अदा किया जाता था, क़ातिल अगर मर चुका है तो उसके ख़ानदान या क़बीला के आदमी को क़त्ल करते थे, इसी तरह ख़ूं बहा का मुतालबा भी اَبًا عَنْ جَدٍّ चला आता था, यह ख़ून का इंतिक़ाम अरब में सबसे बड़े फ़ख़्र की बात थी, इसी तरह और बहुत सी लग़्व बातें मफ़ाख़िरे क़ौमी में

(1) ज़ादुल मआ़द जि01, स0 425 सहीह बुख़ारी में भी यह वाक़िआ आया है।
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-412

दाख़िल हो गई थीं, इस्लाम इन सबके मिटाने के लिये आया था और इस बिना पर आप सल्ल0 ने इंतिक़ाम और ख़ूं बहा और तमाम ग़लत मुफ़ाख़रात की निस्बत फ़रमाया कि "मैंने इनको पांव से कुचल दिया।"(1)

अरब और तमाम दुन्या में नस्ल और क़ौम व ख़ानदान के इम्तियाज़ की बिना पर हर क़ौम में फ़र्क़े मरातिब क़ाइम किये गए थे, जिस तरह हिंदुओं ने चार ज़ातें क़ाइम कीं, और शूद्र को वह दर्जा दिया जो जानवरों का दर्जा है, इसके साथ यह बंदिश कर दी कि वह कभी अपने रुत्बा से आगे न बढ़े।

इस्लाम का सबसे बड़ा एहसान जो उसने तमाम दुन्या पर किया, मुसावाते आम का क़ाइम करना था, यअ़नी अरब व अजम, शरीफ़ व रज़ील, शाह व गदा सब बराबर हैं, हर शख़्स तरक़्क़ी के हर इंतिहाई दर्जा तक पहुंच सकता है, इस बिना पर आंहज़रत सल्ल0 ने क़ुर्आन मजीद की आयत पढ़ी और फिर तौज़ीह फ़रमाई कि "तुम सब औलादे आदम हो और आदम मिट्टी से बने थे।(2)

ख़ुत्बा के बाद आप सल्ल0 ने मज्मा की तरफ़ देखा तो जब्बाराने क़ुरैश सामने थे, उनमें वह हौसलामंद भी थे जो इस्लाम के मिटाने में सबसे पेशरौ थे, वह भी थे जिनकी ज़बानें रसूलुल्लाह सल्ल0 पर गालियों का बादल बरसाया करती थीं, वह भी थे जिनकी तेग़ व सनान ने पैकरे क़ुदसी

(1) इब्ने हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी ख़ताए शुब्हिल अ़मद

(2) इब्ने हिशाम 2-412, सुनन अबी दाऊद, किताबुद्दियात, बाब फ़ी ख़ताए शुब्हिल अ़मद

के साथ गुस्ताख़ियां कीं थीं, वह भी थे जिन्होंने आंहज़रत सल्ल0 के रास्ता में कांटे बिछाए थे, वह भी थे जो वज़ू के वक़्त आंहज़रत सल्ल0 की एड़ियों को लहू लहान कर दिया करते थे, वह भी थे जिनकी तश्ना लबी खूने नुबूव्वत के सिवा किसी चीज़ से बुझ नहीं सकती थी, वह भी थे जिनके हमलों का सैलाब मदीना की दीवारों से आ आकर टकराता था, वह भी थे जो मुसलमानों को जलती हुई रेत पर लिटा कर उनके सीनों पर आतशीं मोहरें लगाया करते थे।

रहमते आलम सल्ल0 ने उनकी तरफ़ देखा और ख़ौफ़ अंगेज़ लहजा में पूछा "तुम को कुछ मअ़लूम है? मैं तुम से क्या मुआमला करने वाला हूं।"

यह लोग अगर्चे ज़ालिम थे, शक़ी थे, लेकिन मिज़ाज शनास थे, पुकार उठे कि: أَخٌ كَرِيمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيمٍ "आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ बिरादरज़ादा हैं।"

इर्शाद हुआ:

"لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَومَ اِذْهَبُوا، فَأَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ"(1)

"तुम पर कुछ इलज़ाम नहीं जाओ, तुम सब आज़ाद हो" कुफ़्फ़ारे मक्का ने तमाम मुहाजिरीन के मकानात पर क़ब्ज़ा कर लिया था, अब वक़्त था कि उनको हुक़ूक़ दिलाए जाते, लेकिन आपने मुहाजिरीन को हुक्म दिया कि वह भी अपनी मम्लूकात से दस्त बर्दार हो जाएं।

नमाज़ का वक़्त आया तो हज़रत बिलाल रज़ि0 ने बामे कअ़बा पर चढ़ कर अज़ान दी, वही सरकश जो अभी राम

(1) इब्ने हिशाम 2-412, इस मअ़ना की रिवायत मुस्नद अहमद 5-135 में भी है।

हो चुके थे, उनकी आतिशे ग़ैरत फिर मुशतइल थी, अत्ताब बिन उसैद ने कहा "खुदा ने मेरे बाप की इज़्ज़त रख ली कि इस आवाज़ के सुनने से पहले उसको दुन्या से उठा लिया" एक और सरदारे कुरैश ने कहा "अब जीना बेकार है"।(1)

मक़ामे सफ़ा में आप सल्ल0 एक बुलंद मक़ाम पर जा बैठे, जो लोग इस्लाम क़बूल करने आते थे आप सल्ल0 के हाथ पर बैअ़त करते थे, मर्दों की बारी हो चुकी, तो मस्तूरात आईं, औरतों से बैअ़त लेने का यह तरीक़ा था कि पहले उनसे अरकाने इस्लाम और महासिने अख़्लाक़ का इक़रार लिया जाता था, फिर पानी के एक लबरेज़ प्याला में आंहज़रत सल्ल0 दस्ते मुबारक डुबो कर निकाल लेते थे, आप सल्ल0 के बाद औरतें उसी प्याला में हाथ डालती थीं और बैअ़त का मुआहदा पुख़्ता हो जाता था।(2)

रुअसाए अरब में दस शख़्स थे जो कुरैश के सरताज थे, उनमें सफ़वान बिन उमय्या जद्दा भाग गए, उमैर बिन वहब ने आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आकर अ़र्ज़ की कि रईसे अरब मक्का से जिला वतन हुआ जाता है, आप सल्ल0 ने अलामाते अमान के तौर पर अपना अमामा इनायत किया। उमैर जद्दा पहुंच कर उनको वापस लाए, हुनैन के मअ़रका तक यह इस्लाम नहीं लाए।(3)

(1) इब्ने हिशाम 2-413

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-120,121

(3) इब्ने हिशाम 2-417, 418

अब्दुल्लाह बिन जुबेअ़रा अरब का शाइर जो आंहज़रत सल्ल0 की हज्व किया करता और कुर्आन मजीद पर नुक्ता चीनियां करता था, नजरान भाग गया, लेकिन फिर आकर इस्लाम लाया।(1)

हारिस बिन हिशाम की साहबज़ादी उम्मे हकीम अक्रमा बिन अबू जह्ल की ज़ौजा थीं, वह फ़त्हे मक्का के दिन इस्लाम लाईं, लेकिन उनके शौहर अक्रमा बिन अबू जह्ल इस्लाम से भाग कर यमन चले गए, उम्मे हकीम यमन गईं और उनको इस्लाम की दावत दी और वह मुसलमान हो गए और मक्का में आए, आंहज़रत सल्ल0 ने जब उनको देखा तो फ़र्ते मुसर्रत से फ़ौरन उठ खड़े हुए, और इस तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़े कि जिस्म मुबारक पर चादर तक न थी, फिर उनसे बैअ़त ली।(2)

वह्शी को भी मुआफ़ी दी गई, जिसने अमीर हम्ज़ा (असदुल्लाह व रसूलिही) को धोका से मारा था और फिर नअ्श को बेहुर्मत किया था।(3)

फ़त्ह से दूसरे दिन का ज़िक्र है, नबी सल्ल0 कअ्बा का तवाफ़ कर रहे थे, फुज़ाला बिन उमैर ने मौक़ा देखकर इरादा किया कि आंहज़रत सल्ल0 को क़त्ल कर डाले, जब वह इस इरादे से क़रीब पहुंचा तो नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "क्या फुज़ाला आता है?" फुज़ालाः "हां"!

(1) इब्ने हिशाम 2-418, 419, दलाइलुन्नुबूव्वा 99

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 5-95

(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम अपने दिल में अभी क्या इरादा कर रहे थे?" फ़ुज़ाला ने कहाः "कुछ नहीं, मैं तो अल्लाह अल्लाह कर रहा था।"

नबी सल्ल0 यह सुन कर हंस पड़े और फ़रमाया "अच्छा तुम अपने ख़ुदा से अपने लिये मुआफ़ी की दरख़्वास्त करो" यह फ़रमा कर अपना हाथ भी उसके सीना पर रख दिया।

फ़ुज़ाला का बयान है कि हाथ रख देने से मुझे इत्मीनाने क़ल्ब हासिल हुआ और आंहज़रत सल्ल0 की मुहब्बत इस क़दर मेरे दिल में पैदा हो गई कि हुज़ूर सल्ल0 से बढ़ कर कोई भी महबूब न रहा।

मैं यहां से घर को चला, रास्ता में मेरी मअ़शूक़ा मिली जिसके पास मैं बैठा करता था, उसने कहाः फ़ुज़ाला एक बात सुनते जाओ, मैंने जवाब दिया नहीं, नहीं! ख़ुदा और इस्लाम ऐसी बातों से मुझे मना करते हैं।[1]

ग़ज़वए हुनैन

मक्का जब फ़त्ह हुआ तो तमाम क़बाइल ने ख़ुद पेश क़दमी की और इस्लाम क़बूल करना शुरू किया[2] लेकिन हवाज़िन और सक़ीफ़ पर इसका उल्टा असर हुआ, यह क़बीले निहायत जंगजू और फ़ुनूने जंग से वाक़िफ़ थे, इस्लाम को जिस क़दर ग़ल्बा होता जाता था यह ज़्यादा मुज़तर होते थे कि उनकी रियासत और इम्तियाज़ का

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-417

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मकारिमुन्नबी सल्ल0 बिमक्का

ख़ातमा हुआ जाता है, इन बिना पर फ़त्हे मक्का से पहले हवाज़िन के रुअसा ने अरब का दौरा किया और हर जगह मुख़ालफ़ते इस्लाम का जोश फैलाया, पूरे साल उनकी यह कोशिश जारी रही और तमाम क़बाइले अरब से क़रादाद हो गई कि एक आम हमला किया जाए, मक्का फ़त्ह हुआ तो उनको यक़ीन हो गया कि अब जल्द तदारुक न किया गया तो फिर कोई ताक़त इस्लाम को ज़ेर न कर सकेगी।[1]

आंहज़रत सल्ल0 की रवानगी के वक़्त उनको यह ग़लत ख़बर पहुंची थी कि हमला का रुख़ उन्ही की तरफ़ है इसलिये इंतिज़ार की हाजत भी नहीं रही, दफ़अतन बड़े ज़ोर व शोर के साथ खुद हमला के लिये बढ़े, जोश का यह आलम था कि हर क़बीला अपने तमाम अह्ल व अयाल लेकर आया[2] कि बच्चे और औरतें साथ होंगे तो उनकी हिफ़ाज़त की ग़र्ज़ से लोग जानें दे देंगे।[3]

इस मअ्रका में अगर्चे सक़ीफ़ और हवाज़िन की तमाम शाख़ें शरीक थीं, ताहम कअ्ब और कुलाब अलग रहे, फ़ौज की सरदारी के लिये दो शख़्स इंतिख़ाब किये गए, मालिक बिन औफ़ और दुरैद बिन अस्सिम्मा, अव्वलुज़्ज़िक्र क़बीला हवाज़िन का रईसे अअ़ज़म था, दुरैद बिन अस्सिम्मा अरब का मशहूर शाइर और क़बीलए जशम का सरदार था, उसकी शाइरी और बहादुरी के मअ्रके अब तक अरब की तारीख़

(1) सीरतुन्नबी, अल्लामा शिब्ली 1-530, 531

(2) मुस्तदरक हाकिम 3-51

(3) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-531

में यादगार हैं, लेकिन उसकी उम्र सौ बरस से ज़्यादा हो चुकी थी और सिर्फ़ हड्डियों का ढांचा रह गया था, चूंकि अरब उसको मानता था और उसकी राए व तदबीर पर तमाम मुल्क को एतिमाद था, खुद मालिक बिन औफ़ ने उससे शिर्कत की दरख़्वास्त की, पलंग पर उठाकर उसको मैदाने जंग में लाए, उसने पूछा! कि यह कौनसा मक़ाम है? लोगों ने कहा "औतास" बोला कि हां "यह मक़ाम जंग के लिये मौजूं है, इसकी ज़मीन न बहुत सख़्त है, न इस क़दर नर्म कि पांव धंस जाएं" फिर पूछा कि "यह बच्चों के रोने की आवाज़ें कैसी आ रही हैं?" लोगों ने कहा "बच्चे और औरतें साथ आई हैं कि कोई शख़्स पांव पीछे न हटाए, बोला "जब पांव उखड़ जाते हैं तो कोई चीज़ रोक नहीं सकती, मैदाने जंग में सिर्फ़ तलवार काम देती है, बदक़िस्मती से अगर शिकस्त हुई तो औरतों की वजह से और ज़िल्लत होगी"

फिर पूछा कि "कअ़ब और कुलाब भी शरीक हैं या नहीं?" जब मअ़लूम हुआ कि इन मुअ़ज़्ज़ज़ क़बीलों का एक शख़्स भी मैदाने जंग में नहीं, तो कहा "अगर आज का दिन इ़ज़्ज़त व शर्फ़ का होता तो कअ़ब व कुलाब ग़ैर हाज़िर न होते" उसकी राए थी कि मैदान से हट कर किसी महफ़ूज़ मक़ाम में फ़ौजें जमा की जाएं और वहीं एलाने जंग किया जाए, लेकिन मालिक बिन औफ़ ने जो तीस साला नौजवान था जोशे शबाब में इस राए को क़बूल करने से

इंकार किया और कहा कि आपके होश जाते रहे और आप की अक़्ल बेकार हो चुकी।[1]

रसूलुल्लाह सल्ल0 को इन वाक़िआत की ख़बर पहुंची तो आपने तस्दीक़ के लिये अब्दुल्लाह बिन अबी हदरद को भेजा, वह जासूस बन कर हुनैन में आए और कई दिन फ़ौज में रह कर तमाम हालात तहक़ीक़ किये[2] आंहज़रत सल्ल0 ने मजबूरन मुक़ाबला की तैयारियां कीं, रसद और सामाने जंग के लिये क़र्ज़ की ज़रूरत पेश आई, अब्दुललाह बिन रबीआ़ जो निहायत दौलतमंद थे उनसे तीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिये।[3] सफ़वान बिन उमय्या जो मक्का का रईसे अअ़ज़म था, मेहमान नवाज़ी में मशहूर था, लेकिन अब तक इस्लाम नहीं लाया था उससे आंहज़रत सल्ल0 ने अस्लहए जंग मुस्तआ़र मांगे, उसने सौ ज़िरहें और उनके लवाज़िमात पेश किये।[4]

शव्वाल 8 हि0 मुताबिक़ जनवरी, फ़रवरी 630 ई0 इस्लामी फ़ौजें, जिनकी तअ़दाद बारह हज़ार थी, इस सर स सामान से हुनैन पर बढ़ीं कि सहाबा रज़ि0 की ज़बान से बेइख़्तियार यह लफ़्ज़ निकल गया कि "आज हम पर कौन ग़ालिब आ सकता है" लेकिन बारगाहे एज़दी में यह नाज़िश पसंद न थी।[5]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-466, सीरत इब्ने हिशाम 2-338, 339
(2) मुस्तदरक हाकिम 3-51, इब्ने हिशाम 2-440
(3) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-533
(4) सुनन बैहक़ी 6-89, सुनन अबी दाऊद, किताबुल बुयूअ़, बाब फ़ी तज़मीनिल आरिया
(5) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-533, सीरत इब्ने हिशाम 2-444

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا، وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ، ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُ عَلىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ، وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا، وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكَافِرِينَ.

"और हुनैन का दिन याद करो जब तुम अपनी कसरत पर नाज़ां थे, लेकिन वह कुछ काम न आई, और ज़मीन बावजूद वुस्अ़त के तुम पर तंगी करने लगी, फिर तुम पीठ फेर कर भाग निकले, फिर अल्लाह ने अपने रसूल सल्ल0 पर और मुसलमानों पर तसल्ली नाज़िल की, और ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुमने नहीं देखीं, और काफ़िरों को अज़ाब दिया, और काफ़िरों की यही सज़ा है।"

मुसलमानों को पहले कामियाबी हुई और लोग ग़नीमत पर टूट पड़े, दुशमन के तीर अंदाज़ों ने मौक़ा पाकर तीर अंदाज़ी शुरू कर दी, जिससे मुसलमानों की सफ़ों में बेतरतीबी, इंतिशार और परागंदगी पैदा हो गई।[1]

हज़रत अबू क़तादा जो शरीके जंग थे, उनका बयान है कि जब लोग भाग निकले तो मैंने एक काफ़िर को देखा कि एक मुसलमान के सीना पर सवार है, मैंने अक़ब से उसके शाना पर तलवार मारी जो ज़िरह को काट कर अंदर उतर गई, उसने मुड़कर मुझको इस ज़ोर से दबोचा कि मेरी जान

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए हुनैन

पर बन गई, लेकिन फिर वह ठंडा होकर गिर पड़ा, इसी अस्ना में उमर रज़ि0 को देखा "पूछा कि मुसलमानों का क्या हाल है?" बोले क़ज़ाए इलाही यही थी।[1]

इस ज़ाहिरी शिकस्त के मुख़्तलिफ़ अस्बाब थे, मुक़द्दमतुल जैश में जो हज़रत ख़ालिद रज़ि0 की अफ़सरी में था, ज़्यादातर मक्का के जदीदुल इस्लाम नौजवान थे, वह जवानी के गुरूर में अस्लहए जंग भी पहन कर नहीं आए थे, फ़ौज में दो हज़ार तुलक़ाअ् यअ़नी वह लोग थे, जो अब तक इस्लाम नहीं लाए थे, हवाज़िन तीर अंदाज़ी में तमाम अरब में अपना जवाब नहीं रखते थे, मैदाने जंग में उनका एक तीर भी ख़ाली नहीं जाता था, कुफ़्फ़ार ने मअ्रका गाह में पहले पहुंच कर मुनासिब मक़ामात पर क़ब्ज़ा कर लिया था और तीर अंदाज़ों के दस्ते पहाड़ की घाटियों, खोओं और दर्रों में जा बजा जमा दिये थे।[2]

तीरों का मेंह बरस रहा था, बारह हज़ार फ़ौजें हवा हो गई थीं, लेकिन एक पैकरे मुक़द्दस पा बर जा था जो तन्हा एक फ़ौज, एक मुल्क, एक अक़्लीम, एक आलम, बल्कि मज्मूअए काइनात था।[3]

आंहज़रत सल्ल0 ने दाहनी जानिब देखा और पुकारा "يَا مَعْشَرَ الْأَنْصَار" आवाज़ के साथ सदा आई "हम हाज़िर हैं" फिर आप सल्ल0 ने बाईं जानिब मुड़कर पुकारा,

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए हुनैन

(2) सीरतुन्नबी 1-535

(3) सीरतुन्नबी 1-535, 538, इमाम नौवी रज़ि0 ने शर्ह मुस्लिम में शिकस्त के इन बअ्ज़ अस्बाब का ज़िक्र किया है

अब भी वही आवाज़ आई, आप सल्ल0 सवारी से उतर पड़े और जलाले नुबूव्वत के लहजा में फ़रमाया "मैं ख़ुदा का बंदा और उसका पैग़म्बर हूं।"[1]

बुख़ारी की दूसरी रिवायत में है कि यह रिज्ज़ आप सल्ल0 की ज़बाने मुबारक पर था।

اَنَاالنبیّ لا کَذِبْ اَنَابْنُ عَبْدِالمُطَّلِبْ

"मैं पैग़म्बर हूं यह झूट नहीं है, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूं,[2]

हज़रत अब्बास रज़ि0 निहायत बुलंद आवाज़ थे, आप सल्ल0 ने उनको हुक्म दिया कि मुहाजिरीन और अंसान को आवाज़ दो, उन्होंने नअ़रा माराः

یَامَعْشَرَ الْاَنْصَارُ یَا اصحابَ السّمرہ

ऐ गिरोहे अंसार! ऐ बैअ़ते रिज़वान वालो!

इस पुर असर आवाज़ का कानों में पड़ना था कि तमाम फ़ौज पलट पड़ी, जिनके घोड़े कशमकश और घमसान की वजह से मुड़ न सके, उन्होंने ज़िरहें फेंक दीं और घोड़ों से कूद पड़े, दफ़अ़तन लड़ाई का रंग बदल गया,[3] कुफ़्फ़ार भाग निकले और जो रह गए उनके हाथों में हथकड़ियां थीं, बनू मालिक (सक़ीफ़ की एक शाख़ थी) जम कर लड़े, लेकिन उनके सत्तर आदमी मारे गए, और जब उनका

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुत्ताइफ

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, ग़ज़वए हुनैन

(3) सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब फ़ी ग़ज़वए हुनैन, मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ 5-380, 381

अलमबरदार उस्मान बिन अब्दुल्लाह मारा गया, तो वह भी साबित क़दम न रह सके।[1]

शिकस्त खुर्दा फ़ौज टूट फूट कर कुछ औतास में जमा हुई और कुछ ताइफ़ में जाकर पनाह गुज़ीं हुई, जिसके साथ सिपहसालारे लशकर (मालिक बिन औफ़) भी था।[2]

दुरैद बिन अस्सिम्मा कई हज़ार की जमईयत लेकर औतास में आया, आंहज़रत सल्ल0 ने (अबू आमिर अशअ़री के मातहत) थोड़ी सी फ़ौज उसके इस्तीसाल के लिये भेज दी, अबू आमिर दुरैद के बेटे के हाथ से मारे गए और अलमे इस्लाम उसके हाथ में था, यह हालत देखकर हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 ने आगे बढ़ कर हमला किया, दुशमन को क़त्ल करके अलम उसके हाथ से छीन लिया।[3]

असीराने जंग की तअ़दाद हज़ारों से ज़्यादा थी उनमें हज़रत शीमा भी थीं, जो रसूलुल्लाह सल्ल0 की रज़ाई बहन थीं, लोगों ने जब उनको गिरफ़्तार किया तो उन्होंने कहा "मैं तुम्हारे पैग़म्बर की बहन हूं" लोग तस्दीक़ के लिये आंहज़रत सल्ल0 के पास लाए, उन्होंने पीठ खोल कर दिखाई कि एक दफ़ा बचपन में आपने दांत से काटा था यह उसका निशान है, फ़र्ते मुहब्बत से आप सल्ल0 की आंखों में आंसू भर आए, उन के बैठने के लिये खुद रिदाए मुबारक बिछाई, मुहब्बत की बातें कीं, चंद शुतुर और बकरियां

(1) इब्ने हिशाम 2-449, 450

(2) इब्ने हिशाम 2-453

(3) इब्ने हिशाम 2-454, सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वए औतास

इनायत कीं और इर्शाद किया जी चाहे तो मेरे घर चल कर रहो और अगर घर जाना चाहो तो वहां पहुंचा दिया जाए, उन्होंने ख़ानदान की मुहब्बत से घर जाना चाहा, चुनांचे इज़्ज़त और एहतिराम के साथ पहुंचा दी गई।(1)

हुनैन की बक़िया शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज ताइफ़ जाकर पनाह गुज़ीं हुई और जंग की तैयारियां कीं, ताइफ़ महफ़ूज़ मक़ाम था, ताइफ़ इसको इसलिये कहते हैं कि इसके गिर्द शहरे पनाह के तौर पर चहार दीवारी थी, यहां सक़ीफ़ का जो क़बीला आबाद था, निहायत शुजाअ़, तमाम अरब में मुम्ताज़ और कुरैश का गोया हमसर था, उर्वा बिन मसऊद जो यहां का रईस था, अबू सुफ़यान (अमीर मुआविया रज़ि0 के बाप) की लड़की उसको ब्याही थी, कुफ़्फ़ारे मक्का कहते थे कि कुर्आन अगर उतरता तो मक्का या ताइफ़ के रुअसाअ् पर उतरता, यहां के लोग फ़न्ने जंग से भी वाक़िफ़ थे।(2) तबरी और इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि उर्वा बिन मसऊद और ग़लान बिन सलमा ने जर्श (यमन का एक ज़िला) में जाकर क़िला शिकन आलात यअ़नी दब्बाबा, सन्बूर और मिंजिनीक़ के बनाने और इस्तेमाल करने का फ़न सीखा था।(3)

यहां एक महफ़ूज़ क़िला था, अह्ले शहर और हुनैन की शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज ने उसकी मरम्मत की, साल भर का रसद का सामान जमा किया, चारों तरफ़ मिंजिनीक़ और

(1) इब्ने हिशाम 2-458, तबरी 2-171 (2) सीरतुन्नबी सल्ल0 1-541, तारीख़े तबरी 2-171 (3) इब्ने हिशाम 2-478

जा बजा क़द्र अंदाज़ मुतअय्यन किये।[1]

आंहज़रत सल्ल0 ने हुनैन के माले ग़नीमत और असीराने जंग के मुतअल्लिक़ हुक्म दिया कि जिइर्राना में महफ़ूज़ रखे जाएं और खुद ताइफ़ का अज़्म किया, हज़रत ख़ालिद रज़ि0 मुक़द्दमतुल जैश के तौर पर पहले रवाना कर दिये गए, ग़र्ज़ मुहासरा हुआ और इस्लाम में यह पहला मौक़ा था कि क़िला शिकन आलात यअनी दब्बाबा और मिंजिनीक़ इस्तेमाल किये गए, दब्बाबा पर अह्ले क़िला ने लोहे की गर्म सलाख़ें बरसाईं और इस शिद्दत से तीर बारी की कि हमलाआवरों को हटना पड़ा, बहुत से लोग ज़ख़्मी हुए, बीस दिन तक मुहासरः रहा, लेकिन शहर फ़त्ह न हो सका[2] आंहज़रत सल्ल0 ने नौफ़ल बिन मुआविया को बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या राए है? उन्होंने कहा लोमड़ी भट में घुस गई है, अगर कोशिश जारी रही तो पकड़ ली जाएगी, लेकिन छोड़ दी जाए तब भी कुछ अंदेशा नहीं, चूंकि सिर्फ़ मुदाफ़अत मक़्सूद थी, आंहज़रत सल्ल0 ने हुक्म दिया कि मुहासरा उठा लिया जाए, सहाबा रज़ि0 ने अ़र्ज़ की कि आप इनको बद्दुआ दें, आप सल्ल0 ने यह दुआ दीः

"اللّٰھمّ اھد ثقیفاً وائت بھم."

"ऐ ख़ुदा सक़ीफ़ को हिदायत कर और तौफ़ीक़ दे कि मेरे पास हाज़िर हो जाएं।"[3]

(1) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-158

(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-482, 483, तबक़ात इब्ने सअ़द 2-158

(3) तबक़ात इब्ने सअ़द 2-159, इब्ने हिशाम 2-488

मुहासरा छोड़ कर आप सल्ल0 जिइर्राना में तशरीफ़ लाए, ग़नीमत का बेशुमार ज़ख़ीरा था, छः हज़ार असीराने जंग, चौबीस हज़ार ऊंट, चालीस हज़ार बकरियां और चार हज़ार ऊकिया चांदी थी, असीराने जंग के मुतअ़ल्लिक़ आप सल्ल0 ने इंतिज़ार किया कि उनके अज़ीज़ व अक़ारिब आएं तो उनसे गुफ़्तगू की जाए, लेकिन कई दिन गुज़रने पर कोई न आया, माले ग़नीमत के पांच हिस्से किये गए, चार हिस्से हसबे क़ाएदा अह्ले फ़ौज को तक़सीम किये गए, ख़म्स बैतुल माल और गुरबा व मसाकीन के लिये रखा गया।

मक्का के अक्सर रुअसाअ् जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया था अभी तक मुज़बज़बुल एक़ाद थे, इन्ही को कुर्आन मजीद में "مؤلَّفَةُ القُلوب" कहा है, कुर्आन मजीद में जहां ग़नीमत के मसारिफ़ बयान किये हैं, इन लोगां का नाम भी है, आंहज़रत सल्ल0 ने इन लोगों को निहायत फ़य्याज़ाना इन्आमात दिये।[1]

जिन लोगों पर इन्आ़म की बारिश हुई, उमूमन अह्ले मक्का और अक्सर जदीदुल इस्लाम थे, इस पर अंसार को रंज हुआ, बअ़ज़ों ने कहा रसूलुल्लाह सल्ल0 ने क़ुरैश को इन्आ़म दिया और हमको महरूम रखा, हालांकि हमारी तलवारों से अब तक क़ुरैश के ख़ून के क़तरे टपकते हैं, बअ़ज़ बोले कि मुश्किलात में हमारी याद होती है और ग़नीमत औरों को मिलती है।

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-171, इब्ने हिशाम 2-489, सीरतुन्नबी सल्ल0 1-542, 543, इन्आ़मात का ज़िक्र सहीहैन में मौजूद है।

आंहज़रत सल्ल0 ने यह चर्चे सुने तो अंसार को तलब फ़रमाया, एक चर्मी ख़ेमा नसब किया गया, जिसमें लोग जमा हुए, आप सल्ल0 ने अंसार से ख़िताब किया और फ़रमाया तुमने ऐसा कहा? लोगों ने अ़र्ज़ की कि "हुज़ूर सल्ल0! हमारे सर बरआवुर्दा लोगों में से किसी ने यह नहीं कहा, नौख़ेज़ नौजवानों ने यह फ़िक़्रे कहे थे, सहीह बुख़ारी बाब मनाक़िबुल अंसार में हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि जब आंहज़रत सल्ल0 ने अंसार को बुला कर पूछा "यह क्या वाक़िआ है?" तो चूंकि अंसार झूट नहीं बोलते थे, उन्होंने कहा: "आप सल्ल0 ने जो सुना सही है।"[1]

आप सल्ल0 ने एक ख़ुत्बा दिया, जिसकी नज़ीर फ़न्ने बलाग़त में नहीं मिल सकती, अंसार की तरफ़ ख़िताब फ़रमाकर कहा "क्या यह सच नहीं है कि तुम पहले गुमराह थे, ख़ुदा ने मरे ज़रीआ़ तुमको हिदायत की? तुम मुंतशिर और परागंदा थे, ख़ुदा ने मेरे ज़रीआ़ तुम में इत्तिफ़ाक़ पैदा किया? तुम मुफ़्लिस थे ख़ुदा ने मेरे ज़रीआ़ से तुमको दौलतमंद किया? आप सल्ल0 यह फ़रमाते जाते थे और हर फ़िक़्रा पर अंसार कहते जाते थे कि "ख़ुदा और रसूल सल्ल0 का एहसान सबसे बढ़ कर है।"

आप सल्ल0 ने फ़रमाया नहीं, तुम यह जवाब दो कि "ऐ मुहम्मद (सल्ल0)! आप (सल्ल0) को जब लोगों ने झुटलाया तो हमने आपकी तस्दीक़ की, आप (सल्ल0) को

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुत्ताइफ़, व किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार।

तवक़्कुआत हैं, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया कि "ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब का जिस क़दर हिस्सा है वह तुम्हारा है लेकिन आम रिहाई की तदबीर यह है कि नमाज़ के बाद जब मज्मा हो तो सब के सामने यह दरख़्वास्त पेश करो, नमाज़े जुहर के बाद उन लोगों ने यह दरख़्वास्त मज्मा के सामने पेश की, आप सल्ल0 ने फ़रमाया "मुझको तो सिर्फ़ अपने ख़ानदान पर इख़्तियार है, लेकिन मैं तमाम मुसलमानों से उनके लिये सिफ़ारिश करता हूं" मुहाजिरीन और अंसार फ़ौरन बोल उठे "हमारा हिस्सा भी हाज़िर है" इस तरह छः हज़ार दफ़अतन आज़ाद हुए।(1)

ग़ज़वए तबूक

एक क़ाफ़िला शाम से आया और उन्होंने ज़ाहिर किया कि क़ैसर की फ़ौजें मदीने पर हमला आवर होने के लिये तैयार और फ़राहम हो रही हैं, अरब के ईसाई क़बाइल भी उनके साथ शामिल हैं।(2)

नबी सल्ल0 ने ख़्याल फ़रमाया कि हमला आवर फ़ौज की मुदाफ़अत अरब की सरज़मीन में दाख़िल होने से पहले मुनासिब है, ताकि अंदुरूने मुल्क के अम्न में ख़लल वाक़ेअ न हो।

यह मुक़ाबला ऐसी सलतनत से था जो निस्फ़ दुन्या पर हुक्मरां थी और जिसकी फ़ौज हाल ही में सलतनते ईरान को नीचा दिखा चुकी थी।(3)

(1) तारीख़े तबरी 2-173, इब्ने हिशाम 2-488, 489 (2) तबक़ात इब्ने सअ़द
(3) रहमतुल लिल आलमीन 1-136

Maktaba-e-Askari

मुसलमान बे सर व सामान थे सफ़र दूर दराज़ का था, अरब की मशहूर गर्मी खूब ज़ोरों पर थी, मदीना में मेवे पक गए थे, मेवे खाने और साया में बैठने के दिन थे।(1)

नबी करीम सल्ल0 ने तैयारिये सामान के लिये आम चंदा की फ़ेहरिस्त खोली, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि0 ने तीन सौ ऊंट, पचास घोड़े और एक हज़ार दीनार चंदा में दिये उनको "مُجَهِّزُ جَيْشِ الْعُسْرَةِ" का ख़िताब मिला।(2)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने चालीस हज़ार दिरहम पेश किये।(3)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने घर में जो कुछ था उसका निस्फ़ जो कई हज़ार रूपया था हाज़िर किया।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 जो कुछ लाए अगर्चे वह क़ीमत में कम था मगर मअ़लूम हुआ कि वह घर में अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्ल0 की मुहब्बत के सिवा और कुछ भी बाक़ी छोड़ कर न आए थे।(4)

अबू अक़ील अंसारी रज़ि0 ने दो सेर छूहारे लाकर पेश किये और यह भी अ़र्ज़ की कि "रात भर पानी निकाल निकाल कर एक खेत को सैराब करके चार सेर छूहारे मज़दूरी के लाया था, दो सेर बीवी बच्चे के लिये छोड़ कर बाक़ी दो सेर ले आया हूं।" नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि छूहारों को जुम्ला क़ीमती माल व मताअ़ के ऊपर बिखेर दो।(5)

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-516 (2) सुनन तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उस्मान बिन अफ़्फ़ान, मुस्नद अहमद 5-63 (3) तफ़सीर तबरी में बीस हज़ार का ज़िक्र है 10-191 (4) रहमतुल लिल आलमीन 1-136 (5) तफ़सीरे तबरी 10-197

ग़र्ज़ हर सहाबी ने इस मौक़ा पर ऐसे ही ख़ुलूस व फ़राख़ दिली से काम लिया, तक़रीबन बयासी शख़्स जो दिखावे के मुसलमान थे बहाना करके अपने घरों में रह गए।[1]

अब्दुल्लाह बिन उबैय बिन सलूल मशहूर मुनाफ़िक़ ने इन लोगों को इत्मीनान दिलाया था कि अब मुहम्मद सल्ल0 और उनके साथी मदीना वापस न आ सकेंगे, क़ैसर उन्हें क़ैद कर के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में भेज देगा।[2]

ख़ुदा का नबी सल्ल0 तीस हज़ार की जमईयत से तबूक को रवाना हुआ।[3]

मदीना में सिबाअ् बिन उरफ़ुता को ख़लीफ़ा बनाया और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 को मदीना में अह्ले बैत की ज़रूरीयात के लिये मामूर फ़रमाया।[4]

लशकर में सवारियों की बड़ी क़िल्लत थी अट्ठारह शख़्सों के लिये एक ऊंट मुक़र्रर था, रसद के न होने से अक्सर जगह दरख़्तों के पत्ते खाने पड़े, जिससे होंट सूज गए थे, पानी बअ्ज़ जगह मिला ही नहीं, ऊंटों को (अगर्चे सवारी के लिये पहले ही कम थे) ज़िब्ह करके उनकी आंतों का पानी पिया करते थे।[5]

(1) ज़ादुल मआ़द 3-529, इब्ने सअ़द 2-165

(2) रहमतुल लिलआलमीन 1-136

(3) तबक़ात इब्ने सअ़द जुज़्व मग़ाज़ी, स0 119

(4) इब्ने हिशाम 2-519

(5) मदारिजुन्नुबूव्वा 2-577, 580

अलग़र्ज़ सब्र व इस्तिक़बाल से तमाम तकालीफ़ को बर्दाश्त करते हुए तबूक पहुंच गए। अभी तबूक के रास्ते ही में थे कि अली मुर्तज़ा रज़ि0 भी पहुंच गए, मअ़लूम हुआ कि मुनाफ़िक़ीन बाद में हज़रत अली रज़ि0 को चिढ़ाने और खिजाने लगे थे, कोई कहता निकम्मा समझ कर छोड़ दिया, कोई कहता तरस खाकर छोड़ दिया, इन बातों से शेरे खुदा को ग़ैरत आई, दो मंज़िला सेह मंज़िला तै करते हुए नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में पहुंच गए, लम्बे लम्बे सफ़र और सख़्त गर्मी की तकलीफ़ से पांव मुतवर्रम थे और छाले पड़ गए थे, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "أَلَا تَرْضَىٰ أَنْ تَكُوْنَ مِنِّى بِمَنْزِلَةِ هَارُوْنَ مِنْ مُوسٰى اِلَّا أَنَّه لَا نَبِيَّ بَعْدِى" "अली! तुम इस पर खुश नहीं होते कि तुम मेरे लिये वैसे ही हो जैसा कि मूसा के लिये हारून थे, गो मेरे बाद कोई नबी नहीं" यह सुनकर अली मुर्तज़ा खुश व खुर्रम मदीना को वापस तशरीफ़ ले गए।[1]

तबूक पहुंच कर नबी सल्ल0 ने एक माह क़्याम फ़रमाया, अह्ले शाम पर इस दिलेराना इक़्दाम का यह असर हुआ कि उन्होंने अरब पर हमला आवर होने का ख़्याल उस वक़्त छोड़ दिया और इस हमला आवरी का बेहतरीन मौक़ा आंहज़रत सल्ल0 की वफ़ात के बाद का ज़माना क़रार दिया।[2]

(1) इब्ने हिशाम 2-519, 520, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए तबूक
(2) रहमतुल लिल आलमीन

तबूक में एक नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल0 ने एक मुख़्तसर और निहायत जामेअ् वअ़ज़् फ़रमाया, ज़ैल में इसे मअ् तर्जुमा दर्ज किया जाता है।

अल्लाह पाक की बेहतरीन हम्द व सना के बाद फ़रमायाः

امّا بعد:

"فَاِنَّ اَصدَقَ الْحَدِيْثِ كِتَابُ اللّٰهِ، وَاَوْثَقَ الْعُرَىٰ كَلِمَةُ التَّقْوىٰ، وَخَيْرُ الْمِلَلِ مِلَّةُ اِبْرٰهِيْمَ، وَخَيْرُ السُّنَنِ سُنَّةُ مُحَمَّدٍ، وَأَشْرَفُ الْحَدِيْثِ ذِكْرُ اللّٰهِ، وَأَحْسَنُ الْقَصَصِ هٰذَاالْقُرْآن، وَخَيْرُ الْاُمُوْرِ عَوَازِمُهَا، وَشَرُّ الْاُمُوْرِ مُحْدَثَاتُهَا، وَأَحْسَنُ الْهَدْيِ هَدْىُ الْاَنْبِيَآءِ، وَاَشْرَفُ الْمَوْتِ قَتْلُ الشُّهَدَاءِ، وَأَعْمٰى الْعَمٰى الضَّلَالَةُ بَعْدَ الْهُدىٰ، وَخَيْرُ الْأَعْمَالِ مَا نفعَ، وَخَيْرُالهَدْيِ مَا اتُّبِعَ، وَشَرُّ الْعَمٰى عَمَى الْقَلْبِ، وَالْيَدُالْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلىٰ، وَمَا قَلَّ وَكَفىٰ خَيْرٌ ممَّا كَثُرَ وَألْهٰى. وَشَرُّ الْمَعْذِرَةِ حِيْنَ يَحْضُرُ الْمَوْتُ، وشَرُّ النَّدَامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمِنَ النَّاسِ مَن لَّايَاتِي الْجُمَعَةَ اِلَّادُبُراً، وَمَنْ لَا يَذْكُرُ اللّٰه اِلَّا هَجْراً، وَمِنْ اَعْظَمِ الْخَطَايَا اللِّسانُ الْكَذُوْبُ، وَخَيْرُ الْغِنىٰ غِنَى النَّفْسِ، وَخَيْرُ الزَّادِ التَّقْوَىٰ، وَرَأسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَخَيْرُ مَا وَقَرَفِى الْقُلُوْبِ الْيَقِيْنُ، وَالْاِرْتِيَابُ مِنَ الْكُفْرِ، وَالنِّيَاحَةُ مِنْ عَمَلِ الْجَاهِلِيَّةِ، وَالْغُلُولُ مِنْ

حَرِّ جَهَنَّمَ، وَالْكَنْزُ كَيٌّ مِّنَ النَّارِ، وَالشِّعْرُ مِنْ مَّزَامِيْرِ اِبْلِيْسَ، وَالخَمْرُ جُمَّاعُ الْاِثْمِ، وَشَرُّ الْمآكِلِ مَالُ الْيَتِيْمِ، وَالسَّعِيْدُ مَنْ وُّعِظَ بِغَيْرِهِ، وَالشَّقِيُّ مَنْ شَقِيَ فِيْ بَطْنِ أُمِّه، وَمِلاكُ الْعَمَلِ خَوَاتِمُه وَشَرُّ الرِّوَايَا رَوَايَا الْكَذِبِ، وَكُلُّ مَاهُوَاتٍ قَرِيْبٌ، وَسِبَابُ الْمؤمِنِ فُسُوْقٌ وَقِتَالُه كُفْرٌ، وَأَكْلُ لَحْمِهِ مِنْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ وَحُرْمَةُ مَالِهِ كَحُرْمَةِ دَمِهِ، وَمَنْ يَتَأَلَّ عَلىٰ اللّٰهِ يُكَذِّبْهُ، وَمَنْ يَغْفِرْ يُغْفَرْ له، وَمَنْ يَعْفُ يَعْفُ اللّٰهُ عَنْهُ، وَمَنْ يَكْظِمُ الْغَيْظَ يَأجُرْهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَصْبِرْ عَلىٰ الرَّزِيَّةِ يُعَوِّضْهُ اللّٰه، وَمَنْ يَتَّبِعُ السُّمْعَةَ يُسَمِّعْهُ اللّٰهُ، وَمَنْ يَصْبِرْ يُضَعِّفُ اللّٰهُ لَه، وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ يَعَذِّبْهُ اللّٰهُ، ثُمَّ اسْتَغْفَرَ ثَلٰثاً."[1]

"हर एक कलाम में सिद्क़ में बढ़कर अल्लाह की किताब है, सबसे बढ़कर भरोसा की बात तक़्वा का कलिमा है, सब मिल्लतों से बेहतर मिल्लत, इब्राहीम (अलै0) की है, सब तरीक़ों से बेहतर तरीक़ा मुहम्मद (सल्ल0) का है, सब बातों पर अल्लाह के ज़िक्र को शर्फ़ है, सब बयानात से पाकीज़ा तर क़ुर्आन है, बेहतरीन काम उलुल अ़ज़्म के काम हैं, उमूर में बदतरीन अम्र वह है जो नया निकाला गया हो, अंबिया की रविश सब रविशों से खूब तर है, शहीदों की मौत, मौत की

(1) दलाइलुन्नुबूव्वा लिल बैहक़ी 5-241, 242

सब क़िस्मों से बुज़ुर्ग तर है, सबसे बढ़ कर अंधापन वह गुमरही है जो हिदायत के बाद हो जाए, अमलों में वह अमल अच्छा है जो नफ़ा देह हो, बेहतरीन रविश वह है जिस पर लोग चल सकें, बदतरीन कोरी (अंधापन) दिल की कोरी है, बुलंद हाथ पस्त हाथ से बेहतर होता है, थोड़ा और काफ़ी माल उस बुहतात से अच्छा है जो ग़फ़लत में डाल दे, बदतरीन मअ़ज़िरत वह है जो जाँ कनी के वक़्त की जाए, बदतरीन नदामत वह है जो क़्यामत को होगी, बअ़ज़ लोग जुमुआ़ को आते हैं दिल पीछे लगे होते हैं, उनमें बअ़ज़ लोग वह हैं जो अल्लाह का ज़िक्र कभी कभी किया करते हैं, सब गुनाहों से अज़ीम तर झूटी ज़बान है, सबसे बड़ी तवंगरी दिल की तवंगरी है, सबसे उम्दा तोशा तक़्वा है, दानाई यह है कि ख़ुदा का ख़ौफ़ दिल में हो, दिल नशीन होने के लिये बेहतरीन चीज़ यक़ीन है, शक पैदा करना कुफ़्र (की शाख़) है, बैन से रोना जाहिलीयत का काम है, ख़ियानत करना अज़ाबे जहन्नम का सामान है, माल व दौलत नारे दोज़ख़ का दाग़ है, शेअ़र इबलीस का बाजा गाजा है, शराब तमाम गुनाहों का मज्मूआ है, बदतरीन रोज़ी यतीम का माल खाना है, सआ़दतमंद वह है जो दूसरे से नसीहत पकड़ता है, अस्ल बदबख़्त वह है जो माँ के पेट ही से बदबख़्त हो, अमल का

सरमाया उसका बेहतरीन अंजाम है, बदतरीन बात वह है जो झूटी है, जो बात होने वाली है वह बहुत क़रीब है, मोमिन को गाली देना फ़िस्क़ है, मोमिन को क़त्ल करना कुफ़्र है, मोमिन का गोश्त खाना (उसकी ग़ीबत करना) अल्लाह की मअ्सियत है, मोमिन का माल दूसरे पर ऐसा ही हराम है जैसा कि उसका खून, जो खुदा से इस्तिग़फ़ार करता है खुदा उसे झुटलाता है, जो किसी का ऐब छिपाता है खुदा उसके उयूब छिपाता है, जो मुआफ़ी देता है उसे मुआफ़ी दी जाती है, जो गुस्सा को पी जाता है खुदा उसे अज्र देता है, जो नुक़्सान पर सब्र करता है खुदा उसे अज्र देता है, जो चुग़ली को फैलाता है खुदा उसकी रुस्वाई आम कर देता है, जो सब्र कर करता है खुदा उसे बढ़ाता है, जो खुदा की नाफ़रमानी करता है, खुदा उसे अज़ाब देता है, फिर तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़कर आंहज़रत सल्ल0 ने इस खुत्बा को ख़त्म फ़रमाया।"

अय्यामे क़यामे तबूक में जुलबजादीन का इंतिक़ाल हुआ इस मुख़्लिस के ज़िक्र से वाज़ेह होता है कि नबी करीम सल्ल0 मुफ़्लिस सहाबा पर किस क़दर मज़ीद लुत्फ़ व इनायत फ़रमाते थे, उनका नाम अब्दुल्लाह था, अभी बच्चा ही थे कि बाप मर गया, चचा ने परवरिश की थी, जब जवान हुए तो चचा ने ऊंट, बकरिया, गुलाम देकर उनकी हैसियत दुरुस्त कर दी थी, अब्दुल्लाह ने इस्लाम के

मुतअ़ल्लिक़ कुछ सुना और दिल में तौहीद का ज़ौक़ पैदा हुआ, लेकिन चचा से इस क़दर डरते थे कि इज़्हारे इस्लाम न कर सके, जब नबी करीम सल्ल0 फ़त्हे मक्का से वापस गए तो अब्दुल्लाह ने चचा से जाकर कहाः

प्यारे चचा! मुझे बरसों इंतिज़ार करते गुज़र गए कि कब आपके दिल में इस्लाम की तहरीक पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं, लेकिन आपका हाल वही पहले का सा चला आता है, मैं अपनी उम्र पर ज़्यादा एतिमाद नहीं कर सकता, मुझे इजाज़त फ़रमाइये कि मैं मुसलमान हो जाऊं।

चचा ने जवाब दिया "देख अगर तू मुहम्मद (सल्ल0) का दीन क़बूल करना चाहता है तो मैं सब कुछ तुझसे छीन लूंगा, तेरे बदन पर चादर और तहबंद तक बाक़ी न रहने दूंगा।"

अब्दुल्लाह ने जवाब दिया "चचा साहब! मैं मुसलमान ज़रूर बनूंगा और मुहम्मद सल्ल0 की इत्तिबाअ़ ही क़बूल करूंगा, शिर्क और बुत परस्ती से मैं बेज़ार हो चुका हूं अब जो आप का मंशा है कीजिये और जो कुछ मेरे क़ब्ज़ा में ज़र व माल वग़ैरा है सब कुछ संभाल लीजिये, मैं जानता हूं कि इन सब चीज़ों को आख़िर एक रोज़ यहीं दुन्या में छोड़ जाना है, इसलिये में उसके लिये सच्चे दीन को तर्क नहीं कर सकता।

अब्दुल्लाह ने यह कहकर कपड़े उतार दिये और मां के

सामने गए, मां देख कर हैरान हुई कि क्या हुआ, अब्दुल्लाह ने कहा मैं मोमिन और मुवह्हिद हो गया हूं, नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में जाना चाहता हूं, सफ़र पोशी के लिये कपड़े की ज़रूरत है, मेहरबानी करके दीजिये, मां ने एक कम्बल दे दिया, अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़ कर आधे का तहबंद बना लिया, आधा ओढ़ लिया और मदीना को रवाना हो गए, अलस्सुब्ह मदीना मस्जिदे नबवी में पहुंच गए और मस्जिद से तकिया लगा कर मुंतज़िराना बैठ गए, नबी करीम सल्ल0 जब मस्जिद मुबारक में आए उन्हें देखकर पूछा कौन हो? कहा मेरा नाम अब्दुल उज़्ज़ा है, फ़क़ीर व मुसाफ़िर हूं, आशिक़े जमाल और तालिबे हिदायत होकर दरे दौलत आ पहुंचा।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह है, जुलबजादीन लक़ब, तुम हमारे क़रीब ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो।"

हज़रत अब्दुल्लाह अस्हाबे सुफ़्फ़ा में शामिल हो गए, नबी करीम सल्ल0 से कुर्आन सीखते और दिन भर अजब ज़ौक़ व शौक़ और जोश व नशात से पढ़ा करते।

एक दफ़ा उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने कहा कि लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह अअ्राबी इस क़दर बुलंद आवाज़ से पढ़ रहा है कि दूसरों की क़िराअत में मुज़ाहमत होती है, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया उमर! उसे कुछ न कहो यह तो खुदा और रसूल के लिये सब कुछ छोड़ छाड़ कर आया

है।

अब्दुल्लाह के सामने ग़ज़वए तबूक की तैयारी होने लगी तो यह भी रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में आए, अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 दुआ फ़रमाइये कि मैं भी राहे खुदा में शहीद हो जाऊं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया जाओ किसी दरख़्त का छिल्का उतार लाओ, अब्दुल्लाह छिल्का ले आए तो नबी करीम सल्ल0 ने वह छिल्का उनके बाजू पर बांध दिया और ज़बाने मुबारक से फ़रमाया "इलाही में कुफ़्फ़ार पर इसका खून हराम करता हूं" अब्दुल्लाह ने कहा या रसूलल्लाह सल्ल0! मैं तो शहादत का तालिब हूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "जब ग़ज़वा की नीयत से तुम निकलो और फिर तप आ जाए और मर जाओ तब भी तुम शहीद ही होगे।"

तबूक पहुंच कर यही हुआ कि तप चढ़ी और आलमे बक़ा को सिधार गए, बिलाल बिन हारिस मुज़नी का बयान है कि मैंने अब्दुल्लाह के दफ़्न की कैफ़ियत देखी है।

रात का वक़्त था हज़रत बिलाल रज़ि0 के हाथ में चराग़ था, अबू बक्र रज़ि0 व उमर रज़ि0 उसकी लाश को लहद में रख रहे थे, नबी करीम सल्ल0 भी उसकी क़ब्र में उतरे थे और अबू बक्र रज़ि0 व उमर रज़ि0 से फ़रमा रहे थे "أَدْنِيَا اِلَيَّ اَخَا كَمَا" अपने भाई को मुझसे क़रीब करो, आंहज़रत सल्ल0 ने क़ब्र में ईंटें भी अपने हाथ से रखीं और फिर दुआ में फ़रमायाः "ऐ अल्लाह मैं इनसे राज़ी हुआ तू भी इनसे राज़ी हो जा" इब्ने मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं काश

इस क़ब्र में मैं दफ़्न किया जाता।[1]

तबूक से वापस फिरे और मदीना के करीब पहुंचे तो लोग आलमे शौक़ में इस्तिक़बाल को निकले, यहां तक कि पर्दा नशीनाने हरम भी जोश में घरों से निकल पड़ें।

जो मुनाफ़िक़ीन यह समझे हुए थे कि अब मुहम्मद (सल्ल0) और उनके दोस्त क़ैद होकर किसी दूर दराज़ जज़ीरा में भेजे जाएंगे और सही व सालिम मदीना न पहुंचेंगे, वह अब पशेमां हुए और उन्होंने साथ न चलने के झूट मूट उज़्र बनाए, नबी करीम सल्ल0 ने सब को मुआ़फ़ी दे दी, लेकिन तीन मुख़्लिस सहाबी भी थे जो अपनी मआ़मूली सुस्ती व काहिली की वजह से हमरिकाब जाने से रह गए थे, उनको अपनी सदाक़त की वजह से इम्तिहान भी देना पड़ा।

उनमें से एक बुज़ुर्ग सहाबी रज़ि0 ने अपने मुतआ़ल्लिक़ जो कुछ अपनी ज़बान से बयान किया है मैं उसी को इस जगह लिख देना ज़रूरी समझता हूं।

यह बुज़ुर्गवार हज़रत कआ़ब बिन मालिक अंसारी रज़ि0 हैं और उन 73/ साबिक़ीन में से हैं, जो उक़्बा की बैआ़ते सानिया में हाज़िर हुए थे और शुआ़राए ख़ास में से थे।[2]

हज़रत कआ़ब रज़ि0 का बयान कि इस सफ़र में मेरा घर पर रह जाना इब्तिलाए महज़ था, ऐसा करने का न मेरा इरादा था, न कोई उज़्र था, सफ़र का सामान मुरत्तब था, उम्दा

(1) मदारिजुन्नुबूव्वा, मुतरजम 2-90,91, इब्ने हिशाम 2-527, 528

(2) रहमतुल लिल आलमीन 1-122

ऊंटनियां मेरे पास मौजूद थीं, मेरी माली हालत ऐसी अच्छी थी कि पहले कभी न हुई थी, उस सफ़र के लिये मैंने दो मज़बूत शुतुर भी ख़रीद लिये थे, हालांकि इससे पेशतर, मेरे पास दो ऊंट कभी न हुए थे, लोग सफ़र की तैयारी करते थे और मुझे ज़रा तरद्दुद न था, मैंने सोच रखा था कि जिस रोज़ कूच होगा मैं चल पड़ूंगा, लशकरे इस्लाम जिस रोज़ रवा हुआ मुझे कुछ थोड़ा सा काम था, मैंने कहा ख़ैर मैं कल जा मिलूंगा, दो तीन रोज़ इसी तरह सुस्ती और तज़बजुब में गुज़र गए, अब लशकर इतनी दूर निकल गया था कि उसका मिल सकना मुश्किल हो गया, मुझे निहायत सदमा था कि यह क्या हुआ।

मैं एक रोज़ घर से निकला, मुझे उन मुनाफ़िक़ीन के सिवा जो झूट मूट उज़्र करने के आदी थे या जो मअ़ज़ूर थे, और कोई भी रास्ता में न मिला, यह देखकर मेरे तन बदन को रंज व ग़म की आग लग गई, यह दिन मेरे इस तरह गुज़र गए कि नबी करीम सल्ल0 वापस भी तशरीफ़ ले आए, अब मैं हैरान था कि क्या करूं और क्या कहूं और क्योंकर ख़ुदा के रसूल सल्ल0 के इताब से बचाव करूं, लोगों ने मुझे बअ़ज़ हीले बहाने बताए, मगर मैंने यही फ़ैसला किया कि नजात सच ही से मिल सकती है, आख़िर मैं नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने मुझे देखा और तबस्सुम फ़रमाया, तबस्सुम ख़श्म आमेज़ था, मेरे तो होश उसी वक़्त जाते रहे।

नबी करीम सल्ल0 ने पूछा कअ़ब! तुम क्यों रह गए थे, क्या तुम्हारे पास कोई सामान मुहय्या न था? मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! मेरे पास तो सब कुछ था, मेरे नफ़्स ने मुझे ग़ाफ़िल बनाया, काहिली ने मुझ पर ग़ल्बा किया, शैतान ने मुझ पर हमला किया और मुझे हिर्मान व ख़िज़लान के गिर्दाब में डाल दिया, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "तुम अपने घर ठहरो और हुक्मे इलाही का इंतिज़ार करो"

बअ़ज़ लोगों ने कहा देखो! अगर तुम भी कोई हीला बना लेते तो ऐसा न होता, मैंने कहा "वह्ये इलाही से मेरा झूट खुल जाता और मैं कहीं का भी न रहता, मुआमला किसी दुन्यादार से नहीं, बल्कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के साथ है" मैंने दरयाफ़्त किया कि "जो हुक्म मेरे लिये हुआ है किसी और के लिये भी हुआ है?" लोगों ने कहा "हां हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबीअ़ की भी यही हालत है" यह सुनकर मुझे ज़रा तसल्ली हुई कि दो मर्दे सालेह और भी मुझ जैसी हालत में हैं।

फिर रसूले ख़ुदा सल्ल0 ने हुक्म दिया कि कोई मुसलमान हमारे साथ बातचीत न करे और न हमारे पास आकर बैठे, अब ज़िंदगी और दुन्या हमारे लिये वबाल मअ़लूम होने लगी, उन दिनों में हिलाल और मुर्रारा तो घर से बाहर भी न निकले, क्योंकि वह बूढ़े भी थे, लेकिन मैं जवान और दिलेर था, घर से निकलता मस्जिदे नबवी में

जाता, नमाज़ पढ़कर मस्जिद मुबारक के एक गोशाम में बैठ जाता।

नबी करीम सल्ल0 मुहब्बत भरी निगाह और गोशए चशम से मुझे दखा करते, मेरी शिकस्तगी को मुलाहज़ा फ़रमाते, और जब मैं हुजूर सल्ल0 की जानिब आंख उठाता तो हुजूर सल्ल0 एराज़ फ़रमाते।

मुसलमानों का यह हाल था कि न कोई मुझसे बात करता न कोई मेरे सलाम का जवाब देता, एक रोज़ मैं निहायत रंज व अलम में मदीना से बाहर निकला, अबू क़तादा रज़ि0 मेरा चचेरा भाई था और हम दोनों में निहायत मुहब्बत थी, सामने उसका बाग़ था, वह बाग़ में कुछ इमारत बनवा रहा था, मैं उसके पास चला गया, उसे सलाम किया तो उसने जवाब तक न दिया और मुंह फेर कर खड़ा हो गया, मैंने कहा "अबू क़तादा (रज़ि0)! तुम खूब जानतू हो कि मैं खुदा और रसूल सल्ल0 से मुहब्बत रखता हूं और निफ़ाक़ व शिर्क का मेरे दिल पर असर नहीं, फिर तुम क्यों मुझसे बात नहीं करते?" अबू क़तादा ने अब भी जवाब न दिया, जब मैंने तीन बार इसी बात को दोहराया तो चचेरे भाई ने सिर्फ़ इस क़दर जवाब दिया कि "अल्लाह और रसूल सल्ल0 ही को खूब मअ़लूम है" मुझे बहुत ही रिक़्क़त हुई और खूब ही रोया, मैं शहर में लौट कर आया तो मुझे एक ईसाई मिला, यह मदीना में मुझे तलाश कर रहा था, लोगों ने बता दिया कि वह यही शख़्स है, उसके पास

Maktab-e-Ashraf

बादशाहे ग़स्सान का एक ख़त मेरे नाम था, ख़त में लिखा था:

"हमने सुना है कि तुम्हारा आक़ा तुमसे नाराज़ हो गया है, तुमको अपने सामने से निकाल दिया है और बाक़ी सब लोग भी तुम पर जौर व जफ़ा कर रहे हैं, हमको तुम्हारे दर्जा व मंज़िलत का हाल बखूबी मअ़लूम है और तुम ऐसे नहीं हो कि कोई तुम से ज़रा भी बे इत्तिफ़ाती करे या तुम्हारी इ़ज़्ज़त के ख़िलाफ़ तुमसे सुलूक किया जाए, अब तुम यह ख़त पढ़ते ही मेरे पास चले आओ और आकर देखो कि मैं तुम्हारा एज़ाज़ व इकराम क्या कुछ कर सकता हूं।"

ख़त पढ़ते ही मैंने कहा कि यह एक और मुसीबत मुझ पर पड़ी, इससे बढ़ कर मुसीबत और क्या हो सकती है? कि आज एक ईसाई मुझ पर और मेरे दीन पर क़ाबू पाने की आरजू करने लगा है और मुझे कुफ़्र की दावत देता है, इस ख़्याल से मेरा रंज व अंदोह चंद दर चंद बढ़ गया, ख़त को क़ासिद के सामने ही मैंने आग में डाल दिया और कह दिया "जाओ कह देना कि आपकी इनायात व इल्तिफ़ात से मुझे अपने आक़ा (सल्ल0) की बेइल्तफ़ाती लाख दर्जा बेहतर व ख़ुशतर है।"

मैं घर पहुंचा तो देखा कि नबी करीम सल्ल0 की तरफ़ से एक शख़्स आया हुआ मौजूद है, उसने कहा: नबी करीम सल्ल0 ने हुक्म दिया है कि "तुम अपनी बीवी से अलाहीदा

कहा नहीं, सिर्फ़ अलाहिदा रहने को फ़रमाया है, यह सुनकर अपनी बीवी को उसके मैके भेज दिया, मुझे मअ़लूम हुआ कि हिलाल और मुरारा के पास भी यही हुक्म पहुंचा था, हिलाल की बीवी नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हिलाल कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं और उनकी ख़िदमत के लिये कोई ख़ादिम भी नहीं, अगर इज़्न हो तो मैं उनकी ख़िदमत करती रहूं, फ़रमाया "हां उसके बिस्तर से दूर रहो" औरत ने कहा "या रसूलुल्लाह सल्ल0! हिलाल का रंज व ग़म से ऐसा हाल है कि उन्हें तो और कोई भी ख़्याल नहीं रहा।

अब मुझे लोगों ने कहा तुम भी इजाज़त ले लो कि तुम्हारी बीवी तुम्हारा काम काज तो कर दिया करे, मैंने कहा "मैं तो ऐसी जुर्अत नहीं करने का, क्या ख़बर हुज़ूर सल्ल0 इजाज़त दें या न दें, और मैं जवान हूं अपना काम खुद कर सकता हूं मुझे ख़िदमत की ज़रूरत नहीं।

अलग़र्ज़ इसी तरह मुसीबत के पचास दिन गुज़र गए, एक रात मैं अपनी छत पर लेटा हुआ था और अपनी मुसीबत पर सख़्त नालां था कि कोहे सल्अ़ पर चढ़कर जो मेरे घर के क़रीब था, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने आवाज़ दी, कअ़ब को मुबारक हो कि उसकी तौबा क़बूल हो गई, यह आवाज़ सुनते ही मेरे दोस्त व अह्बाब दौड़ पड़े और मुबारकबाद कहने लगे कि मुख़्लिस की तौबा क़बूल, मैंने यह सुनते ही पेशानी को ख़ाक पर रख दिया और

सज्दए शुक्राना अदा किया और फिर दौड़ा दौड़ा नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

नबी करीम सल्ल0 मुहाजिरीन व अंसार में तशरीफ़ फ़रमा थे, मुझे देखकर मुहाजिरीन ने मुबारकबाद दी और अंसार ख़ामोश रहे, मैंने आगे बढ़कर सलाम अ़र्ज़ किया, उस वक़्त चेहरए मुबारक ख़ुशी व मुसर्रत से चौदहवीं के चांद की तरह ताबां व दरख़्शां हो रहा था और आदते मुबारक थी कि ख़ुशी में चेहरए मुबारक और भी ज़्यादा रौशन हो जाता था, मुझे फ़रमाया "कअ़ब मुबारक! उस बेहतरीन दिन के लिये जब से तू मां के पेट से पैदा हुआ कोई दिन ऐसा मुबारक तुझ पर आज तक नहीं गुज़रा, आओः तुम्हारी तौबा को रब्बुल आलमीन ने क़बूल फ़रमा लिया है।"

मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! इस क़बूलियत के शुक्राना में अपना कुल माल राहे ख़ुदा में सद्क़ा देता हूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "नहीं" मैंने अ़र्ज़ किया "निस्फ़" फ़रमाया "नहीं" मैंने अ़र्ज़ किया "सुलुस" फ़रमाया, हां सुलुस खूब है और सुलुस भी बहुत है।[1]

मुनाफ़िक़ीन हमेशा इस फ़िक्र में रहते थे कि मुसलमानों में किसी तरह फूट डाल दें, एक मुद्दत से वह इस ख़्याल में थे कि मस्जिदे कुबा की तोड़ पर वहीं एक और मस्जिद इस हीला से बनाएं कि जो लोग ज़ुअ़फ़ या किसी और वजह से मस्जिदे नबवी में न पहुंच सकें यहां आकर नमाज़ अदा कर लिया करें, अबू आमिर जो अंसार में से ईसाई हो गया था

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हदीस कअ़ब बिन मालिक रज़ि0

उसने मुनाफ़िक़ीन से कहा तुम सामान करो, मैं क़ैसर के पास जाकर वहां से फ़ौजें लाता हूं कि इस मुल्क को इस्लाम से पाक कर दे।

आंहज़रत सल्ल0 जब तबूक तशरीफ़ ले जाने लगे तो मुनाफ़िक़ीन ने आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में आकर अ़र्ज़ की कि हमने बीमारों और मअ़ज़ूरों के लिये एक मस्जिद तैयार की है, आप चल कर उसमें एक दफ़ा नमाज़ पढ़ा दें तो मक़बूल हो जाए, आप सल्ल0 ने फ़रमाया इस वक़्त मैं मुहिम पर जा रहा हूं, जब तबूक से वापस फिरे तो हज़रत मालिक और हज़रत मअ़न बिन अ़दी को हुक्म दिया कि जाकर मस्जिद में आग लगा दें, इसी मस्जिद की शान में यह आयतें उतरीं हैं।[1]

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِداً ضِرَاراً وَّكُفْراً وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَاداً لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَا اِلَّا الْحُسْنٰى وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكَاذِبُوْنَ لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَداً لَّمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنَ اَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ، فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَتَطَهَّرُوا، وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِين.

''और इनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने इस ग़र्ज़ से मस्जिद बनाई है कि ज़रर पहुंचाएं और कुफ़्र करें और मोमिनों में तफ़रक़ा डालें और जो लोग ख़ुदा

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-529, 530, ज़ादुल मआ़द 3-549

और उसके रसूल (सल्ल0) से पहले जंग कर चुके हैं उनके घात की जगह बनाएं, और क़समें खाएंगे कि हमारा मक़्सूद तो सिर्फ़ भलाई थी, मगर ख़ुदा गवाही देता है कि यह झूटे हैं, तुम इस मस्जिद में कभी खड़े भी न होना, अलबत्ता वह मस्जिद जिसकी बुन्याद पहले दिन से तक़्वा पर रखी गई है इस क़ाबिल है कि उसमें जाया करो, उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और ख़ुदा पाक रहने वालों ही को पसंद करता है।"

(तौबा)

वफ़्दे दौस

तुफ़ैल बिन अ़म्र रज़ि0 दौसी के इस्लाम लाने का ज़िक्र इस किताब में पहले आ चुका है, इस्लाम के बाद जब यह बुज़ुर्गवार वतन को जाने लगे तो इन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! दुआ फ़रमाइये कि मेरी क़ौम भी मेरी दावत पर मुसलमान हो जाए, दुआ फ़रमाई, ख़ुदाया तुफ़ैल को तू एक निशान (आयत) बना दे, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 घर पहुंचे तो बूढ़े बाप मिलने के लिये आए, हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा, बावा जान अब न मैं आपका हूं और न आप मेरे हैं, उन्होंने कहा क्यों? हज़रत तुफ़ैल रज़ि0 ने कहा मुहम्मद सल्ल0 का दीन क़बूल करके और मुसलमान होके आया हूं, उन्होंने कहा बेटा जो तेरा दीन है वही मेरा भी दीन है,

हज़रत तुफ़ैल ने कहा खूब, तब आप उठिये, गुस्ल फ़रमाइये, पाक कपड़े पहन कर तशरीफ़ लाइये, ताकि मैं इस्लाम की तअ़लीम दूं, फिर हज़रत तुफ़ैल की बीवी आई, उससे भी इसी तरह बातचीत हुई और वह भी मुसलमान हो गई, अब हज़रत तुफ़ैल रज़ि० ने इस्लाम की मुनादी शुरू कर दी लेकिन लोग कुछ मुसलमान न हुए।[1]

हज़रत तुफ़ैल रज़ि० फिर नबी करीम सल्ल० की ख़िदमत में आए, अ़र्ज़ किया मेरी क़ौम में ज़िना की कसरत है। (चूंकि इस्लाम ज़िना को सख़्ती से हराम ठहराता है) इसलिये लोग मुसलमान नहीं हुए, हुज़ूर सल्ल० ने उनके लिये दुआ फ़रमाई "नबी करीम सल्ल० ने कहाः اَللّٰھُمَّ اھْدِ دَوْسًا[2] (ऐ ख़ुदा दौस को सीधा रास्ता दिखा) फिर हज़रत तुफ़ैल रज़ि० से फ़रमाया "जाओ" लोगों को दीने ख़ुदा की तरफ़ बुलाओ, उनसे नर्मी और मुहब्बत का बरताव करो।

इस दफ़ा हज़रत तुफ़ैल को अच्छी कामियाबी हुई, वह 5 हि० में दौस के सत्तर अस्सी लोगों को जो मुसलमान हो चुके थे, साथ लेकर मदीना पहुंचे, मअ़लूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल० ख़ैबर गए हुए हैं, इसलिये ख़ैबर ही पहुंच कर उन्होंने शर्फ़े हुज़ूरी हासिल किया और यह सब लोग भी ख़ैबर ही में नबी सल्ल० के दीदार से मुशर्रफ़ हुए,[3] नबी करीम सल्ल० के चचेरे भाई भी हब्श से वहां के हब्शी क़बाइल को जो

(1) ज़ादुल मआ़द 3-625 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किस्सए दौस

(3) ज़ादुल मआ़द 3-625, 626

मुसलमान हो चुके थे लेकर ख़ैबर ही जा पहुंचे।

हज़रत जअ्फ़र रज़ि0 का हब्श से वहां के मुस्लिमों को लेकर और हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र का यमन से दौस के नौ मुस्लिम ख़ानदानों को लेकर ख़ैबर में पहुंच जाना गोया यहूदियों को ख़ुदा की तरफ़ से यह बता देना था कि जिस नबी सल्ल0 की तअ़लीम ऐसे दूर दराज़ मुल्कों में दिलों के क़िलों को आसानी से फ़त्ह कर रही है, उसकी मुख़ालफ़त में अपने ईंट पत्थर के क़िलों के ऊपर भरोसा करना किस क़दर बे बुन्याद बात है।[1]

वफ़्दे सक़ीफ़

सक़ीफ़ में सबसे पहला शख़्स जो तअ़लीमे इस्लाम हासिल करने के लिये नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में आया था वह हज़रत उर्वा बिन मसऊद रज़ि0 सक़फ़ी थे, यह अपनी क़ौम के सरदार थे, और सुलह हुदैबिया में कुफ़्फ़ारे मक्का के वकील बन कर रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में आए थे, जंगे हवाज़िन व सक़ीफ़ के बाद जज़्बए तौफ़ीक़े इलाही से मदीना मुनव्वरा में हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया, हज़रत उर्वा के घर में दस बीवियां थीं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि तुम उनमें से चार को रखकर बाक़ी को तलाक़ दे दो, चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया।[2]

---

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-163

(2) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-299, ज़ादुल मआ़द 3-498

जब हज़रत उर्वा रज़ि0 इस्लाम सीख चुके तो उन्होंने आंहज़रत सल्ल0 से अ़र्ज़ किया कि अब मुझे अपनी क़ौम में इस्लाम की मुनादी करने की इजाज़त फ़रमा दी जाए, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया तुम्हारी क़ौम तुम्हें क़त्ल कर देगी, हज़रत उर्वा रज़ि0 ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! मेरी क़ौम को मुझसे इतनी मुहब्बत है जितनी किसी आशिक़ को अपने मअ़शूक़ से होती है, यह बुज़ुर्गवार अपनी क़ौम आए और वअ़ज़े इस्लाम शुरू कर दिया, एक रोज़ अपने बाला ख़ाना में नमाज़ पढ़ रहे थे, किसी शक़ी ने तीर चलाया, जिससे यह शहीद हो गए।[1]

अगर्चे हज़रत उर्वा रज़ि0 जांबर न हुए, लेकिन जो आवाज़ उन्होंने क़ौम के कानों तक पहुंचाई थी वह दिलों पर असर किये बग़ैर न रही, थोड़ा ही अर्सा गुज़रा था कि क़ौम ने अपने चंद सर कर्दों को मुंतख़ब किया और नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में इसलिये भेजा कि इस्लाम की निस्बत पूरी वाक़िफ़ीयत हासिल करें।

यह वफ़्द 9 हि0 में ख़िदमते नबवी सल्ल0 में हाज़िर हुआ था, वफ़्द का सरदार अब्द या लैल था, जिसके समझाने को नबी करीम सल्ल0 कोहे ताइफ़ पर 10 हि0 नुबूव्वत में गए थे, और उसने वअ़ज़ सुनने से इंकार कर के आबादी के लड़कों और औबाशों को नबी करीम सल्ल0 की तज़्हीक व तह्क़ीर के लिये मुक़र्रर कर दिया था, और

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-713

जिसके इशारे से ताइफ़ में रसूलुल्लाह सल्ल0 पर पत्थर बरसाए गए और कीचड़ फेंकी गई थी।

नबी करीम सल्ल0 ने वहां से आते हुए यह फ़रमा दिया था कि मैं इनकी बर्बादी के लिये दुआ नहीं करूंगा, क्योंकि अगर यह खुद इस्लाम न लाएंगे तो इनकी आइंदा नस्लों को खुदा ईमान अता करेगा, अब वही दुशमने इस्लाम खुद बखुद इस्लाम के लिये अपने दिल में जगह पाते, और दिली व रूही तलब से आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ्बा रज़ि0 ने नबी करीम सल्ल0 से अ़र्ज़ किया कि यह (अह्ले सक़ीफ़) मेरी क़ौम के लोग हैं मैं इन्हें अपने पास उतार लूं और इनकी तवाज़ोअ् करूं, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः "لَا أَمْنَعُكَ أَنْ تُكْرِمَ قَوْمَكَ" मैं मना नहीं करता कि तुम अपनी क़ौम की इ़ज़्ज़त करो लेकिन इनको ऐसी जगह उतारो जहां कुर्आन की आवाज़ उनके कान में पड़े।

अलग़र्ज़ उनके ख़ेमे मस्जिद के सिहन में लगाए गए, जहां से यह कुर्आन भी सुनते थे और लोगों को नमाज़ पढ़ते भी देखते, इस तदबीर से उनके दिलों पर इस्लाम की सदाक़त का असर पड़ा, उन्होंने नबी करीम सल्ल0 के दस्ते मुबारक पर बैअ़ते इस्लाम की, और बैअ़त से पहले यह दरख़्वास्त की कि हम को तर्के नमाज़ की इजाज़त दी जाए, नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया "لَا خَيْرَ فِي دِيْنٍ لَيْسَ فِيْهِ رُكُوْعٌ"

(जिस मज़हब में नमाज़ नहीं, उसमें कोई भी खूबी नहीं) फिर उन्होंने कहा अच्छा हमें जिहाद के लिये न बुलाया जाए और न ज़कात हमसे ली जाए, आंहज़रत सल्ल0 ने यह शर्त कबूल फ़रमा ली और सहाबा रज़ि0 से फ़रमाया कि इस्लाम के असर से यह खुद ही दोनों काम करने लगेंगे।[1]

कनाना इब्ने अब्द या लैल ने जो उनका सरदार था, मुख़्तलिफ़ औक़ात में नबी करीम सल्ल0 से मुंदर्जा ज़ैल मसाइल पर भी गुफ़्तगू की।

1- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! ज़िना के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, हमारी क़ौम के लोग अक्सर वतन से दूर रहते हैं इसलिये ज़िना के बग़ैर चारा ही नहीं? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः ज़िना तो हराम है, और अल्लाह पाक का इसके लिये यह हुक्म हैः

لَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّسَآءَ سَبِيْلًا

"तुम ज़िना के क़रीब भी न जाओ, यह तो सख़्त बेहयाई और बहुत बुरा तरीक़ है।" (बनी इस्राईल, रुकूअ़ 4)

2- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! सूद के बारे में हुजूर क्या फ़रमाते हैं, यह तो बिल्कुल हमारा ही माल होता है? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया तुम अपना अस्ल रूपया ले लो, देखो अल्लाह तआला ने फ़रमाया हैः

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰوٓا

(1) यह हिस्सा सुनन अबी दाऊद, किताबुल ख़िराज, बाब माजाअ़ फी ख़बरित्ताइफ में भी मज़कूर है।

"ऐ ईमान वालो खुदा से डरो और सूद में से जो लेना रह गया है वह भी छोड़ दो।"

(बक़राः रुकूअ़ 4)

3- या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! ख़मर (शराब) के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं, यह तो हमारे ही मुल्क का अर्क़ है इसके बग़ैर तो हम रह नहीं सकते?

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः शराब को खुदा ने हराम कर दिया है, देखो अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ، فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

"ऐ ईमान वालो! शराब, जुवा, अंसाब, व अज़लाम, नापाक और गंदे हैं, शैतान के काम हैं, इनसे बचा करो ताकि फ़लाह पाओ" (माएदाः रुकूअ़ 4)

दूसरे रोज़ उसने आकर कहा ख़ैर हम आपकी बातें मान लेंगे लेकिन (रब्बह) को क्या करें? (रब्बा मुअन्नस है लफ़्ज़ रब का, जिस देवी के बुत को यह पूजा करते थे से रब्बह कहा करते थे) नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः उसे गिरा दो।

वफ़्द के लोगों ने कहा, हाए हाए अगर रब्बह को ख़बर हो गई कि आप उसे गिरा देना चाहते हैं तो वह हम लोगों को तबाह कर डालेगी।

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 ने कहा अफ़सोस इब्ने

अब्द या लैल तुम इतना नहीं समझते कि वह तो सिर्फ़ पत्थर ही है, इब्ने अब्द या लैल ने खिसयाने होकर कहा उमर (रज़ि0) हम तुझसे बात करने नहीं आए, फिर रसूलुल्लाह सल्ल0 से अ़र्ज़ किया।

उसे गिराने की ज़िम्मादारी हुजूर (सल्ल0) ख़ुद लें, क्योंकि हम तो उसे कभी नहीं गिराने के, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया ख़ैर मैं गिरा देने वाले को भी भेज दूंगा, उनमें से एक ने अ़र्ज़ किया कि उस शख़्स को हमारे बाद रवाना कीजियेगा, वह हमारे साथ न जाए।

अलग़र्ज़ यह लोग जितने हाज़िर हुए थे वह मुसलमान होकर वतन वापस चले गए, उन्होंने चलते वक़्त कहा कि हमारे लिये कोई इमाम मुक़र्रर कर दीजिये।

उन्ही में एक शख़्स हज़रत उस्मान बिन अबुल आ़स थे जो उम्र में सबसे छोटे थे, वह क़ौम से ख़ुफ़िया कुर्आन मजीद और अहकामे शरीअ़त सीखते रहते थे, कभी रसूलुल्लाह सल्ल0 से, कभी अबू बक्र सिद्दीक़ से सीख लिया करते, आंहज़रत सल्ल0 ने उन्हीं को उनका इमाम मुक़र्रर फ़रमा दिया।

वफ़्द ने रास्ता में यह मशवरा किया कि अपना इस्लाम छिपाकर पहले क़ौम को मायूस कर देना चाहिये, जब यह वतन पहुंच गए तो क़ौम ने पूछा कहो क्या हाल हुआ?

वफ़्द ने कहा (मआ़ज़ल्लाह) हमें एक सख़्त खू, दुरुश्त गो शख़्स से साबिक़ा पड़ा, जो हमें अनहोनी बातों का हुक्म

देता है, मसलन लात व उज़्ज़ा को तोड़ देना, तमाम सूदी रूपया को छोड़ देना, शराब, ज़िना को हराम समझना, क़ौम ने क़सम खाकर कहा हम इन बातों को कभी नहीं मानने के।

वफ़्द ने कहा अच्छा हथियारों को दुरुस्त करो और जंग की तैयारी करो, क़िलों की मरम्मत कर लो, दो दिन तक सक़ीफ़ इसी इरादा पर जमे रहे, तीसरे रोज़ खुद बखुद ही कहने लगेः

भला मुहम्मद (सल्ल0) के साथ हम क्योंकर लड़ सकेंगे, सारा अरब तो उनकी इताअ़त कर रहा है, फिर वफ़्द के लोगों से कहा जाओ जो कुछ वह कहते हैं क़बूल कर लो।

वफ़्द ने कहा, अब हम तुमको सही सही बताते हैं, हमने मुहम्मद सल्ल0 को तक़्वा में और वफ़ा में, रहम में और सिद्क़ में, सब ही से बढ़कर पाया, हम, तुम, सबको इस सफ़र से बड़ी बरकत हासिल हुई।

क़ौम ने कहा कि तुमने हमसे यह राज़ क्यों पोशीदा रखा और हमको ऐसे सख़्त ग़म व अलम में क्यों डाला? वफ़्द ने कहा मुद्दआ़ यह था कि अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों से शैतानी गुरूर निकाल दे, इसके बाद वह मुसलमान हो गए।

चंद रोज़ के बाद वहां रसूलुल्लाह सल्ल0 के भेजे हुए अशख़ास हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि0 की इमारत में पहुंच गए, उन्होंने ने लात के गिरा देने की कार्रवाई का

आग़ाज़ करना चाहा, सक़ीफ़ के सब मर्द व ज़न, बूढ़े बच्चे, इस काम को दुशवार समझे हुए थे, पर्दा नशीन औरतें भी यह तमाशा देखने निकल आई थीं, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा ने उसके तोड़ने के लिये तीर चलाया, मगर अपने ज़ोर में खुद ही गिर पड़े, यह देख कर सक़ीफ़ वाले पुकार उठे, खुदा ने मुग़ीरा को धुतकार दिया और रब्बह ने उसे क़त्ल कर डाला, अब खुश खुश होकर कहने लगे तुम कुछ ही कोशिश करो मगर इसे नहीं गिरा सकते।

हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा ने कहा सक़ीफ़ वालो! तुम बहुत ही बेवक़ूफ़ हो, यह पत्थर का टुक्ड़ा ही क्या सकता है, लोगो! खुदा की आफ़ियत क़बूल करो और उसी की बंदगी करो, फिर उस घर का दरवाज़ा बंद करके मुग़ीरा ने अव्वल उस बुत को तोड़ा और फिर उसकी दीवारों पर चढ़ गए और उन्हें गिराना शुरू कर दिया, बाक़ी मुसलमान भी दीवारों पर चढ़े और उस इमारत का एक एक पत्थर गिरा के छोड़ा।

मूर्ती का पुजारी कहने लगा कि मूर्ती घर की बुन्याद उन्हें ज़रूर ग़र्क़ कर देगी, हज़रत मुग़ीरा ने यह सुना तो बुन्याद भी सारी खोद डाली और इस तरह क़ौम के दिलों में इस्लाम की बुन्याद मुस्तहकम हो गई।[1]

वफ़्दे अब्दुल क़ैस

क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द ख़िदमते नबवी में हाज़िर

(1) ज़ादुल मआ़द 3-596 ता 599, दलाइलुन्नुबूव्वा लिलबैहक़ी 5-299 ता 304 में वफ़्दे सक़ीफ़ का पूरा वाक़िआ तफ़सील से मौजूद है।

हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा तुम किस क़ौम से हो? अ़र्ज़ किया क़ौमे रबीआ़ से, नबी करीम सल्ल0 उन्हें खुश आमदेद फ़रमाया, उन्होंने अ़र्ज़ किया, रसूलुल्लाह (सल्ल0)! हमारे और हुज़ूर (सल्ल0) के दर्मियान क़बीला मुज़र के काफ़िर आबाद हैं, हम शहरे हराम ही में हाज़िर हो सकते हैं, इसलिये साफ़ वाज़ेह तौर पर समझा दिया जाए, जिस पर हम भी अमल करते रहें और क़ौम के बाक़ी मांदा अश्ख़ास भी।

फ़रमायाः मैं चार चीज़ों पर अमल करने और चार चीज़ों से बचे रहने का हुक्म देता हूं, जिन चीज़ों के करने का हुक्म है, वह यह हैं:

(1) अकेले ख़ुदा पर ईमान लाना, इससे मुराद यह है कि "لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللّٰهِ" की शहादत अदा करना। (2) नमाज़ (3) ज़कात (4) रमज़ान के रोज़े और माले ग़नीमत से ख़ुम्स निकालना।

चार चीज़ें जिनसे बचने का हुक्म है, यह हैं:

(1) दुब्बा (2) हन्तुम (3) नक़ीर (4) मुज़फ़्फ़त।[1] इन बातों को याद रखो और पिछलों को भी बता दो।[2]

(1) "दुब्बा" कद्दू के छिल्के को कहते हैं जिसको सुखा लिया जाता है। "हन्तुम" सब्ज़ घड़ा "नक़ीर" दरख़्त की जड़ की लकड़ी को अंदर से खोद लिया करते थे, इस बर्तन को "नक़ीर" कहते हैं, "मुज़फ़्फ़त" तारकोल को बर्तन में लगा लिया करते थे और उन सब बर्तनों को नशा आवर चीज़ों के लिये इस्तेमाल करते थे, इसलिये आप सल्ल0 ने मना फ़रमा दिया।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब अदाउल ख़ुम्स फ़िल ईमान, इसके अलावा नौ जगह इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह में इसको नक़्ल किया है, इमाम मुस्लिम रह0 ने भी सहीह मुस्लिम में यह हदीस ज़िक्र की है, किताबुल ईमान, बाबुल अम्र बिलईमान बिल्लाह।

उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हुज़ूर (सल्ल0) को क्या मअ़लूम है कि नक़ीर क्या होती है? फ़रमाया जानता हूं, खजूर के तने को खोदते हो और उसमें खजूरें डाला करते हो, उस पर पानी डालते हो, उसमें जोश पैदा होता है, जब जोश बैठ जाता है तब पिया करते हो, मुम्किन है कि तुम में से कोई (इस नशा में) अपने चचेरे भाई को भी क़त्ल कर डाले, (अजीब बात यह कि इसी वफ़्द में एक शख़्स ऐसा भी था जिसने नक़ीर के नशा में अपने चचेरे भाई को क़त्ल कर दिया था)

उन लोगों ने पूछा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम कैसे बर्तन में पानी पिया करें, फ़रमाया मशकों में, जिनका मुंह बांध दिया जाता है, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! हमारे यहां चूहे बकसरत होते हैं, इसलिये वहां चमड़े की मशकें सालिम नहीं रह सकतीं हैं, फ़रमाया ख़्वाह सालिम ही न रहें।[1]

इसी वफ़्द के साथ जारूद बिन मुअल्ला भी आया था, यह मसीहुल मज़हब था, उसने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! मैं इस वक़्त भी एक मज़हब रखता हूं, अगर हम इसे छोड़कर आपके दीन में दाख़िल हो जाएं, तो क्या आप हमारे ज़ामिन बन सकते हैं? फ़रमाया हां! मैं ज़ामिन बनता हूं, क्योंकि जिस मज़हब की मैं दावत दे रहा हूं यह उससे बेहतर है जिस पर तुम अब हो।

जारूद के साथ और भी ईसाई मुसलमान हो गए थे।[2]

(1) दलालुन्नुबुव्वा 5-366 (2) दलाइलुन्नुबूव्वा 5-328, इब्ने हिशाम 2-575

वफ़्दे बनू हनीफ़ा

बनू हनीफ़ा का वफ़्द नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, हज़रत सुमामा बिन उसाल रज़ि0 की कोशिश से उस इलाक़ा में इस्लाम की इशाअत हुई थी, यह वफ़्द मदीना आकर मुसलमान हुआ था, इसी वफ़्द के साथ मुस्लैमा कज़्ज़ाब भी था, वह मदीना आकर लोगों में कहने लगा कि अगर मुहम्मद (सल्ल0) साहब यह इक़रार करें कि उनका जानशीन मुझे बनाया जाएगा तो मैं बैअ़त करूंगा, नबी करीम सल्ल0 ने यह सुना, हुज़ूर सल्ल0 के हाथ में खजूर की एक छड़ी थी, फ़रमाया मैं तो इस छड़ी के देने की शर्त पर भी बैअ़त लेना नहीं चाहता, अगर वह बैअ़त न करेगा तो खुदा उसे तबाह फ़रमाएगा, इसका अंजाम खुदा तआला ने मुझे दिखा दिया है, यअ़नी मैंने ख़्वाब देखा कि मेरे हाथ में सोने के कंगन हैं, मुझे वह नागवार मअ़लूम हुए, ख़्वाब ही में वह्य से मअ़लूम हुआ कि उन्हें फूंक से उड़ा दो, मैंने फूंक मारी तो वह उड़ गए, मैं ख़्याल करता हूं कि उनसे मुराद मुस्लैमा साहबे यमामा और अनसी साहबे सुन्आ है।[1]

क़बीला तैय का वफ़्द

क़बीला बनू तैय का वफ़्द जिसका सरदार ज़ैद अलख़ैल था, नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "अरब के जिस शख़्स की

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़्द बनी हनीफ़ा

तअ़रीफ़ मेरे सामने हुई, वह देखने के वक़्त उससे कम ही निकला, एक ज़ैद अल ख़ैल इससे मुस्तस्ना है, फिर उसका नाम ज़ैद अलख़ैर रख दिया, यह सब लोग ज़रूरी गुफ़्तगू के बाद मुसलमान हो गए थे।(1)

क़बीला अशअ़रीया (जो अह्ले यमन थे) का वफ़्द हाज़िर हुआ, उनके आने पर नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया था:

"अह्ले यमन आए, जिनके दिल निहायत नर्म और ज़ईफ़ हैं, ईमान यमनीयों का है और हिक्मत यमनीयों की, मस्कनत बकरियों वालों में, फ़ख़्र और गुरूर ऊंट वालों में है, जो मश्रिक़ की तरफ़ रहते हैं।"(2)

जब यह लोग मदीना में दाख़िल हुए तो यह शेअ़र पढ़ रहे थे:

غداً نُلاقِی الْاَحِبَّة مُحمداً وحِزْبَه

"कल हम अपने दोस्तों, यअ़नी मुहम्मद सल्ल0 और उनके साथ वालों से मिलेंगे।"(3)

वफ़्दे अज़्द

यह वफ़्द सात शख़्सों का था, नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, तो नबी करीम सल्ल0 ने उनकी वज़्अ़ क़त्अ़ को पसंदीदगी की निगाह से देखा, पूछा तुम कौन हो? उन्होंने कहा हम मोमिन हैं, नबी करीम सल्ल0 ने

(1) इब्ने हिशाम 2-577
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़ुदूमुल अशअ़रीन व अहलुल यमन
(3) मुस्नद अहमद 3-105, 155 बिसनदिन सहीहिन

फ़रमाया हर एक क़ौल की हक़ीक़त होती है, बताओ कि तुम्हारे क़ौल और ईमान की हक़ीक़त क्या है? उन्होंने अ़र्ज़ किया हम पंद्रह ख़स्लतें रखते हैं, पांच वह हैं जिन पर एतिक़ाद रखने का ज़िक्र आप के क़ासिदों ने किया, और पांच वह हैं जिन पर अमल करने का हुक्म आपने फ़रमाया, पांच वह हैं जिन पर हम पहले से पाबंद हैं।

पांच बातें जिन पर हुज़ूर सल्ल0 के मुबल्लिग़ीन ने ईमान लाने का हुक्म दिया, यह हैं: ईमान ख़ुदा पर, फ़रिशतों पर, अल्लाह की किताबों पर, अल्लाह के रसूलों पर, मरने के बाद जी उठने पर।

पांच बातें अमल करने की हमको यह बताई गई हैं:

"لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कहना, पांच वक़्त की नमाज़ों का क़ाइम करना, ज़कात देना, रमज़ान के रोज़े रखना, बैतुल हराम का हज करना जिसे राह की इस्तिताअ़त हो।

पांच बातें जो पहले से मअ़लूम हैं, यह हैं:

आसूदगी के वक़्त शुक्र करना, मुसीबत के वक़्त सब्र करना, क़ज़ाए इलाही पर रज़ामंद होना, इम्तिहान के वक़्त साबित क़दम रहना, दुशमनों को भी गाली गलोज न करना।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया जिन्होंने इन बातों की तअ़लीम दी वह हकीम व आलिम थे और उनकी दानिशमंदी से मअ़लूम होता है गोया अंबिया थे, अच्छा पांच चीज़ें और बता देता हूं ताकि पूरी बीस ख़स्लतें हो जाएं:

(1) वह चीज़ें जमा न करो जिसे खाना न हो।

(2) वह मकान न बनाओ जिसमें बसना न हो।

(3) ऐसी बातों में मुक़ाबला न करो जिन्हें कल को छोड़ देना हो।

(4) खुदा का तक़्वा रखो जिसकी तरफ़ लौट कर जाना और जिसके हुज़ूर में पेश होना है।

(5) उन चीज़ों की रग़बत रखो जो आख़िरत में तुम्हारे काम आएंगी जहां तुम हमेशा रहोगे।

उन लोगों ने नबी करीम सल्ल0 की वसीयत पर पूरा पूरा अमल किया।[1]

अरब का जितना शुमाली हिस्सा सलतनते कुस्तुन्तुनिया के क़ब्ज़ा में था, उस सारे इलाक़ा का गवर्नर फ़रवह बिन अ़म्र था, उसका दारुल हुकूमत मआन था, फ़लस्तीन का मुत्तसिला इलाक़ा भी उसी की हुकूमत में था।

नबी करीम सल्ल0 ने उसे नामए मुबारक (दावते इस्लाम का) भेजा था, फ़रवह रज़ि0 ने इस्लाम क़बूल किया और आंहज़रत सल्ल0 की ख़िरदमत में एक क़ासिद रवाना किया और एक सफ़ेद क़ीमती ख़च्चर हदया में भेजा।

जब बादशाहे कुस्तुन्तुनिया को उनके मुसलमान हो जाने की इत्तिलाअ् मिली तो उन्हें हुकूमत से वापस बुला लिया, पहले इस्लाम से फिर जाने की तरग़ीब देता रहा, जब हज़रत फ़रवह रज़ि0 ने इंकार किया तो उन्हें क़ैद कर दिया, आख़िर यह राए हुई कि उन्हें फ़ांसी पर लटका दिया जाए, शहरे फ़लस्तीन में अफ़राअ् नामी तालाब पर उन्हें फांसी दे दी गई।

(1) ज़ादुल मआ़द 3-672, 673, अल इसाबा 3-151

जान देने से पेशतर यह शेअ्र पढ़ाः

بَلِّغ سَراةَ المسلمين بأننى سِلمٌ لربىّ أعظُمِى وَمَقَامِىُ[1]

वफ़्दे हम्दान

यह क़बीला यमन में आबाद था, उनमें इशाअते इस्लाम के लिये ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० को भेजा गया था, वह वहां देर तक रहे, इस्लाम न फैला, नबी करीम सल्ल० ने अली मुर्तज़ा रज़ि० को उस क़बीला में इशाअते इस्लाम के लिये मामूर फ़रमाया, उनके फ़ैज़ान से तमाम क़बीला एक दिन में मुसलमान हो गया।

सय्यदना अली का ख़त नबी करीम सल्ल० ने सुना तो सज्दए शुक्राना अदा किया और ज़बाने मुबारक से फ़रमाया "اَلسَّلَامُ عَلٰى هَمْدَانَ" (हम्दान वालों को सलमाती मिले)।[2] यह वफ़्द उन्ही लोगों का था जो हज़रत अली रज़ि० के हाथ पर ईमान ला चुके थे और दीदारे नबवी सल्ल० से मुशर्रफ़ होने आए थे।

तारिक़ बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैं मक्का में सूक़ुल मजाज़ में खड़ा था इतने में एक शख़्स आया जो पुकार पुकार कर कहता थाः

"يَا اَيُّهَا النَّاسُ قُوْلُوْا لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ تُفْلِحُوْا"

"लोगो! ला इलाहा इल्लल्लाह कहो फ़लाह पाओगे"

एक दूसरा शख़्स उसके पीछे पीछे आया जो कंकरियां उसे मारता था और कहता थाः

(1) ज़ादुल मआ़द 3-646, इब्ने हिशाम 2-592 (2) सुनन बैहक़ी 2-369, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअ्सु अली रज़ि० व ख़ालिद रज़ि० इलल यमन

"يَا اَيُّهَا النَّاسُ لَا تُصدِّقُوْه فَاِنَّهٗ كَذَّابٌ"

"लोगो! इसे सच्चा न समझो यह तो झूटा शख़्स है"

मैंने दरयाफ़्त किया यह कौन हैं?

लोगों ने कहा कि यह तो बनी हाशिम का एक फ़र्द है, जो अपने आपको रसूलुल्लाह समझता है और यह दूसरा इसका चचा अब्दुल उज़्ज़ा है (अबू लहब का नाम अब्दुल उज़्ज़ा था) तारिक़ कहते हैं कि इसके बाद बरसों गुज़र गए, नबी सल्ल0 मदीना जा रहे थे, उस वक़्त हमारी क़ौम के चंद लोग जिनमें मैं भी था, मदीना गए, ताकि वहां की खजूरें मोल लाएं, जब मदीना की आबादी के मुत्तसिल पहुंच गए तो हम इसलिये ठहर गए कि सफ़र के कपड़े उतार कर दूसरे कपड़े बदल कर शहर में दाख़िल होंगे।

इतने में एक शख़्स आया जिस पर दो पुरानी चादरें थीं, उसने सलाम के बाद पूछा कि किधर से आए, किधर जाओगे? हमने कहा रब्ज़ह से आए हैं और यहीं तक क़स्द है, पूछा मुद्दआ़ क्या है?

हमने कहा कि खजूरें ख़रीदनी हैं, हमारे पास एक सुर्ख़ ऊंट था जिस पर महार थी।

उसने कहा यह ऊंट बेचते हो? हमने कहा हां! इस क़दर खजूरों के बदले दे देंगे, उस शख़्स ने यह सुनकर क़ीमत घटाने की बाबत कुछ भी नहीं कहा और महारे शुतुर संभाल कर शहर को चला गया, जब शहर के अंदर जा पहुंचा तो अब आपस में लोग कहने लगे कि यह हमने क्या

किया ऊंट ऐसे शख़्स को दे दिया जिससे वाक़िफ़ तक नहीं और क़ीमत वसूल करने का कोई इंतिज़ाम ही न किया।

हमारे साथ एक हौदज नशीन (सरदारे क़ौम की) औरत भी थी, वह बोली कि मैंने उस शख़्स का चेहरा देखा था कि चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहा था, अगर ऐसा आदमी क़ीमत न दे तो मैं अदा कर दूंगी।

हम यही बातें कर रहे थे कि इतने में एक शख़्स आया, कहा मुझे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने भेजा है और (क़ीमत शुतुर की) खजूरें भेजी हैं (तुम्हारी ज़ियाफ़त की खजूरें अलग हैं) खाओ पियो और क़ीमत की खजूरों को नाप कर पूरा कर लो, जब हम खा पी कर सैर हुए तो शहर में दाख़िल हुए, देखा क वही शख़्स मस्जिद के मिंबर पर खड़े वअ़ज़ कर रहा है, हमने मुंदर्जा ज़ैल अलफ़ाज़ आपके सुने:

"تَصَدَّقُوْا فَإِنَّ الصَّدَقَةَ خَيْرٌ لَّكُمْ، اَلْيَدُ الْعُلْيَا خَيْرٌ مِّنَ الْيَدِ السُّفْلٰى أُمَّكَ وَأَبَاكَ وَأُخْتَكَ وَأَخَاكَ وَأَدْنَاكَ أَدْنَاكَ"

"लोगो! ख़ैरात दिया करो, ख़ैरात का दिया तुम्हारे लिये बेहतर है, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है, मां को, बाप को, बहन को, भाई, को, फिर क़रीबी को और दूसरे क़रीबी को दो।"[1]

वफ़्दे नजीब

क़बीला नजीब के तेरह शख़्स हाज़िर हुए थे, यह अपनी

(1) ज़ादुल मआ़द 3-654, 647, इमाम हाकिम ने मुस्तदरक में यह रिवायत नक़्ल की है, इमाम ज़हबी ने इसकी तस्हीह की है

क़ौम के माल व मवेशी की ज़कात लेकर आए थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि इसे वापस ले जाओ और अपने कबीले के फुक़रा पर तक़्सीम कर दो उन्होंने अ़र्ज़ की:

या रसूलुल्लाह सल्ल0 फुक़रा को जो देकर बच रहा है हम वही लेकर आए हैं, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! इनसे बेहतर कोई वफ़्द अब तक नहीं आया।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया "हिदायत खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के हाथ में है, खुदा जिसकी बहबूद चाहता है उसके सीना को ईमान के लिये खोल देता है"

उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्ल0 से चंद बातों का सवाल किया, आंहज़रत सल्ल0 ने उनको जवाबात लिखवा दिये थे।

यह लोग कुर्आन और सुनने हुदा के सीखने में बहुत ही राग़िब थे, इसलिये नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को उनकी तवाज़ोअ् के लिये ख़ास तौर पर मुअ़य्यन कर दिया था।

यह लोग वापसी की इजाज़त के लिये बुहत ही इज़्तिराब ज़ाहिर करते थे, सहाबा ने पूछा कि तुम यहां से जाने के लिये क्यों बेचैन हो? कहा दिल में यह जोश है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 के दीदार से जो अनवार हमने हासिल किये, नबी सल्ल0 की गुफ़्तार से जो फुयूज़ हमने पाए और जो बरकात और फ़वाइद हमको यहां आकर हासिल हुए,

उन सबकी इत्तिलाअ् अपनी क़ौम को जल्द पहुंचाएं।

आंहज़रत सल्ल0 ने उनको अतीयात से सरफ़राज़ किया और रुख़्सत फ़रमाया, पूछा! कोई शख़्स तुम में से बाक़ी भी रहा है? उन्होंने कहा हां! एक नौजवान लड़का है, जिसे अस्बाब के पास हमने छोड़ दिया था, फ़रमाया उसे भी भेज देना, वह हाज़िर हुआ तो उसने कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! हुज़ूर (सल्ल0) ने मेरी क़ौम के लोगों पर लुत्फ़ व रहमत की है, मुझे भी कुछ मरहमत फ़रमाइये।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः तुम क्या चाहते हो?

कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! मेरा मुद्दआ अपनी क़ौम के मुद्दआ से अलग है, अगर्चे मैं जानता हूं कि वह यहां इस्लाम की मुहब्बत में आए हैं और सदक़ात का माल भी लाए थे, आंहज़रत सल्ल0 ने फ़रमाया तुम क्या चाहते हो?

कहा! मैं अपने घर से सिर्फ़ इसलिये आया था कि हुज़ूर मेरे लिये दुआ फ़रमाएं कि खुदा मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम करे और मेरे दिल को ग़नी बना दे।

नबी करीम सल्ल0 ने उसके लिये यही दुआ फ़रमा दी, 10 हि0 को जब नबी करीम सल्ल0 ने हज किया, तो उस क़बीला के लोग फिर हुज़ूर सल्ल0 से मिले, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा "उस नौजवान की क्या ख़बर है? लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! उस जैसा शख़्स कभी देखने ही में नहीं आया और उस जैसा कानेअ़ कोई सुना ही नहीं गया, अगर दुन्या की दौलत उसके सामने तक़्सीम हो रही हो तो वह

नज़र उठाकर भी नहीं देखता।[1]

वफ़्दे बनी सअ़द हज़ीम

यह वफ़्द जिस वक़्त मस्जिदे नबवी में पहुंचा तो नबी करीम सल्ल0 एक जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा रहे थे।

उन्होंने आपस में तैय किया कि रसूलुल्लाह सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होने से पेशतर हमको कोई भी काम नहीं करना चाहिये, इसलिये एक तरफ़ अलग होकर बैठे रहे, जब आंहज़रत सल्ल0 उधर से फ़ारिग़ हुए उनको बुलाया, पूछा "क्या तुम मुसलमान हो"? उन्होंने कहा हां! फ़रमाया "तुम अपने भाई के लिये दुआ में क्यों शामिल न हुए"?

अ़र्ज़ किया हम समझते थे कि बैअ़ते रसूल सल्ल0 से पहले कोई काम भी करने के मजाज़ नहीं, फ़रमाया "जिस वक़्त तुमने इस्लाम क़बूल किया उसी वक़्त से तुम मुसलमान हो गए।"

इतने में वह मुसलमान भी आ पहुंचा जिसे यह लोग अपनी सवारी के पास बिठा आए थे, वफ़्द ने कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल0! यह हमसे छोटा है और इसी लिये हमारा ख़ादिम है, फ़रमाया "أُصْغَرُ الْقَوْمِ خَادِمُهُم" (छोटा अपने बुज़ुर्गों का ख़ादिम होता है) ख़ुदा उसे बरकत दे, इस दुआ की यह बरकत हुई कि वही क़ौम का इमाम और कुर्आन मजीद का क़ौम में सबसे ज़्यादा जानने वाला हो गया।

(1) ज़ादुल मआ़द 3-650, 651, इब्ने सअ़द 1-323

जब यह वफ़्द लौट कर वतन गया तो तमाम क़बीला में इस्लाम फैल गया।[1]

वफ़्दे बनी असद

यह दस शख़्स थे जिनमें वाबसा बिन मुअ़ब्बद और खुवैलद थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 अस्हाब के साथ अंदर मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, इनमें से एक ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0! हम शहादत देते हैं कि खुदा अकेला है, ला शरीक है और आप सल्ल0 उसके बंदे और रसूल हैं, देखिये या रसूलुल्लाह सल्ल0 हम अज़ खुद हाज़िर हो गए हैं और आपने तो हमारे पास कोई आदमी भी न भेजा था, इस पर आयत का नुजूल हुआः

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدَاكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ.

"यह लोग आप पर एहसान जताते हैं कि इस्लाम ले आए हैं, कह दीजिये कि अपने इस्लाम का मुझ पर एहसान न जताओ, बल्कि खुदा तुम पर इस बात का एहसान जताता है कि उसने तुमको इस्लाम की हिदायत की, अगर तुम इस दावा में सच्चे हो।" (हुज्रातः रुकूअ़ 2)

फिर उन लोगों ने सवाल किया कि जानवरों की बोलियों और शगूनों वग़ैरा से फ़ाल लेना कैसा है? रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इन सबसे उन्हें मना फ़रमाया,

(1) ज़ादुल मआ़द 3-652, इब्ने सअ़द 1-329

उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! एक बात रह गई है, इसकी बाबत क्या इर्शाद है, नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया वह क्या है? उन्होंने कहा ख़त खींचना? तो आप सल्ल0 ने फ़रमायां कि इसे एक नबी ने लोगों को सिखाया था जिस किसी को सिहत से वह इल्म मिल गया बेशक वह इल्म है।[1]

वफ़्दे बह्राअ्

यह लोग मदीना में आए, हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 के घर के सामने आकर ऊंट बिठाए, हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने घर वालों से कहा कि इनके लिये कुछ खाना तैयार करो और खुद उनके पास गए और ख़ुश आमदेद कहकर अपने घर ले आए, उनके सामने हैस रखा गया, हैस एक खाना है जो खजूर और सत्तू मिलाकर घी में तैयार किया जाता है, घी के साथ कभी चर्बी भी डाल दिया करते हैं।

उसी खाने में से कुछ नबी करीम सल्ल0 के लिये भी हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने भेजा, नबी करीम सल्ल0 ने कुछ खाकर वह बर्तन वापस फ़रमा दिया, अब हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 दोनों वक़्त ही प्याला उन मेहमानों के सामने रख देते वह मज़ा ले लेकर खाया करते, खूब खाया करते, मगर खाना कम न हुआ करता था, उन लोगों को यह देखकर हैरत हुई, आख़िर एक रोज़ अपने मेज़बान से पूछाः

(हज़रत) मिक़्दार (रज़ि0)! हमने तो सुना था कि मदीना वालों की खूराक सत्तू, जौ वग़ैरा हैं, तुम तो हर वक़्त वह

(1) ज़ादुल मआ़द 3-654, इब्ने सअ़द 1-292

खाना खिलाते हो जो हमारे यहां बहुत उम्दा समझा जाता है और जो हर रोज़ हमको भी मुयस्सर नहीं आ सकता और फिर ऐसा लज़ीज़ कि हमने कभी ऐसा खाया भी नहीं।

हज़रत मिक़्दाद रज़ि0 ने कहा साहिबो! यह सब कुछ आंहज़रत सल्ल0 की बरकत है, क्योंकि आंहज़रत सल्ल0 की अंगुश्तहाए मुबारक लग चुकी हैं।

यह सुनते ही सबने बइत्तिफ़ाक़ कहा और अपना ईमान ताज़ा किया कि "बेशक वह अल्लाह के रसूल सल्ल0 हैं, यह लोग मदीना में कुछ अर्सा ठहरे, कुर्आन और अहकाम सीखे और वापस चले गए।[1]

वफ़्दे हौलान

यह दस शख़्स थे, जो बमाहे शअ़बान 10 हि0 में ख़िदमते नबवी सल्ल0 में हाज़िर हुए थे, उन्होंने आकर अ़र्ज़ किया कि हम अपनी क़ौम के पस्मांदों की जानिब से वकील होकर आए है, ख़ुदा और रसूल पर हमारा ईमान है, हम हुज़ूर सल्ल0 की ख़िदमत में लम्बा सफ़र तैय करके आये हैं और इक़रार करते हैं कि ख़ुदा और रसूल का हम पर एहसान है, हम यहां महज़ ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए हैं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया "مَنْ زَارَنِیْ بِالْمَدِیْنَةِ كَانَ فِیْ جِوَارِیْ یَوْمَ الْقِیَامَةِ" (जिसने मदीना में आकर मेरी ज़ियारत की वह क़यामत के दिन मेरा हमसाया होगा) फिर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दरयाफ़्त फ़रमायाः अ़म्म अनस का

(1) ज़ादुल मआ़द 3-655, 656, इब्ने सअ़द 1-331

क्या हुआ? (यह एक बुत का नाम है जो उस क़ौम का मअ़बूद था) वफ़्द ने अ़र्ज़ किया, हज़ार शुक्र है कि अल्लाह ने हुज़ूर सल्ल0 की तअ़लीम को हमारे लिये उसका बदल बना दिया है, बअ़ज़ बअ़ज़ बूढ़े और बूढ़ी औरतें रह गई हैं जो उसकी पूजा किया जाती हैं।

अब इंशा अल्लाह हम उसे जाकर गिरा देंगे, हम मुद्दतों धोके और फ़ित्ना में रहे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया किसी दिन का वाक़िआ तो सुनाओ, वफ़्द ने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0! एक दफ़ा हमने सौ नर गाव जमा किये और सबके सब एक ही दिन अ़म्म अनस के लिये कुर्बान किये गए और दरिंदों के लिये छोड़ दिये गये, हालांकि हमको गोश्त और जानवरों की बहुत ज़रूरत थी, उन्होंने यह भी अ़र्ज़ किया कि चौपायों और ज़राअ़त में से अ़म्म अनस का हिस्सा बराबर निकाला जाता था, जब कोई ज़राअ़त करता तो उसका वसती हिस्सा अ़म्म अनस के लिये मुक़र्रर करता और एक किनारे का ख़ुदा के नाम मुक़र्रर कर देता, अगर खेती को हवा मार जाती तो ख़ुदा का हिस्सा तो अ़म्म अनस के नाम कर देते, मगर अ़म्म अनस का हिस्सा ख़ुदा के नाम पर न करते।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़राइज़े दीन सिखाए और ख़ुसूसियत से इन बातों की नसीहत कीः

(1) अहद पूरा करना, (2) अमानत को अदा करना, (3) हमसाया लोगों से अच्छा बरताव करना, (4) किसी एक

शख़्स पर भी जुल्म न करना, यह भी फ़रमाया कि जुल्म क़्यामत के दिन तारीकी होगा।[1]

वफ़्दे मरक़ारिब

यह दस शख़्स थे, जो क़ौम के वकील होकर 10 हि0 में आए थे, हज़रत बिलाल रज़ि0 उनकी मेहमानी के लिये मामूर थे, सुब्ह व शाम का खाना वही लाया करते थे, एक रोज़ जुह्र से अस्र तक पूरा वक़्त नबी करीम सल्ल0 ने उन्हीं को दिया।

उनमें से एक शख़्स को नबी करीम सल्ल0 ने देखना शुरू किया, फिर फ़रमाया कि मैंने तुमको पहले भी देखा है।

यह शख़्स बोला, खुदा की क़सम हां हुजूर (सल्ल0) ने मुझे देखा था और मुझसे बात भी की थी और मैंने बदतरीन कलाम से हुजूर (सल्ल0) को जवाब दिया और बहुत बुरी तरह हुजूर (सल्ल0) के कलाम को रद्द किया था, यह बाज़ारे उकाज़ का ज़िक्र है जहां हुजूर (सल्ल0) लोगों को समझाते फिरते थे।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "हां ठीक है" उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्ल0)! उस रोज़ मेरे दोस्तों में मुझसे बढ़कर कोई भी हुजूर (सल्ल0) की मुख़ालफ़त करने वाला और इस्लाम से दूर रहने वाला न था, वह सब तो अपने आबाई मज़हब ही पर मर गए, खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे आज तक बाक़ी रखा और हुजूर (सल्ल0) पर ईमान लाना मुझे नसीब हुआ।

(1) ज़ादुल मआद 3-662, इब्ने सअ़द 1-324

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः सबके दिल खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के हाथ में हैं, उस शख़्स ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल0 मेरी पहली हालत के लिये मुआफ़ी की दुआ फ़रमाइये।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः "इस्लाम उन सब बातों को मिटा देता है जो कुफ़्र में हुई हों।"(1)

वफ़्दे बनी अबस

यह वफ़्द इंतिक़ाल मुबारक से चार माह पेशतर आया था, यह इलाक़ा नजरान के बाशिंदे थे, यह लोग मुसलमान होकर आए थे, इन्होंने अ़र्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्ल0 हमने मुनादियाने इस्लाम से सुना है कि हुजूर सल्ल0 यह इर्शाद फ़रमाते हैं, "لَا اِسْلَامَ لِمَنْ لَا هِجْرَةَ لَهٗ" हमारे पास ज़र व माल भी है और मवेशी भी जिन पर हमारी गुज़रान है, पस अगर हिजरत के बग़ैर हमारा इस्लाम ही ठीक नहीं तो माल व मताअ़ क्या हमारे काम आएंगे और मवेशी हमें क्या फ़ाएदा देंगे? बेहतर है कि हम सब कुछ फ़रोख़्त करके सब ख़िदमते आली में हाज़िर हो जाएं।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया, "اِتَّقُوا اللّٰهَ حَيْثُ كُنْتُمْ فَلَنْ يَلِتْكُمْ مِنْ اعْمَالِكُمْ شَيْئًا" (तुम जहां आबाद हो वहीं रहकर ख़ुदा तरसी को अपना शेवा बनाए रखो तुम्हारे अअ़माल में ज़रा भी कमी नहीं आएगी।)(2)

(1) ज़ादुल मआ़द 3-663, 664, इब्ने सअ़द 1-299

(2) ज़ादुल मआ़द 3-670, इब्ने सअ़द 1-295

वफ़्दे ग़ामद

यह वफ़्द 10 हि0 में आया था, इसमें दस आदमी थे, यह मदीना से बाहर आकर उतरे, एक लड़के को बिठा कर नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए, नबी करीम सल्ल0 ने पूछा कि तुम अस्बाब के पास किसे छोड़ आए हो? लोगों ने कहा एक लड़के को, फ़रमाया तुम्हारे बाद वह सो गया, एक शख़्स आया और घड़ी चुरा कर ले गया, चोर के पीछे पीछे भागा, उसे जा पकड़ा, सब माल सहीह सालिम मिल गया, यह लोग आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत से जब वापस पहुंचे तो लड़के से मअ़लूम हुआ कि ठीक उसी तरह उसके साथ माजिरा हुआ था, यह लोग उसी वक़्त मुसलमान हो गए, नबी करीम सल्ल0 ने उबैय बिन कअ़ब रज़ि0 को मुक़र्रर फ़रमा दिया कि उन्हें क़ुर्आन याद कराएँ और शराएअ़े इस्लाम सिखाएं, जब वह वापस जाने लगे तो उन्हें शराएअ़े इस्लाम एक काग़ज़ पर लिखवा कर दे दिये गए।[1]

वफ़्दे बनी फ़ुज़ारा

जब रसूलुल्लाह सल्ल0 तबूक से वापस आए, तो बनी फ़ुज़ारा का एक वफ़्द जिसमें पंद्रह आदमी शामिल थे, ख़िदमते मुबारक में हाज़िर हुआ, उनको इस्लाम का इक़रार था, उनकी सवारी लाग़र कमज़ोर ऊंट थे, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने पूछा कि तुम्हारी बस्तियों का क्या हाल है?

उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! बस्तियों में

(1) ज़ादुल मआ़द 3-671, इब्ने सअ़द 1-345

क़हत है, मवाशी मर गए, बाग़ खुश्क हो गए, बाल बच्चे भूके मर रहे हैं, आप खुदा से दुआ करें कि हमारी फ़रयाद सुने, आप हमारी सिफ़ारिश खुदा से करें, खुदा हमारी सिफ़ारिश आप से करे।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला इन बातों से पाक है, ख़राबी हो तेरे लिये, मैं तो खुदा के पास शफ़ाअ़त करूंगा, लेकिन खुदा किसके पास शफ़ाअत करे? वह मअ़बूद है, उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं, वह सबसे बुज़ुर्ग तर है, आसमानों और ज़मीन पर उसी का हुक्म है।

आंहज़रत सल्ल0 ने उनकी क़ौम में बारिश के लिये दुआ फ़रमाई, जो अलफ़ाज़ महफ़ूज़ हैं, वह यह हैं:

"اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَائِمَكَ، وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ، وَأَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ، اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيْثًا مَرِيْئًا مَرِيْعًا طَبَقًا وَاسِعًا، عَاجِلًا غَيْرَ اٰجِلٍ، نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ، اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا رَحْمَةً لَا عَذَابٍ وَلَا هَدْمٍ وَلَا غَرْقٍ وَلَا مَحْقٍ، اَللّٰهُمَّ اسْقِنَا الْغَيْثَ وَانْصُرْنَا عَلَى الْاَعْدَآءِ."[1]

"ऐ खुदा अपने बंदों और जानवरों को सैराब कर, अपनी रहमत को फैला दे, और अपनी मुर्दा बस्तियों को ज़िंदा कर दे, इलाही हम फ़रयाद रस हैं, ऐसी बाशिर के जो राहत रसां, आराम बख़्श हो, जल्द आए, देर न लगाए, नफ़ा पहुंचाए, ज़रर

(1) ज़ादुल मआ़द 3-653, 654, इब्ने सअ़द 1-297 दुआ के अलफ़ाज़ सुनन अबी दाऊद, मुस्तदरक हाकिम और सुनन बैहक़ी में मौजूद है।

न करे, सैराब कर दे, इलाही हमको रहमत से सैराब कर दे, न कि अज़ाब व हद्म व ग़र्क़ व महक़ से भर दे, इलाही बारिशे बारां से हमें सैराब कर दे, और दुशमनों पर हमको नुस्रत अता कर।"

वफ़्दे सुलामान

यह सत्तरह शख़्स थे, आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम लाए थे, इन्ही में हबीब बिन अम्र था, इन्होंने सवाल किया था कि सब अअ्माल से अफ़ज़ल क्या चीज़ है? रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना" उन लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हमारे यहां बारिश नहीं हुई, दुआ फ़रमाइये, रसूलुल्लाह सल्ल0 ने ज़बान से फ़रमाया "اَللّٰهُمَّ اسْقِهِمُ الْغَيْثَ فِى دَارِهِمْ"

हबीब ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! इन मुबारक हाथों को उठाकर दुआ फ़रमाइये, नबी करीम सल्ल0 मुस्कुराए और हाथ उठाकर दुआ कर दी।

जब वफ़्द अपने वतन लौटकर गया तो मअ़लूम हुआ कि ठीक उसी रोज़ बारिश हुई थी, जिस दिन नबी करीम सल्ल0 ने दुआ फ़रमाई थी।[1]

वफ़्दे नजरान[2]

इन जुम्ला रिवायात पर जो वफ़्दे नजरान के उन्वान के तहत दवावीने अहादीस में पाई जाती हैं, ग़ौर करने से

(1) रहमतुल लिल आलमीन 1-183 बहवाला ज़ादुल मआ़द
(2) मुंदरजा ज़ैल पूरा वाकिआ ज़ादुल मआ़द, दलाइलुन्नुबूव्वा में मौजूद है।

मअ़लूम होता है कि ईसाइयाने नजरान के मुअ़तमद दो दफ़ा नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे, इसलिये उसी तरतीब से उनका ज़िक्र किया जाता है।

अबू अब्दुल्लाह हाकिम की रिवायत में है कि नबी करीम सल्ल0 ने अह्ले नजरान को दावते इस्लाम का ख़त तहरीर फ़रमाया, जब उस्कुफ़ ने उस ख़त को पढ़ा तो उसके बदन पर लर्ज़ा पड़ गया और वंह कांप उठा, उसने फ़ौरन शुरहबील बिन वदाआ़ को बुलाया, यह क़बीला हमदान का शख़्स था, कोई बड़ा काम बग़ैर उसकी राए के हाकिम या मुशीर या पादरी तैय नहीं करते थे।

उस्कुफ़ ने उसे ख़त दिया और उसने पढ़ लिया तो उस्कुफ़ बोला, अबू मरयम! फ़रमाइये! आपकी क्या राए है?

शुरहबील ने कहा "साहब यह तो आपको मअ़लूम ही है कि खुदा ने इब्राहीम (अलै0) से यह वादा कर रखा है कि इस्माईल (अलै0) की नस्ल में नुबूव्वत भी होगी, मुम्किन है यह वही शख़्स हों, लेकिन नुबूव्वत के मुतअ़ल्लिक़ क्या राए हो सकती है, कोई दुन्यवी बात होती तो मैं उस पर ग़ौर कर सकता था और अपनी राए अ़र्ज़ कर सकता था।"

उस्क़फ़ ने कहाः "अच्छा बैठ जाइये।"

उस्क़फ़ ने फिर एक दूसरे शख़्स को जिसका नाम अब्दुल्लाह बिन शुरहबील था और क़ौमे हुमैर से था, बुलाया, और नामए नबवी सल्ल0 दिखा कर उसकी राए दरयाफ़्त की उसने शुरहबील का सा जवाब दिया।

उस्कुफ़ ने फिर तीसरे शख़्स जब्बार बिन क़ैस को बुलाया, यह बनू हारिस बिन कअ़ब में से था, नामा दिखलाया और राए दरयाफ़्त की, उसने भी उन दानों का सा जवाब दिया।

जब उस्कुफ़ ने देखा कि इनमें से कोई भी जवाब नहीं देता तो उसने हुक्म दिया कि घंटे बजाए जाएं और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटकाए जाएं, उनका दस्तूर था कि कोई मुहिम्मे अज़ीम दरपेश होती तो लोगों के बुलाने का तरीक़ दिन के लिये यह था कि घंटे बजाते और टाट के पर्दे गिर्जे पर लटका देते, और रात के लिये यह था कि घंटे बजाते और पहाड़ी पर आग रौशन कर देते, इस गिर्जे के मुतअ़ल्लिक़ तिहत्तर गांव थे, जिनमें से एक लाख से ज़्यादा जंगजू मर्दों की आबादी थी, वादी के बालाई और नशेबी हिस्सा का तूल एक अस्प सवार के एक दिन की राह था, जब कुल इलाक़ा के यह लोग (सबके सब ईसाई थे) जमा हो गए, तो उस्कुफ़ ने वह नामए मुबारक सबको सुनाया और राए दरयाफ़्त की, मशवरा के बाद क़रारदाद यह हुई, कि शुरहबील और अब्दुल्लाह और जब्बार को नबी (सल्ल0) की ख़िदमत में रवाना किया जाए और वहां के सब हालात मअ़लूम करके मुफ़स्सल बताएं।

यह लोग मदीना पहुंचे और चंद रोज़ नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर रहे, इन्होंने नबी करीम सल्ल0 से हज़रत ईसा की शख़्सियत के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू की, इस

गुफ़्तगू पर इन आयात का नुजूल हुआः

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنَ، اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ، فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآئَنَا وَاَبْنَآئَكُمْ وَنِسَآئَنَا وَنِسَآئَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكَاذِبِيْنَ.

"ईसा (अलै0) की मिसाल खुदा के नज़दीक आदम (अलै0) की सी है, उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया (इंसान ज़िंदा) बन जा, वह ज़िंदा हो गया, सच्ची बात आपके परवरदिगार की जानिब से यही है, अब तुम इसी रस्सी को लम्बा खींचने वालों में न हो और जो कोई आपसे इस इल्म के बाद झगड़ा करे, उससे कह दीजिये कि हम अपनी औलाद को बुलाते हैं तुम अपनी औलाद को बुलाओ, हमारी औरतें और तुम्हारी औरतें, हम खुद भी और तुम भी जमा हों, फिर खुदा की तरफ़ मुतवज्जेह हों और खुदा की लअ़नत झूटे पर डालें।"

(आले इम्रानः रुकूअ़ 6)

इन आयात के नुजूल पर नबी करीम सल्ल0 ने मुबाहला के लिये हसन रज़ि0 व हुसैन को भी बुलाया और फ़ातिमा रज़ि0 (सय्यदा निसाउल आलमीन) भी बाप की पसे पुश्त आकर खड़ी हो गईं।

उन ईसाइयों ने अलाहिदा होकर बातचीत की, शुरहबील ने अपने साथियों से कहाः इनके मुतअ़ल्लिक़ कोई राए क़ाइम करना आसान नहीं है, देखो! तमाम वादी के लोग इकट्ठे हुए तब उन्होंने हमको भेजा था।

मैं समझता हूं कि यह बादशाह हैं, तब भी उनसे मुबाहला करना ठीक न होगा, क्योंकि तमाम अरब में से हम ही उनकी निगाह में खटकते रहेंगे और अगर यह नबीये मुर्सल हैं तब तो इनकी लअ़नत के बाद हमारा पर्काह भी ज़मीन पर बाक़ी न मिलेगा, इसलिये मेरे नज़दीक बेहतर यह है कि हम इनकी मातहती क़बूल करें और रक़मे जिज़्या का फ़ैसला भी इनकी राए पर छोड़ दें, क्योंकि जहां तक मैंने समझा है, यह सख़्त मिज़ाज नहीं हैं। दोनों साथियों ने इत्तिफ़ाक़ किया और उन्होंने जाकर अ़र्ज़ कर दिया कि मुबाहला से बेहतर हमारे लिये यह है कि जो कुछ हुज़ूर (सल्ल0) के ख़्याल में कल सुब्ह तक हमारे लिये बेहतर मअ़लूम हो वह हम पर मुक़र्रर कर दिया जाए।

अगले रोज़ आंहज़रत सल्ल0 ने उन पर जिज़्या मुक़र्रर कर दिया और एक मुआहदा जिसे मुग़ीरा सहाबी रज़ि0 ने लिखा था और अबू सुफ़यान बिन हर्ब, ग़ैलान बिन अ़म्र, मालिक बिन औफ़, अक़रअ़ बिन हाबिस सहाबा की शहादत उस पर सब्त थीं, उन्हें मरहमत फ़रमाया, मुआहदा में आंहज़रत सल्ल0 ने ईसाइयों को फ़य्याज़ी से मुराआत व हुक़ूक़ मरहमत फ़रमाए।

फ़रमान हासिल करके यह लोग नजरान को वापस चले गए, बिशप (उस्कुफ़) और दीगर सरबर आवर्दा लोगों ने एक मंज़िल आगे बढ़कर उनसे मुलाक़ात की, वफ़्द ने यह फ़रमान उस्कुफ़ के सामने पेश कर दिया, वह चलते ही चलते इस फ़रमान को पढ़ने लगा, उसका चचेरा भाई बिश्र बिन मुआविया रज़ि0 जिसकी कुन्नियत अबू अल्क़मा थी, उसके बराबर था "वह भी इस तहरीर के मअ्ना की तरफ़ इस क़दर मुतवज्जेह हुआ कि बेख़्याल हो गया, और ऊंटनी ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया, उसने गिरते ही कहा, "ख़राबी उस शख़्स की जिसने हमको इस क़दर तकलीफ़ में डाला है।"

बिश्र ने यह इशारा नबी करीम सल्ल0 की तरफ़ किया था।

उस्कुफ़ बोलाः देख तू क्या कहता है, बखुदा वह तो नबीये मुर्सल हैं।

बिश्र ने जवाब दिया बखुदा अब मैं भी नाक़ा का पालान उसी के पास जाकर उतारूंगा, यह कह उसने अपना रुख़ बदल दिया और मदीना को चल पड़ा।

उस्कुफ़ ने उसके पीछे पीछे नाक़ा लगाया, चिल्ला चिल्ला कर कहता था कि मेरी बात तो सुनो, मेरा मतलब तो समझो, मैंने यह फ़िक़्रा इसलिये कहा था कि इन क़बाइल में मुश्तहर हो जाए, ताकि कोई यह न कहे कि हमने सनद हासिल करने में कोई हिमाक़त की है, या

फ़य्याज़ी क़बूल कर ली है, हालांकि दीगर क़बाइल ने अब तक उनकी फ़य्याज़ी को क़बूल नहीं किया है और हमारी ताक़त और शौकत औरों से बढ़ कर है।

बिश्र बोले नहीं नहीं, बखुदा नहीं, अब मैं नहीं रुकने का, तेरे मग़्ज़ से ऐसी ग़लत बात निकल ही नहीं सकती थी, यह कहकर वह मदीना चला आया।

यह बिश्र तो ख़िदमते नबवी सल्ल0 में पहुंच कर वहीं हुजूर में रहे और बिलआख़िर दर्जए शहादत पर फ़ाइज़ हुए, अब वफ़्द का बक़िया हाल यह हुआ कि जब यह लोग नज्रान पहुंच गए तो नजरान के गिर्जा में रहने वाले एक मुतिक (राहिब) ने भी किसी से यह तमाम दास्तान सुन ली, वह गिर्जा के बुर्ज के बालाई हिस्सा पर (सालहा साल से) रिहा करता था, चीख़ना शुरू कर दिया कि मुझे उतार दो वर्ना मैं ऊपर से कूद पड़ूंगा, ख़्वाह मेरी जान भी जाती रहे, यह राहिब भी चंद तहाइफ़ लेकर नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में रवाना हो गया, एक प्याला, एक असा, एक चादर उसने बतौरे तोहफ़ा पेश की थी, वह चादर खुलफ़ाए अब्बासिया के अहद तक बराबर महफ़ूज़ रही थी, राहिब ने कुछ अर्सा तक मदीना में ठहर कर इस्लामी तअ़लीम से वाक़िफ़ीयत हासिल की और फिर आंहज़रत सल्ल0 से इजाज़त लेकर और वापस आने का वादा करके नज्रान चला गया।

(2) इस वफ़्द में कुछ अर्सा के बाद उस्कुफ़ अबुल

हारिस (जो गिर्जा का इमाम था, कुस्तुन्तुनिया के रूमी बादशाह जिसका निहायत अदब और एहतिराम किया करते थे और आम लोग अक्सर करामात वग़ैरा जिसकी ज़ात से मंसूब किया करते थे और जो अपने मज़हब का मुज्तहिद शुमार होता था) नबी करीम सल्ल0 की ख़िदमत में पहुंचा उसके साथ ऐहम नामी इलाक़ा का जज और हाकिम भी था उसे सय्यद के लक़ब से मुलक़्क़ब करते थे, और अब्दुल मसीहु अल मुलक़्क़ब आक़िब भी था, जो सारे इलाक़ा का गवर्नर और अमीर भी था, बाक़ी 24/ मशहूर सरदार थे, कुल क़ाफ़िला 60/ सवरों का था, यह अस्र के वक़्त मस्जिदे नबवी सल्ल0 में पहुंचे थे, वह उनकी नमाज़ का वक़्त था (ग़ालिबन इतवार का दिन हागा) नबी करीम सल्ल0 ने उनको अपनी मस्जिद में नमाज़ पढ़ लेने की इजाज़त फ़रमा दी थी और उन्होंने मस्जिद से मश्रिक़ की जानिब रुख़ करके नमाज़ अदा की थी, बअ़ज़ मुसलमानों ने उन्हें मस्जिद में ईसाई नमाज़ पढ़ने से रोकना चाहा था, मगर आंहज़रत सल्ल0 ने मुसलमानों को मना फ़रमा दिया था।

यहूदी भी उन्हें देखने आते थे और कभी कभी किसी मस्अला पर गुफ़्तगू भी हो जाया करती थी। एक दफ़ा नबी करीम सल्ल0 के सामने यहूदियों ने बयान किया कि हज़रत इब्राहीम (अलै0) यहूदी थे और इन ईसाइयों ने कहा वह ईसाई थे, इस बहस पर कुर्आन मजीद की इन आयात का नुजूल हुआः

قُلْ يَا اَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّوْنَ فِيْ اِبْرَاهِيْمَ وَمَا اُنْزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالْاِنْجِيْلُ اِلَّا مِنْ بَعْدِهٖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ هٰاَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ، وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ، مَا كَانَ اِبْرَاهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرَاهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ.

"उनसे कहिये कि ऐ किताब वालो! इब्राहीम (अलै0) के बारे में क्यों झगड़ा करते हो, तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं, क्या तुम नहीं समझते? जिन बातों में तुम्हारे पास कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ते ही थे मगर जिसके बारे में कुछ इल्म नहीं उसमें झगड़ा क्यों करते हो? और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते, इब्राहीम (अलै0) यहूदी थे, न ईसाई थे, वह तो पक्के मुवह्हिद थे और मुसलमान थे और मुश्रिक भी न थे, सारी ख़िल्क़त में इब्राहीम से क़रीब तर वह हैं जिन्होंने उनका इत्तिबाअ् किया और मुहम्मद (सल्ल0) और उन पर ईमान रखने वाले लोग, हां खुदा मोमिनीन का दोस्तदार है।

(आले इम्रानः रुकूअ़ 7)

एक दफ़ा यहूदियों ने (मुसलमानों और ईसाइयों दोनों पर एतिराज़ करने की ग़र्ज़ से) कहाः मुहम्मद (सल्ल0)

साहब! क्या आप यह चाहते हैं कि हम आपकी भी इबादत करने लगें जैसा कि ईसाई ईसा की इबादत किया करते हैं?

नज्रान का एक ईसाई बोलाः

हां मुहम्मद (सल्ल0) साहब! बता दीजिये कि आप का यही इरादा है और इसी अक़ीदा की दावत आप (सल्ल0) देते हैं? नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः अल्लाह की पनाह! मैं अल्लाह के सिवा और किसी की इबादत करूं या किसी दूसरे को ग़ैरुल्लाह की इबादत का हुक्म दूं, खुदा ने मुझे इस काम के लिये नहीं भेजा और मुझे ऐसा हुक्म नहीं दिया,

इस वाक़िआ पर कुर्आन मजीद की इन आयात का नुजूल हुआः

مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ، ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ، وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتَابَ، وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ، وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا، اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ.

"जिस बशर को खुदा किताब और हिक्मत और नुबूव्वत इनायत करे, यह उसके लिये शायां नहीं कि वह फिर लोगों से कहने लगे कि खुदा के सिवा मेरे बंदे बन जाओ, वह तो यही कहा करता है कि किताबे इलाही हो सीख लो और शरीअ़त का दर्स पाकर तुम अल्लाह वाले बन जाओ, यह नबी तो

नहीं कहते कि फ़रिशतों को या नबियों को भी रब बना लो, भला वह कुफ़्र के लिये कह सकते हैं तुम लोगों को जो इस्लाम ला चुके।" (आले इम्रान)

मुहम्मद बिन सुहैल रज़ि0 की रिवायत है कि आले इम्रान की शुरू से 80/ आयात तक नुजूल भी इस वफ़्द की मौजूदगी में हुआ था, जब यह वापस जाने लगे तो आंहज़रत सल्ल0 से फिर एक सनद उन्होंने हासिल की जिसमें गिरजाओं और पादरियों की बाबत ज़्यादा सराहत थी।[1]

उन्होंने यह भी दरख़्वास्त की कि एक अमानतदार शख़्स को हमारे साथ भेज दिया जाए जिसे जिज़्या अदा कर दिया करें, नबी करीम सल्ल0 ने हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह को उनके साथ भेज दिया और फ़रमाया कि यह शख़्स मेरी उम्मत का अमीन है।[2]

हज़रत अबू उबैदा रज़ि0 के फ़ैज़ाने सोहबत से इलाक़ा में इस्लाम फैल गया।

वफ़्दे नरअ

यह वफ़्द निस्फ़ मुहर्रम 11 हि0 में ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ था, इसके बाद कोई वफ़्द हाज़िर नहीं हुआ,

(1) ज़ादुल मआद 3-629 ता 637, दलाइलुन्नुबूव्वा 5-328 ता 393, इब्ने हिशाम 1-573 ता 584, इब्ने सअ़द 1-357, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब क़िस्सा नज्रान में इस वाक़िआ के बअ़ज़ अज्ज़ा मौजूद हैं।

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अबू उबैदा बिन अल जर्राह रज़ि0, सहीह मुस्लिम, फ़ज़ाइलुस्सहाबा रज़ि0 बाब फ़ज़ाइले अबी उबैदा बिन अल जर्राह।

यह दो सौ अशख़ास थे और हज़रत मआ़ज़ बिन जबल रज़ि0 के हाथ पर मुसलमाना होकर आए थे, उनको दारुज़्ज़ियाफ़ा (मेहमान ख़ाना) में उतारा गया था।

एक शख़्स उनमें ज़ुरारा बिन अ़म्र था, उसने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0! मैंने रास्ता में ख़्वाब देखे जो अजीब थे।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया "बयान करो"

कहा मैंने देखा कि एक बकरी ने बच्चा दिया है, जो सफ़ेद और सियाह रंग का अबलक़ है।

नबी करीम सल्ल0 ने पूछाः क्या तुम्हारी औरत के बच्चा होने वाला था? उसने कहा हां!

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया कि उसके फ़रज़ंद पैदा हुआ है, जो तेरा बेटा है, ज़ुरारा ने कहा या रसूलुल्लाह! अबलक़ होने के क्या मआ़ना हैं?

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया, क़रीब आओ, फिर आहिस्ता से पूछा क्या तेरे जिस्म पर बर्स के दाग़ हैं जिसे लोगों से छिपाते रहे हो?

ज़ुरारा ने कहा क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको रसूल बनाकर भेजा है कि आज तक मेरे इस राज़ की किसी को इत्तिला न थी।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया बच्चा पर यह उसी का असर है।

ज़ुरारा ने दूसरा ख़्वाब सुनाया कि मैंने नोअ़मान बिन

मुंज़िर को देखा कि गोशवारे बाजू बंद, ख़लख़ाल पहने हुए है।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया इसकी तावील मुल्के अरब है, जो अब आसाइश व आराइश हासिल कर रहा है।

जुरारा ने अ़र्ज़ किया मैंने देखा कि एक बुढ़िया है, जिसके कुछ बाल सफ़ेद, कुछ सियाह हैं और ज़मीन से बाहर निकली है।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमायाः यह दुन्या है जिस क़दर बाक़ी रह गई है।

जुरारा ने अ़र्ज़ किया मैंने देखा कि एक आग ज़मीन से नुमूदार हुई, मेरे और मेरे बेटे के दर्मियान आ गई, और वह आग कह रही है, झुलसो झुलसो बीना हो कि नाबीना हो, लोगो! अपनी ग़िज़ा, अपना कुंबा, अपना माल मुझे खाने के लिये दो।

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया, यह एक फ़साद है जो आख़िर ज़माने में ज़ाहिर होगा, जुरारा ने अ़र्ज़ किया कि यह कैसा फ़ित्ना होगा?

नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया लोग अपने इमाम को क़त्ल कर देंगे, आपस में फूट पड़ जाएगी, एक दूसरे से ऐसे गुत्थ जाएंगे जैसे हाथों की उंगलियां पंजा डालने में गुत्थ जाती हैं, बदकार उन दिनों अपने आपको नेकूकार समझेगा, मोमिन का खून पानी से बढ़कर खुशगवार समझा जाएगा, अगर तेरा बेटा मर गया, तब तू इस फ़ित्ना को देख लेगा,

तू मर गया तो तेरा बेटा देख लेगा।

जुरारा ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 दुआ कीजिये कि मैं इस फ़ित्ना को न देखूं,

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दुआ फ़रमाई इलाही! यह इस फ़ित्ना को न पाए।

जुरारा का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा बच रहा, उसने सय्यदना उस्माने ग़नी की बैअ़त को तोड़ दिया था।[1]

हज्जतुल वदाअ़

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ، وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا، فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ، اِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا.

"जब ख़ुदा की मदद आ गई और मक्का फ़त्ह हो चुका और आपने देख लिया कि लोग ख़ुदा के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं तो ख़ुदा की तस्बीह पढ़िये और इस्तिग़फ़ार कीजिये, ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला है।" (सूरए नस्र, प0 30)

बज़ाहिर यह ख़्याल होता है कि नुस्रत और फ़त्ह के मुक़ाबला में शुक्र की हिदायत होनी चाहिये थी, तस्बीह व इस्तिग़फ़ार को फ़त्ह से क्या मुनासबत है? इसी बिना पर एक सोहबत में हज़रत उमर रज़ि0 ने सहाबा से मअ़ना पूछे, लोगों ने मुख़्तलिफ़ मअ़ना बताए, हज़रत उमर रज़ि0 ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की तरफ़ देखा, वह कम्सिन

(1) ज़ादुल मआ़द 3-686, 687, इब्ने सअ़द 1-346

थे और जवाब देते झिझकते थे, हज़रत उमर रज़ि0 ने उनकी ढारस बंधाई तो उन्होंने कहा "यह आयत आंहज़रत सल्ल0 के कुर्बे वफ़ात का एलान है कि इस्तिग़फ़ार मौत के लिये मख़्सूस है।"(1)

इस सूरत के नाज़िल होने के बाद आप सल्ल0 को मअ़लूम हो गया था कि रहलत का वक़्त क़रीब आ गया है, इसलिये अब ज़रूरत थी कि तमाम दुन्या के सामने शरीअ़त और अख़्लाक़ के तमाम उसूले असासी का मज्मए आ़म में एलान कर दिया जाए, आंहज़रत सल्ल0 ने हिज्रत के ज़माने से अब तक फ़रीज़ए हज अदा नहीं फ़रमाया था।(2)

एक मुद्दत तक तो कुरैश सद्दे राह रहे, सुलह हुदैबिया के बाद मौक़ा मिला, लेकिन मसालेह इसके मुक़्तज़ी थे कि यह फ़र्ज़ सबसे आख़िर में अदा किया जाए,

बहरहाल जुलक़अ़दा में एलान हुआ कि आंहज़रत सल्ल0 हज के इरादा से मक्का तशरीफ़ ले जा रहे हैं, यह ख़बर दफ़अ़तन फैल गई और शर्फ़े हमरिकाबी के लिये तमाम अरब उमंड आया।(3) (सनीचर के दिन) जुलक़अ़दा की 26/ तारीख़ को आप सल्ल0 ने ग़ुस्ल फ़रमाया और चादर और तहमद बांधी, नमाज़े जुहर के बाद मदीना से बाहर निकले।(4) तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात को साथ ले चलने का हुक्म दिया।(5) मदीना से छः मील के फ़ासिला पर जुल-

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब तफ़सीर "इज़ा जाअ़ नस्रुल्लाहि" (2) सहीहुल बुख़ारी, बाब हज्जतुल वदाअ़ (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0 (4) ज़ादुल मआ़द 2-102 (5) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

हुलैफ़ा एक मक़ाम है, जो मदीना की मीक़ात है, यहां पहुंच कर शबे इक़ामत फ़रमाई,[1] दूसरे दिन दोबारा गुस्ल फ़रमाया, इसके बाद आप सल्ल0 ने दो रक्अ़त नमाज़ अदा की फिर कुस्वा पर सवार होकर एहराम बांधा और बुलंद आवाज़ से यह अलफ़ाज़ कहेः-

"لَبَّیْکَ اللّٰھمّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَا شَرِیکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ."

"ऐ खुदा हम तेरे सामने हाज़िर हैं, ऐ खुदा तेरा कोई शरीक नहीं, हम हाज़िर हैं, तअ़रीफ़ और नेअ़मत सब तेरी है और सलतनत में तेरा कोई शरीक नहीं"।

हज़रत जाबिर रज़ि0 जो इस हदीस के रावी हैं, उनका बयान है कि मैंने नज़र उठा कर देखा तो आगे, पीछे, दाएं, बाएं, जहां तक नज़र काम करती, आदमियों का जंगल नज़र आता था, आंहज़रत सल्ल0 जब "लब्बैक" फ़रमाते थे तो हर तरफ़ से इसी सदाए ग़लग़ला अंगेज़ की आवाज़े बाज़गश्त आती थी और तमाम दश्त व जबल गूंज उठते थे।[2]

फ़त्हें मक्का में आपने जिन मनाज़िल में नमाज़ अदा की थी, वहां बरकत के ख़्याल से लोगों ने मस्जिदें बना ली थीं, आंहज़रत सल्ल0 उन मसाजिद में नमाज़ अदा करते जाते थे, मक़ामे सरफ़ पहुंच कर गुस्ल फ़रमाया, दूसरे दिन (इतवार के रोज़ जुल हिज्जा की चार तारीख़ को सुब्ह के वक़्त)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब मिन बात बज़ियुल हलीफ़ा
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी व बाबुत्तलबिया

मक्का मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए, मदीना से मक्का तक यह सफ़र नौ दिन में तैय हुआ,(1) ख़ानदाने हाशिम के लड़कों ने आमद की ख़बर सुनी तो ख़ुशी से बाहर निकल और, आपने फर्ते मुहब्बत से ऊंट पर किसी को आगे और किसी को पीछे बिठा लिया।(2) कअ़बा नज़र पड़ा तो फ़रमाया कि "ऐ ख़ुदा इस घर को और ज़्यादा इ़ज़्ज़त और शर्फ़ दे"(3) फिर कअ़बा का तवाफ़ किया, तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर मक़ामे इब्राहीम में दोगाना अदा किया और यह आयत पढ़ी:

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى.

"और मक़ामे इब्राहीम को सज्दा गाह बनाओ"

सफ़ा पर पहुंचने तो यह आयत पढ़ी:

اِنَّ الصَّفَاوَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ

"सफ़्फ़ा और मरवह ख़ुदा की निशानियां हैं।"

(यहां से) कअ़बा नज़र आया, तो यह अलफ़ाज़ फ़रमाए:

"لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَـهٗ، لَـهُ الْمُلْکُ وَلَـه الْـحَـمْدُ يُحْيِ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَئْيٍ قَدِيْر، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْـدَه اَنْـجَـزَوَعْـدَه، وَنَـصَرَ عَبْدَه وَهَزَمَ الْاَحْزَاب وَحْدَهٗ."(4)

"अल्लाह के सिवा कोई ख़ुदा नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, उसके लिये सलतनत और मुल्क और

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0 2-252 (2) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इस्तिक़बाले हज (3) सुनन बैहक़ी 5-73 (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअ़

हम्द है, वह मारता और जिलाता है और वह तमाम चीज़ों पर क़ादिर है, कोई खुदा नहीं मगर वह अकेला खुदा, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और अकेले तमाम क़बाइल को शिकस्त दी।"

सफ़ा से उतर कर मरवह तशरीफ़ लाए, यहां भी दुआ व तहलील की, अह्ले अरब अय्यामे हज में उम्रा नाजाइज़ समझते थे, सफ़ा व मरवह के तवाफ़ व सई से फ़ारिग़ होकर आपने लोगों को जिनके साथ कुर्बानी के जानवर नहीं थे, उम्रा तमाम करके एहराम उतार देने का हुक्म दिया,[1] बअ़ज़ सहाबा रज़ि० ने गुज़श्ता रुसूमे मालूफ़ा की बिना पर इस हुक्म की बजाआवरी में मअ़ज़रत की, आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया "अगर मेरे साथ कुर्बानी के ऊंट न होते तो मैं भी ऐसा ही करता।[2] हज़रत अली रज़ि० हज्जतुल वदाअ़ से कुछ पहले यमन भेजे गए थे, उसी वक़्त वह यमनी हाजियों का क़ाफ़िला लेकर मक्का में वारिद हुए, चूंकि उनके साथ कुर्बानी के जानवर थे इसलिये उन्होंने एहराम नहीं उतारा, जुमेरात के रोज़ आठवीं तारीख़ को आपने तमाम मुसलमानों के साथ मिना में क़्याम फ़रमाया, दूसरे दिन नवीं ज़िल हिज्जा को जुमुआ़ के रोज़ सुब्ह की नमाज़ पढ़ कर मिना से रवाना हुए।[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुल वदाअ़ व बाब बयान वुजूहुल एहराम। (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनासिक, बाब तक़ज़ी अल हाइज़ अल मनासिक कुल्लहा (3) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

कुरैश का मअ़मूल था कि जब मक्का से हज के लिये निकलते थे, तो अरफ़ात के बजाए मुज़दल्फ़ा में मक़ाम करते थे, जो हरम के हुदूद में था, उनका ख़्याल था कि कुरैश ने अगर हरम के सिवा और मक़ाम में मनासिके हज अदा किये तो उनकी शाने यक्ताई में फ़र्क़ आ जाएगा, लेकिन इस्लाम को जो मुसावाते आम क़ाइम करनी थी, उसके लिहाज़ से यह तख़्सीस रवा नहीं रखी जा सकती थी, इसलिये खुदा ने हुक्म दिया:

ثُمَّ اَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ اَفَاضَ النَّاسُ. (1)

आप भी आम मुसलमानों के साथ अरफ़ात में आए, और यह एलान करा दिया:

"قِفُوا عَلىٰ مَشَاعِرِكُمْ فَاِنَّكُمْ علىٰ اِرثٍ مِنْ اِرْثِ اَبِيكُمْ اِبْرَاهِيمَ." (2)

"अपने मुक़द्दस मक़ामात में ठहरे रहो, कि तुम अपने बाप इब्राहीम की वरासत पर हो।"

यअ़नी अरफ़ा में हाजियों का क़्याम, हज़रत इब्राहीम अलै0 की यादगार है और उन्हीं ने इस मक़ाम को इस ग़र्ज़े ख़ास के लिये मुतअ़य्यन किया है, अरफ़ात में एक मक़ाम नम्रा है, वहां आप सल्ल0 ने (एक) कम्बल के ख़ेमा में क़्याम फ़रमाया, दोपहर ढल गइ तो नाक़ा पर (जिसका नाम क़ुसवा था) सवार होकर मैदान में आए और नाक़ा के ऊपर

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल वुक़ूफ़ बिअ़रफ़ा

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल हज, बाब मा जाअ़ फ़िल वुक़ूफ़ बिअरफ़ात, अबू दाऊद, किताबुल मनासिक, बाब मौजूउल वुक़ूफ़ बिअरफ़ा

ही से खुत्बा पढ़ा।[1]

आज पहला दिन था कि इस्लाम अपने जाह व जलाल के साथ नुमूदार हुआ और जाहिलीयत के तमाम बेहूदा मरासिम को मिटा दिया, इसलिये आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

"أَلا كُلُّ شَيْءٍ مِنْ أَمْرِ الْجَاهِلِيَّةِ تَحْتَ قَدَمَيَّ مَوْضُوْعٌ."[2]

"हां जाहिलीयत के तमाम दस्तूर मेरे दोनों पांव के नीचे हैं।"

तक्मीले इंसानी की मंज़िल में सबसे बड़ा संगे राह इम्तियाज़े मरातिब था, जो दुन्या की क़ौमों ने, तमाम मज़ाहिब ने, तमाम मुमालिक ने, मुख़्तलिफ़ सूरतों में क़ाइम कर रखा था, सलातीन सायए यज़्दानी थे, जिनके आगे किसी को चूं व चरा की मजाल न थी, अइम्मए मज़ाहिब के साथ कोई शख़्स मसाइले मज़हबी में गुफ़्तगू का मजाज़ न था, शुरफ़ा रज़ीलों से एक बालातर मख़्लूक़ थी, गुलाम आक़ा के हमसर नहीं हो सकते थे, आज यह तमाम तफ़र्क़े, यह तमाम इम्तियाज़ात, यह तमाम हदबंदियां दफ़अ़तन टूट गईं।

"لَيْسَ لِلْعَرَبِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَجَمِيِّ وَلَا لِلْعَجَمِيِّ فَضْلٌ عَلَى الْعَرَبِيِّ، كُلُّكُمْ أَبْنَاءُ اٰدَمَ وَاٰدَمُ مِنَ التُّرَابِ"[3]

"अ़रबी को अ़जमी पर और अ़जमी को अ़रबी पर कोई फ़ज़ीलत, नहीं तुम सब आदम (अलै0) की औलाद हो और आदम अलै0 ख़ाक से बने थे।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0 (2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0 (3) अलइक़दुल फरीद 2-149

अरब में किसी ख़ानदान का कोई शख़्स किसी के हाथ क़त्ल होता तो उसका इंतिक़ाम लेना ख़ानदानी फ़र्ज़ हो जाता था, यहां तक कि सैकड़ों बरस गुज़र जाने पर भी यह फ़र्ज़ बाक़ी रहता था और इसी बिना पर लड़ाइयों का ग़ैर मुन्क़तेअ् सिलसिला क़ाइम हो जाता था और अरब की ज़मीन हमेशा ख़ून से रंगीन रहती थी, आज यह सब से क़दीम रस्म, अरब का सबसे मुक़द्दम फ़ख़्र, ख़त्म किया जाता है, इसके लिये नुबूव्वत का मुनादी सबसे पहले अपना नमूना पेश करता है:

"وَدِمَاءُ الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوْعَةٌ وَاِنَّ أَوَّلَ دَمٍ أَضَعُ مِنْ دِمَائِنَا دَمُ ابْنِ رَبِيْعَةَبْنِ الْحَارِثِ."[1]

"जाहिलीयत के तमाम ख़ून (यअ़नी इंतिक़ामे ख़ून) बातिल कर दिये गए और सबसे पहले मैं (अपने ख़ानदान का ख़ून) रबीआ़ बिन हारिस के बेटे का ख़ून बातिल कर देता हूं।"

तमाम अरब में सूदी कारोगार का एक जाल फैला हुआ था, जिससे ग़ुरबा का रेशा रेशा जक़ड़ा हुआ था और हमेशा के लिये अपने क़र्ज़ख़्वाहों के ग़ुलाम बन गए थे, आज वह दिन है कि इस जाल का तार तार अलग होता है इस फ़र्ज़ की तक्मील के लिये मुअल्लिमे हक़ सबसे पहले अपने ख़ानदान को पेश करता है:

"وَرِبَا الْجَاهِلِيَّةِ مَوْضُوعٌ وَأَوَّلُ رِباً أَضَعُ رِبَا عَبَّاسِ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ."[2]

(1) सहीहु मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0
(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0

"जाहिलीयत के तमाम सूद भी बातिल कर दिये गए और सबसे पहले अपने ख़ानदान का सूद, अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद बातिल करता हूं।"

आज तक औरतें एक जाइदाद मन्कूला थीं जो क़िमार बाज़ियों में दांव पर चढ़ा दी जा सकती थीं, आज पहला दिन है कि इस गिरोहे मज़लूम को, इस सिन्फ़े लतीफ़ को, इस जौहरे नाज़ुक को, क़द्र दानी का ताज पहनाया जाता है, इर्शाद होता है:

"فَاتَّقُوا اللّٰهَ فِی النِّسَاءِ"۔[1]

"औरतों के मुआमला में खुदा से डरो।"

अरब में जान व माल की कुछ क़ीमत न थी जो शख़्स जिसको चाहता था क़त्ल कर देता था और जिसका माल चाहता था छीन लेता था, आज अम्न व सलामती का बादशाह तमाम दुन्या को सुलह का पैग़ाम सुनाता है।

"اِنَّ دِمَائَکُمْ وَأَمْوَالَکُمْ عَلَیْکُمْ حَرَامٌ کَحُرمَةِ یَوْمِکُمْ هٰذَا، فِیْ شَهْرِکُمْ هٰذَا، فِیْ بَلَدِکُمْ هٰذَا، اِلٰی یَوْمِ تَلْقَوْنَ رَبَّکُمْ"[2]

"बेशक तुम्हारा खून और तुम्हारा माल ता क़्यामत उसी तरह हराम है, जिस तरह यह दिन, यह महीना और यह शहर, हराम है।"

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०

इस्लाम से पहले बड़े बड़े मज़ाहिब दुन्या में पैदा हुए, लेकिन उनकी बुन्याद खुद साहिबे शरीअ़त के तहरीरी उसूल पर न थी, उनको खुदा की तरफ़ से जो हिदायतें मिली थीं बंदों की हवस परस्तियों ने उनकी हक़ीक़त गुम कर दी थी, अबदी मज़हब का पैग़म्बर ज़िंदगी के बाद हिदायाते रब्बानी का मज्मूआ खुद अपने हाथ से अपनी उम्मत को सिपुर्द करता है और ताकीद करता है:

"وَاِنِّی تَرَکْتُ فِیْکُمْ مَالَنْ تَضِلُّوْا بَعْدَهٗ اِنْ اعْتَصَمْتُمْ بِهٖ کتاب اللّٰہ،"(1)

"मैं तुम में एक चीज़ छोड़ जाता हूं अगर तुमने उसको मज़बूत पकड़ लिया तो गुमराह न होगे, वह चीज़ क्या है? किताबुल्लाह!"

"اَنْتُمْ مَسْئُوْلُوْنَ عَنِّی فَمَااَنْتُمْ قَائِلُوْن.؟"

"तुमसे खुदा के यहां मेरी निस्बत पूछा जाएगा, तुम क्या जवाब दोगे?"

सहाबा रज़ि० ने अ़र्ज़ की "हम कहेंगे आप सल्ल० ने खुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया" आप सल्ल० ने आसमान की तरफ़ उंगली उठाई और तीन बार फ़रमाया, اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ(2) (ऐ खुदा तू गवाह रह।)

ऐन उसी वक़्त जब आप यह फ़र्ज़े नुबूव्वत अदा कर रहे थे, यह आयत उतरी:(3)

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०
(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

Maktab-e-Ashraf

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا.

"आज मैंने तुम्हारे लिये दीन को मुकम्मल कर दिया और अपनी नेअ्मत तमाम कर दी और तुम्हारे लिये मज़हबे इस्लाम को मुंतख़ब किया"

(माइदा)

निहायत हैरत अंगेज़ और इबरत ख़ेज़ मंज़र यह था कि शाहंशाहे आलम जिस वक़्त लाखों आदमियों के मज्मा में फ़रमाने रब्बानी का एलान कर रहा था उसके तख़्ते शाही का मस्नद व बालीन (कजावा और अ़र्क़ गीर) एक रूपया से ज़्यादा क़ीमत का न था।[1]

ख़ुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को अज़ान का हुक्म दिया और ज़ुह्र व अस्र की नमाज़ एक साथ अदा की, फिर नाक़ा पर सवार होकर मौक़फ़ तशरीफ़ लाए और वहां खड़े होकर देर तक क़िब्ला रू दुआ में मसरूफ़ रहे।[2] जब आफ़ताब डूबने लगा तो आप सल्ल0 ने वहां से चलने की तैयारी की, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 को ऊंट पर पीछे बिठा लिया,[3] आप सल्ल0 नाक़ा की ज़िमाम खींचे हुए थे यहां तक कि उसकी गर्दन कजावे में आकर लगती थी,[4] लोगों के हुजूम से एक इज़्तिराब सा पैदा हो गया था, लोगों को दस्ते मुबारक से

(1) सीरतुन्नबी सल्ल, अल्लामा शिब्ली नोअ़मानी 2-154 ता 159 (2) ज़ादुल मआ़द 2-234 (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुन्नुज़ूल बैना अरफ़ा बल हज (4) ज़ादुल मआ़द 2-246

और बुख़ारी में है कि कोड़े से इशारा करते जाते थे कि आहिस्ता! और ज़बाने मुबारक से इर्शाद फ़रमा रहे थेः

"السّكينة ايّها النّاس!"

लोगो! सुकून के साथ!

"السّكينة ايّها النّاس!"[1]

लोगो सुकून के साथ!

अस्नाए राह में एक जगह तहारत की, हज़रत उसामा रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह सल्ल०! नमाज़ का वक़्त तंग हो रहा है, फ़रमाया नमाज़ का मौक़ा आगे आता है, थोड़ी देर के बाद आप सल्ल० तमाम क़ाफ़िला के साथ मुज़्दल्फ़ा पहुंचे, यहां पहले मग़रिब की नमाज़ पढ़ी, इसके बाद लोगों ने अपने अपने पड़ाव पर जाकर सवारियों को बिठाया, अभी सामान खोलने भी न पाए थे कि फ़ौरन ही नमाज़े इशा की तक्बीर हुई।[2] नमाज़ से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल० लेट गए और सुब्ह तक आराम फ़रमाया, बीच में रोज़ाना के दस्तूर के ख़िलाफ़ इबादते शबाना के लिये बेदार न हुए, मुहद्दिसीन ने लिखा है कि यही एक शब है जिसमें आप सल्ल० ने तहज्जुद अदा नहीं फ़रमाई, सुब्ह सवेरे उठकर बाजमाअ़त फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी,[3] कुफ़्फ़ारे कुरैश मुज़्दल्फ़ा से उस वक़्त कूच करते थे, जब आफ़ताब पूरा निकल आता था, और

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल०, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब अम्रुन्नबी सल्ल० बिस्सकीना

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब अल जम्अु बैनस्सलातैन बिल मुज़्दल्फ़ा

(3) सीरतुन्नबी सल्ल० 2-160

आसपास के पहाड़ों की चोटियों पर धूप चमकने लगती थी, उस वक़्त बाआवाज़े बुलंद कहते थे "कोहे सबीर! धूप से चमक जा" आंहज़रत सल्ल0 ने इस रस्म के इब्ताल के लिये सूरज निकलने से पहले यहां से कूच किया।(1) यह ज़िल हिज्जा की दसवीं तारीख़ और सनीचर का दिन था।

हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि0 आप सल्ल0 के बिरादरे अम्मज़ाद नाक़ा पर सवार थे, अह्ले हाजत दाएं बाएं हज के मसाइल दरयाफ़्त करने के लिये आ रहे थे, आप सल्ल0 जवाब देते थे।(2) और ज़ोर ज़ोर से मनासिके हज की तअ़लीम देते जाते थे, वादिये महसर के रास्ता से आप सल्ल0 जम्रह के पास आए, इब्ने अब्बास से जो उस वक़्त कम्सिन थे फ़रमाया मुझे कंकरियां दो, आप सल्ल0 ने कंकरियां फेंकीं और लोगों को ख़िताब करके फ़रमायाः

اِيَّاكُمْ والغُلُوَّ فِى الدِّيْنِ فَانَّمَا اَهْلَكَ قَبْلَكُمُ الْغلُوُّ فِى الدِّيْن(3)

"मज़हब में गुलू और मुबालग़ा से बचो, क्योंकि तुमसे पहले क़ौमें इसी से बर्बाद हुईं"

इसी अस्ना में आप सल्ल0 यह भी इर्शाद फ़रमाते,

"لِتَاْخُذُوا مَنَاسِكَكُمْ فَانِى لَاادْرِىْ لَعَلِّى لَا اَحُجُّ بَعْدَ حَجَّتِىْ هٰذه"(4)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब मता यद्फ़ओ मिन जम्ओ

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाओ

(3) सुनन नसाई, किताबुल मनासिक, बाब इल्तिक़ातुल हसा, सुनन इब्ने माजा, किताबुल मनासिक, बाब कद्रो हिसर्रम्य

(4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहबाबु रम्ये जम्रतिल उक़्बा

"हज के मसाइल सीख लो, मैं नहीं जानता शायद कि इसके बाद मुझे दूसरे हज की नौबत न आए।"

यहां से फ़ारिग़ होकर मिना के मैदान में तशरीफ़ लाए, दाहने बाएं आगे पीछे तक़रीबन एक लाख मुसलमानों का मज्मा था, मुहाजिरीन क़िब्ला के दाहने, अंसार बाएं, और बीच में आम मुसलमानों की सफ़ें थीं, आंहज़रत सल्ल0 नाक़ा पर सवार थे, हज़रत बिलाल रज़ि0 के हाथ में नाक़ा की महार थी, हज़रत उसामा बिन ज़ैद पीछे बैठे कपड़ा तान कर साया किये हुए थे, आप सल्ल0 ने नज़र उठाकर उस अज़ीमुश्शान मज्मा की तरफ़ देखा तो फ़राइज़े नुबूव्वत के 23/ साला नताइज निगाहों के सामने थे, ज़मीन से क़बूल व एतिराफ़े हक़ का नूर जू फ़शं था, दीवाने क़ज़ा में अंबिया साबिक़ीन के फ़राइज़े तबलीग़ के कारनामों पर ख़त्मे रिसालत की मुह्र सब्त हो रही थी और दुन्या अपनी तख़्लीक़ के लाखों बरस के बाद दीने फ़ितरत की तक्मील का मुज़्दा काइनात के ज़र्रा ज़र्रा की ज़बान से सुन रही थी, ऐन उसी आलम में ज़बाने हक़ मुहम्मद सल्ल0 के काम व देहन में ज़मज़मा पर्दाज़ हुई।[1] अब एक नई शरीअ़त, एक नए निज़ाम और एक आलम का आग़ाज़ था, इस बिना पर इर्शाद फ़रमायाः

"اِنَّ الزَّمَانَ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَةِ يَوْمَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالارضَ"[2]

(1) सीरतुन्नबी सल्ल0 2-161 (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सहीह मुस्लिम, किताबुल क़सामा, बाब तग़लीज़ुद्दिमाअ़ वलअअ़राज़

"इब्तिदा में खुदा ने जब ज़मीन व आसमान को पैदा किया था, ज़माना फिर फिरा के आज उसी नुक़्ता पर आ गया।" (बरिवायत अबू बक्रह)

इब्राहीम ख़लील अलै0 के तरीक़े इबादत हज का मौसम अपनी जगह से हट गया था, इसका सबब यह है कि उस ज़माना में किसी क़िस्म की खून रेज़ी जाइज़ न थी, इसलिये अरबों के खून आशाम जज़्बात हीलए जंग के लिये इसको कभी घटा कभी बढ़ा देते थे, आज वह दिन आया कि इस इज्तिमाए अज़ीम के लिये अशहुरे हुरुम तअ़यीन कर दिये जाएं, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

"السَّنَةُ اثنا عَشَرَ شَهْراً مِنْهَا اَرْبَعَةٌ حُرم، ثَلاَثَةٌ مَتواليات ذُوالقَعْدة وذُو الحجة ومحرَّم وَرَجَبُ شَهْرُ مُضَرَ الَّذى بين جُمادى وَشَعْبَانَ."[1]

"साल में बारह महीने जिनमें चार महीने काबिले एहतिराम हैं, तीन तो मुतवातिर महीने हैं, जुलक़अ़दा, जुल हिज्जा, और मुहर्रहम, और चौथा रजब मुज़र का महीना, जो जुमादियुस्सानी और शअ़बान के बीच में है।"

दुन्या में अद्ल व इंसाफ़ और जौर व सितम का मेहवर सिर्फ़ तीन चीज़ें हैं, जान, माल, और आबरू, आंहज़रत सल्ल0 कल के खुत्बा में गो उनके मुतअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमा चुके थे, लेकिन अरब के सदियों के ज़ंग दूर करने के लिये

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़

मुकर्रर ताकीद की ज़रूरत थी, आज आप सल्ल0 ने इसके लिये अजीब बलीग़ अंदाज़ इख़्तियार फ़रमाया, लोगों से मुख़ातब होकर पूछा-

"कुछ मअ़लूम है, आज कौनसा दिन है? लोगों ने अ़र्ज़ किया कि ख़ुदा और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है, आप सल्ल0 देर तक चुप रहे, लोग समझे कि शायद आप सल्ल0 इस दिन का कोई और नाम रखेंगे, देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया "क्या आज कुर्बानी का दिन नहीं है? लोगों ने कहा हां बेशक है, फिर इर्शाद हुआ, यह कौनसा महीना है? लोगों ने फिर उसी तरीक़े से जवाब दिया, आप सल्ल0 ने फिर देर तक सुकूत किया, और फ़रमाया कि यह जुल हिज्जा नहीं है? "लोगों ने कहा हां बेशक है, फिर पूछा "यह कौनसा शहर है"? लोगों ने बदस्तूर जवाब दिया, आप सल्ल0 ने उसी तरह देर तक सुकूत के बाद फ़रमाया "क्या यह बलदतुल हराम नहीं है"? लोगों ने कहा हां बेशक है, जब सामईन के दिल में यह ख़्याल पूरी तरह जागुज़ीं हो चुका कि आज का दिन भी, महीना भी और खुद शहर भी मोहतरम है, यअ़नी इस दिन इस मक़ाम में जंग और खूरेज़ी जाइज़ नहीं, तब फ़रमायाः

فَإِنَّ دِمَائَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هٰذَا، فِيْ شَهْرِكُمْ هٰذَا، فِيْ بَلَدِكُمْ هٰذَا. (1)

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, किताबुल हज, बाबुल ख़ुत्बा अय्यामन्नास

"तो तुम्हारा खून, तुम्हारा माल और तुम्हारी आबरू (ता क़यामत) उसी तरह मोहतरम है जिस तरह यह दिन, इस महीना में और इस शहर में मोहतरम है।"

क़ौमों की बर्बादी हमेशा आपस के जंग व जिदाल और बाहमी ख़ूंरेज़ियों का नतीजा रही है, वह पैग़म्बर जो एक लाज़वाल क़ौमियत का बानी बन कर आया था, उसने अपने पैरुओं से बाआवाज़े बुलंद कहा:

أَلاَ! لاَتَرْجِعُوْا بَعْدِیْ ضُلَّالاً یَضْرِبُ بَعْضُکُمْ رِقَابَ بَعْضٍ وَسَتَلْقُوْنَ رَبَّکُمْ فَیَسْئَلُکُمْ عَنْ اَعْمَالِکُمْ."[1]

"हां! मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि खुद एक दूसरे की गर्दन मारने लगो, तुम को खुदा के सामने हाज़िर होना पड़ेगा और वह तुमसे तुम्हारे अअ़माल की बाज़ पुर्स करेगा।"

जुल्म व सितम का एक आलमगीर पहलू यह था कि अगर ख़ानदान में किसी एक शख़्स से कोई गुनाह सरज़द हो जाता तो उस ख़ानदान का हर शख़्स उस जुर्म का क़ानूनी मुज्रिम समझा जाता था, और अक्सर मुज्रिम के रूपोश या फ़िरार हो जाने की सूरत में बादशाह का उस ख़ानदान में से जिस पर क़ाबू चलता था, उसको सज़ा देता था, बाप के जुर्म में बेटे को सूली दी जाती थी, और बेटे के जुर्म का ख़मियाज़ा बाप को उठाना पड़ता था, यह सख़्त

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ह़ज्जतुल वदाअ़, किताबुल ह़ज, बाबुल ख़ुत्बा अय्यामे मिना

ज़ालिमाना क़ानून था, जो मुद्दत से दुन्या में हुक्मरां था अगर्चे क़ुर्आन मजीद ने "لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ" के वसीअ़ क़ानून की रू से इस ज़ुल्म की हमेशा के लिये बेख़ कनी कर दी थी, लेकिन उस वक़्त जब दुन्या का आख़िरी पैग़म्बर एक निज़ामे सियासत तरतीब दे रहा था, इस उसूल को फ़रामोश नहीं कर सकता था, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

"أَلَا! لَا يَجْنِي جَانٍ إِلَّا عَلَىٰ نَفْسِهِ أَلَا! لَا يَجْنِي جَانٍ عَلَىٰ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُوْدٌ عَلَىٰ وَالِدِهِ."[1]

"हां! मुज्रिम अपने जुर्म का आप ज़िम्मादार है, हां! बाप के जुर्म का ज़िम्मादार बेटा नहीं और बेटे के जुर्म का जवाब देह बाप नहीं।"

अरब की बद अम्नी और निज़ामे मुल्क की बेतरतीबी का एक सबब यह था कि हर शख़्स अपनी ख़ुदावंदी का आप मुद्दई था, और दूसरे की मातहती और फ़रमांबरदारी को अपने लिये नंग और आ़र जानता था, इर्शाद हुआः

"إِنْ أُمِّرَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ مُجَدَّعٌ أَسْوَدُ يَقُوْدُكُمْ بِكِتَابِ اللّٰهِ فَاسْمَعُوا لَهُ وَأَطِيْعُوا."[2]

"अगर कोई हब्शी, कान कटा गुलाम भी तुम्हारा अमीर हो, और वह तुमको ख़ुदा की किताब के मुताबिक़ ले चले तो उसकी इताअ़त और फ़रमांबरदारी करना।"

(1) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मा जाअ़ दिमाउकुम व अमवालुकुम अलैकुम हरामुन, सुनन इब्ने माजा, किताबुल मनासिक, बाबुल ख़ुत्बा यौमुन्नह्र

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिवाबु रम्ये जम्रतिल उक़्बा

रेगिस्ताने अरब का ज़र्रा ज़र्रा उस वक़्त इस्लाम के नूर से मुनव्वर हो चुका था और ख़ानए कअ़बा हमेशा के लिये मिल्लते इब्राहीम अलै0 का मर्कज़ बन चुका था, और फ़ित्ना पर्दाज़ाना कूव्वतें पामाल हो चुकी थीं, इस बिना पर आप सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः

"أَلا! إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ اَنْ يُعْبَدَ فِي بَلَدِكُمْ هٰذَا أبداً ولٰكِنْ سَتَكُونُ لَهُ طَاعَةٌ فِيمَا تَحْتَقِرُون مِنْ أعمالِكُمْ فَيَرْضىٰ بِهِ،"(1)

"हां! शैतान इस बात से मायूस हो चुका कि अब तुम्हारे इस शहर में उसकी परस्तिश क़्यामत तक न की जाएगी, लेकिन छोटी छोटी बातों में उसकी पैरवी करोगे और वह उस पर खुश होगा"

सबसे आख़िर में आप सल्ल0 ने इस्लाम के फ़र्ज़े अव्वलीन याद दिलाएः

"اُعْبُدُوْا ربَّكُمْ وَصَلُّوا خَمْسَكُمْ وَصُوْمُوْا شَهْرَكُمْ وَاَطِيْعُوا ذَااِمْرِتِكُمْ تَدْخُلوا جَنَّةَ رَبِّكُم"(2)

"अपने परवरदिगार को पूजो, पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ो, महीना का रोज़ा रखा करो, और मेरे अहकाम की इताअ़त करो, खुदा की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।"

यह फ़रमा कर आप सल्ल0 ने मज्मा की तरफ़ इशारा किया और फ़रमायाः

(1) तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन

(2) सुनन तिर्मिज़ी, किताबुस्सलात, बाब फ़ी फ़ज़्लिस्सलात, मुस्नद अहमद 5-251

اَللّٰهُمَّ اشْهَدْ، "ऐ खुदा तू गवाह रहना।"

फिर लोगों की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया:

فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، (1)

"जो लोग इस वक़्त मौजूद हैं वह उनको सुना दें जो मौजूद नहीं हैं।"

ख़ुत्बा के इख़्तिताम पर आप सल्ल0 ने तमाम मुसलमानों को अलवदाअ् कहा।

इसके बाद आप सल्ल0 कुर्बान गाह की तरफ़ तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि "क़ुर्बानी के लिये मिना की कुछ तख़्सीस नहीं, बल्कि मिना और मक्का की एक एक गली में क़ुर्बानी हो सकती है" आप सल्ल0 के साथ क़ुर्बानी के सौ ऊंट थे, कुछ तो आप सल्ल0 ने ख़ुद अपने हाथ से ज़िब्ह किये और बाक़ी हज़रत अली रज़ि0 के सिपुर्द कर दिये कि वह ज़िब्ह करें।(2) और हुक्म दिया, कि गोश्त पोस्त जो कुछ हो सब ख़ैरात कर दिया जाए, यहां तक कि क़स्साब की मज़दूरी भी उससे अदा न की जाए, अलग से दी जाए।(3)

क़ुर्बानी से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 ने मुअम्मर बिन अब्दुललाह को बुलवाया और सर के बाल मुंडवाए,(4) और फ़र्ते मुहब्बत से कुछ बाल ख़ुद अपने दस्ते मुबारक से अबू तल्हा अंसारी और उनकी बीवी उम्मे सुलैम और बअ्ज़ उन

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल ख़ुत्बा अय्यामे मिना

(2) ज़ादुल मआद 2-59

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब युतसद्दक बिजुलूदिल हदी

(4) मुस्नद अहमद 6-100

लोगों को जो पास में बैठे, इनायत फ़रमाए, और बाक़ी अबू तलहा रज़ि0 ने अपने हाथ से तमाम मुसलमानों में एक एक दो दो करके तक़सीम कर दिये[1] इसके बाद आप सल्ल0 मक्का मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ लाए, ख़ानए कअ़बा का तवाफ़ किया, इससे फ़ारिग़ होकर चाहे ज़मज़म के पास आए।

चाहे ज़मज़म से हाजियो को पानी पिलाने की ख़िदमत ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब से मुतअ़ल्लिक़ थी, चुनांचे उस वक़्त इसी ख़ानदान के लोग पानी निकाल निकाल कर लोगों को पिला रहे थे, आप सल्ल0 ने फ़रमाया, या बनी अब्दुल मुत्तलिब अगर मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि मुझको ऐसा करते देख कर और लोग भी तुम्हारे हाथ से डोल छीन कर अपने हाथ से पानी निकाल कर पियेंगे, तो मैं अपने हाथ से पानी निकाल कर पीता,[2] हज़रत अब्बास रज़ि0 ने डोल में पानी निकाल कर पेश किया, आप सल्ल0 ने क़िब्ला रुख़ होकर खड़े खड़े पानी पिया[3] फिर यहां से मिना वापस तशरीफ़ ले गए और वहीं नमाज़े ज़ुहर अदा की[4] बक़िया अय्यामे तशरीक़ यअ़नी 12/ ज़िल हिज्जा तक आप सल्ल0 ने मुस्तक़िल इक़ामत मिना ही में फ़रमाई, हर रोज़ ज़वाल के बाद रम्ये जिमार की ग़र्ज़ से तशरीफ़ ले जाते और फिर वापस आ जाते,[5] 13/ ज़िल हिज्जा को सेह शंबा के दिन

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल वुज़ू, बाब अल माउल्लज़ी युग़सल बिही शअ़रुल इंसान, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब बयानुस्सन्नति यौमुन्नहर ऐ यरमी सुम्भ यन्हर, (2) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब हज्जतुन्नबी सल्ल0, सहीहुल बुख़ारी, बाबुस्सक़ाया, (3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुश्शुर्ब, बाबुश्शुर्ब क़ाइमन (4) सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब इस्तिहबाब अबवाबुल इफ़ाज़ा यौमुन्नहर (5) ज़ादुल मआ़द 2-290, सहीहुल बुख़ारी, बाब रम्य जम्रतुल उक़्बा

ज़वाल के बाद आप सल्ल0 ने यहां से निकल कर वादिये मुहस्सब में क़्याम किया, और शब को उसी मक़ाम पर आराम फ़रमाया।[1] पिछले पहर उठकर मक्का मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ ले गए और ख़ानए कअ़बा का आख़िरी तवाफ़ करके वहीं सुब्ह की नमाज़ अदा की,[2] इसके बाद क़ाफ़िला उसी वक़्त अपने अपने मक़ाम को रवाना हो गया, और आप सल्ल0 ने मुहाजिरीन व अंसार के साथ मदीना की तरफ़ मुराजअ़त फ़रमाई, मदीना के क़रीब पहुंच कर जुल हुलैफ़ा में शब बसर की, सुब्ह के वक़्त एक तरफ़ से आफ़ताब निकला और दूसरी तरफ़ कौकबए नबवी मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुआ, और मदीना पर नज़र पड़ी तो यह अलफ़ाज़ फ़रमाए:[3]

"اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اٰئِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ"[4]

"ख़ुदा बुज़ुर्ग व बरतर है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं, कोई उसका शरीक नहीं, बस उसी की सलतनत है, उसी के लिये हम्द व सताइश है, वह

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाब तवाफ़ुल वदाअ़, व बाब मन सल्लल अस्र यौमन्नह्र बिल अबतह

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुल हज

(3) तलख़ीस अज़ सीरतुन्नबी सल्ल0 2-159 ता 169

(4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल हज, बाबुन्नुज़ूल बिज़ी तुवा, सहीह मुस्लिम, किताबुल हज, बाब मा यक़ूलु इज़ा क़फ़ला मिन सफ़रिल हज्जि व बाबुलतअ़रीस बिज़िल हुलैफ़ा

हर बात पर क़ादिर है, लौटे आ रहे हैं, तौबा करते हुए, फ़रमांबरदाराना, ज़मीन पर पेशानी रखकर, अपने परवरदिगार की हम्द व सताइश में मसरूफ़ होकर, ख़ुदा ने अपना वादा सच किया, अपने बंदे की नुस्रत की और तमाम मुक़ाबिल को तन्हा शिकस्त दी।"

वफ़ात

اِنَّکَ مَیِّتٌ وَّاِنَّھُمْ مَّیِّتُوْنَ (ज़ुमर)

रूहे क़ुद्सी को आलमे जिस्मानी में उसी वक़्त तक रहने की ज़रूरत थी कि तकमीले शरीअ़त और तज़कियए नुफ़ूस का अज़ीमुश्शान काम दर्जए कमाल तक पहुंच जाए, हज्जतुल वदाअ़ में यह फ़र्ज़े अहम अदा हो चुका, तौहीदे कामिल और मकारिमे अख़्लाक़ के उसूल अमलन क़ाइम करके अरफ़ात के मज्मए आम में एलान कर दिया गया कि:[1]

اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ،

"आज के दिन मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और अपनी नेअ़मत पूरी कर दी।"

सूरए नस्र का नुज़ूल ख़ास ख़ास सहाबा को आंहज़रत सल्ल0 ने क़ुर्बे वफ़ात की इत्तिलाअ़ दे चुका था, और आप सल्ल0 हुक्मे रब्बानी "فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ۔" (नस्र) के मुताबिक़ ज़्यादा औक़ात तस्बीह व तह्लील में

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब हज्जतुल वदाअ़, सीरतुन्नबी सल्ल0 2-170

बसर फ़रमाते थे।[1] आप सल्ल0 उमूमन हर साल रमज़ान मुबारक में दस दिन एतिकाफ़ में बैठते थे, लेकिन रमज़ान 10 हि0 में बीस दिन एतिकाफ़ में बैठे, साल में एक दफ़ा माहे रमज़ान में आप सल्ल0 पूरा कुर्आन नामूसे अक्बर की ज़बानी सुनते थे, लेकिन वफ़ात के साल दो दफ़ा यह शर्फ़ हासिल हुआ[2] हज्जतुल वदाअ् के मौक़ा पर मनासिके हज की तअ़लीम के साथ साथ आप सल्ल0 ने यह एलान भी फ़रमाया कि मुझे उम्मीद नहीं कि आइंदा साल तुमसे मिल सकूं, बअ्ज़ रिवायतों में यह अलफ़ाज़ इस तरह वारिद हुए हैं: शायद इसके बाद हज न कर सकूं[3] हज्जतुल वदाअ् के मौक़ा पर तमाम मुसलमान को अपने फ़ैज़े दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, और उनको हसरत के साथ वदाअ् किया, शुहदाए उहुद जो "بَلْ هُمْ أَحْيَاءٌ" के मुज़दए जांफ़ज़ा से फ़ैज़याब थे, आठ बरस के बाद आख़िरी दफ़ा आप सल्ल0 ने उनको भी अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ करना ज़रूरी समझा, चुनांचे उसी ज़माना में उनकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गए और उनके लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई और इस रिक़्क़त अंगेज़ तरीक़ा से उनको विदाअ़ किया कि जिस तरह एक मरने वाला अपने अइज़्ज़ाअ् को वदाअ् करता है, इसके बाद एक ख़ुत्बा दिया, जिसमें फ़रमाया:

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुत्तफ़सीर, बाब तफ़सीर "इज़ा जाअ् नस्रुल्लाहि"

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुर्आन, बाब काना जिब्रईलु यअ्रुज़ुल कुर्आन अलन्नबी सल्ल0

(3) सहीह मुस्लिम किताबुल हज, बाब इस्तिहबाबु रम्ये जम्रतिल उक़्बा

"मैं तुमसे पहले हौज़ पर जा रहा हूं, उसकी वुस्अ़त इतनी है जितनी अब्ला से जुह्फ़ा तक, मुझको तमाम दुन्या के ख़ज़ानों की कुंजी दी गई है, मुझे ख़ौफ़ नहीं कि मेरे बाद तुम शिर्क करोगे, लेकिन इससे डरता हूं कि दुन्या में न मुब्तला हो जाओ। और इसके लिये आपस में कुश्त व खून न करो तो फिर उसी तरह हलाक हो जाओ, जिस तरह तुमसे पहली क़ौमें हलाक हुईं।"

रावी का बयान है कि यह आख़िरी दफ़ा मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को खुत्बा देते हुए सुना।

18/ या 19/ सफ़र 11 हि0 में आधी रात को आप सल्ल0 जन्नतुल बक़ीअ़ में जो आम मुसलमानों का क़ब्रस्तान था तशरीफ़ लाए, तो मिज़ाज नासाज़ हुआ,[1] यह हज़रत मैमूना रज़ि0 की बारी का दिन था, पांच दिन तक आप सल्ल0 इस हालत में अज़राहे अद्ल व करम बारी बारी एक एक बीवी के हुज्रा में तशरीफ़ ले जाते रहे, दो शंबा के दिन मर्ज़ में शिद्दत हुई तो अज़्वाजे मुतह्हरात से इजाज़त ली कि हज़रत आइशा रज़ि0 के घर क़्याम फ़रमाएं, खुल्क़े अ़मीम की बिना पर इजाज़त भी साफ़ और एलानिया नहीं तलब की बल्कि पूछा कि कल मैं किस के घर रहूंगा, दूसरा दिन (दो शंबा) हज़रत आइशा रज़ि0 के यहां क़्याम फ़रमाने का था, अज़्वाजे मुतह्हरात ने मर्ज़िये अक़्दस समझ कर अ़र्ज की कि आप सल्ल0 जहां चाहें क़्याम फ़रमाएं,

(1) मुस्तदरक हाकिम 3-57

जुअ्फ़ इस क़दर हो गया कि चला नहीं जाता था, हज़रत अली रज़ि0 और हज़रत अब्बास रज़ि0 दोनों बाजू थाम कर बमुश्किल हज़रत आइशा रज़ि0 के हुज्रे में लाए।[1]

आमद व रफ़्त की क़ूव्वत जब तक रही आप सल्ल0 मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाते रहे, सबसे आख़िरी नमाज़ जो आप सल्ल0 ने पढ़ाई वह मग़रिब की नमाज़ थी, सर में दर्द था, इसलिये सर में रूमाल बांध कर आप सल्ल0 तशरीफ़ लाए और नमाज़ अदा की, जिसमें सूरए "والمرسلات عُرْفًا" क़िराअत फ़रमाई।[2] इश का वक़्त आया तो दरयाफ़्त फ़रमाया कि नमाज़ हो चुकी? लोगों ने अ़र्ज़ की कि सबको हुज़ूर सल्ल0 का इंतिज़ार है, लगन में पानी भरवा कर गुस्ल फ़रमाया, फिर उठना चाहा कि ग़श आ गया, इफ़ाक़ा के बाद फिर फ़रमाया कि नमाज़ हो चुकी? लोगों ने फिर वही पहला जवाब दिया, आप सल्ल0 ने फिर गुस्ल फ़रमाया, और फिर जब उठना चाहा तो ग़श आ गया, इफ़ाक़ा हुआ तो फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, और लोगों ने वही जवाब दिया, तीसरी मर्तबा जिस्म मुबारक पर पानी डाला, फिर जब उठने का इरादा किया तो फिर ग़शी तारी हो गई, जब इफ़ाक़ा हुआ तो इर्शाद फ़रमाया कि अबू बक्र नमाज़ पढ़ाएं, हज़रत आइशा रज़ि0 ने मअ्ज़रत की कि या रसूलुल्लाह सल्ल0! अबू बक्र रज़ि0 निहायत रक़ीकुल क़ल्ब हैं, आप की जगह उनसे खड़ा न हुआ जाएगा, आप सल्ल0 ने फिर यही हुक्म दिया कि अबू बक्र रज़ि0 नमाज़

(1) व (2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल0 व वफ़ातुहू

पढ़ाएं, चुनांचे कई दिन तक हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने नमाज़ पढ़ाई।

वफ़ात से चार दिन पहले ज़ुह्र की नमाज़ के वक़्त आप सल्ल0 की तबीअ़त कुछ सुकून पज़ीर हुई, आप सल्ल0 ने हुक्म दिया कि पानी की सात मशकें आप पर डाली जाएं, गुस्ल फ़रमा चुके तो अली रज़ि0 और हज़रत अब्बास रज़ि0 थाम कर मस्जिद में लाए, जमाअत खड़ी हो चुकी थी और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 नमाज़ पढ़ा रहे थे, आहट पाकर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 पीछे हटे आप सल्ल0 ने इशारा से रोका और उनके पहलू में बैठ कर नमाज़ पढ़ाई, आप सल्ल0 को देख कर हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को देखकर और लोग अरकान अदा करते जाते थे।[1]

नमाज़ के बाद आंहज़रत सल्ल0 ने एक ख़ुत्बा दिया, जो आप सल्ल0 की ज़िंदगी का सबसे आख़िरी ख़ुत्बा था, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

> ''ख़ुदा ने अपने एक बंदा को इख़्तियार अता फ़रमाया है कि ख़्वाह दुन्या की नेअ़मतों को क़बूल कर ले या ख़ुदा के पास (आख़िरत) में जो कुछ है उसको क़बूल कर ले, लेकिन उसने ख़ुदा ही के पास की चीज़ें क़बूल कीं'' यह सुन कर अबू बक्र रज़ि0 रो पड़े, लोगों ने उनकी तरफ़ तअ़ज्जुब से देखा कि आप सल्ल0 तो एक शख़्स का वाक़िआ

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिख़्लाफ़ुल इमाम, सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल0 व वफ़ातुहू

बयान करते हैं, यह रोने की कौनसी बात है, लेकिन राज़दारे नुबूव्वत समझ चुका था कि वह बंदा खुद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल0 हैं, आप सल्ल0 ने अपनी तक़रीर का सिलसिला आगे बढ़ाया और फ़रमायाः "सबसे ज़्यसादा मैं जिसकी दौलते सोहबत का मम्नून हूं, अबू बक्र रज़ि0 हैं, अगर मैं दुन्या में किसी को अपनी उम्मत में से अपना दोस्त बना सकता तो अबू बक्र रज़ि0 को बनाता, लेकिन इस्लाम का रिशता दोस्ती के लिये काफ़ी है, मस्जिद के रुख़ कोई दरीचा अबू बक्र रज़ि0 के दरीचा के सिवा बाक़ी न रखा जाए,(1) हां तुम से पहले क़ौमों ने अपने पैग़म्बरों और बुज़ुर्गों की क़ब्र को इबादत गाह बना लिया है, देखो! तुम ऐसा न करना।"(2)

ज़मानए अ़लालत में अंसार आप सल्ल0 की इनायात और मेहरबानियों को याद करके रोते थे, एक दफ़ा इसी हालत में हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत अब्बास रज़ि0 का गुज़र हुआ, उन्होंने अंसार को रोते देखा तो वजह दरयाफ़्त की उन्होंने बयान किया कि हुज़ूर की सोहबतें याद आती हैं, उनमें से एक साहब ने जाकर आंहज़रत सल्ल0 से वाक़िआ बयान किया, आज उसकी तलाफ़ी का मौक़ा था, इसलिये

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब क़ौलुन्नबी सल्ल0, सुद्दुल अबवाब इल्ला बाब अबी बक्र रज़ि0

(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी सल्ल0, सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्नह्ये अन बिनाइल मसाजिद अलल क़ुबूर

इसके बाद आप सल्ल0 ने अंसार की निस्बत लोगों की तरफ़ ख़िताब करके फ़रमायाः

"يَاأَيُّهَاالنَّاس" (ऐ लोगो!) "मैं अंसार के मुआमला में वसीयत करता हूं, आम मुसलमान बढ़ते जाएंगे, लेकिन अंसार इस तरह कम होकर रह जाएंगे, जैसे खाने में नमक, वह अपनी तरफ़ से अपना फ़र्ज़ अदा कर चुके, अब तुम्हें उनका फ़र्ज़ अदा करना है, वह मेरे जिस्म में बमंज़िला मेअ़ूदा के हैं, जो तुम्हारे नफ़ा व नुक़सान का मुतवल्ली हो (यअ़नी जो ख़लीफ़ा हो) उसको चाहिये कि इनमें जो नेकूकार हों उनको क़बूल करे और जिनसे ख़ता हुई हो उनको मुआफ़ करे।"[1]

ऊपर गुज़र चुका है कि रूमियों की तरफ़ जिस फ़ौज का भेजना आंहज़रत सल्ल0 ने तज्वीज़ किया था, उसकी सरदारी उसामा रज़ि0 बिन ज़ैद को तफ़वीज़ फ़रमाई थी, इस पर लोगों ने (इब्ने सअ़द ने तस्रीह की है कि वह मुनाफ़िक़ीन थे) शिकायत की कि बड़े बूढ़ों के होते हुए जवानों को यह मंसब क्यों अता हुआ, आंहज़रत सल्ल0 ने इस मस्अला की निस्बत इर्शाद फ़रमायाः

"अगर उसामा की सरदारी पर तुमको एतिराज़ है तो उसके बाप ज़ैद की सरदारी पर भी तुम मोअ़तरिज़ थे, ख़ुदा की क़सम वह इस मंसब का मुस्तहिक़ था और वह मुझे सबसे ज़्यादा महबूब था

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार

बुला भेजा, तशरीफ़ लाई तो उनसे कान में कुछ बातें कीं, वह रोने लगीं, फिर बुला कर कान में कुछ कहा तो हंस पड़ीं, हज़रत आइशा रज़ि0 ने दरयाफ़्त किया तो कहा पहली दफ़ा आप सल्ल0 ने फ़रमया कि इसी मर्ज़ में इंतिक़ाल करूंगा, जब मैं रोने लगी तो फ़रमाया कि मेरे ख़ानदान में सबसे पहले तुम्हीं मुझसे आकर मिलोगी तो हंसने लगीं।[1]

यहूद व नसारा ने अंबिया के मज़ारात और यादगारों की तअ़ज़ीम में जो इफ़्रात की थी, वह बुत परस्ती की हद तक पहुंच गई थी, इस्लाम का फ़र्ज़े अव्वलीन बुत परस्ती की रग व रेशा का इस्तीसाल करना था, इसलिये हालते मर्ज़ में जो चीज़ सबसे ज़्यादा पेशे नज़र थी यही थी, इत्तिफ़ाक़ से बअ़ज़ अज़्वाजे मुतह्हरात ने जो हब्शा हो आई थीं, उसी हालत में वहां के ईसाई मअ़बूदों का और उनके मुजस्समों और तस्वीरों का तज़किरा किया, आप सल्ल0 ने फ़रमाया इन लोगों में जब कोई नेक आदमी मर जाता है तो उसके मक़्बरा को इबादत गाह बना लेते हैं और उसका बुत बनाकर उसमें खड़ा करते हैं, क़्यामत के रोज़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की निगाह में यह लोग बदतरीन मख़्लूक़ होंगे।[2]

ऐन कर्ब की शिद्दत में जबकि चादर कभी मुंह पर डाल लेते थे और कभी गर्मी से घबरा कर उलट देते थे। हज़रत आइशा रज़ि0 ने ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ सुनेः

---

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल0 व वफ़ातुहू

(2) सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुन्नह्ये अन बिनाइल मसाजिद अलल क़ुबूर

"لَعَنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْيَهُوْدِ وَالنَّصَارٰى اتَّخَذُوْا قُبُوْرَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ."[1]

"यहूद व नसारा पर खुदा की लअ़नत हो, उन्होंने अपने पैग़म्बरों की क़ब्रों को इबादतगाह बना लिया।"

इसी कर्ब व बेचैनी में याद आया कि हज़रत आइशा रज़ि० के पास कुछ अशरफ़ियां रखवाई थीं, दरयाफ़्त फ़रमाया कि वह अशरफ़ियां कहां हैं? मुहम्मद (सल्ल०) खुदा से बद गुमान होकर मिलेगा? जाओ उनको खुदा की राह में ख़ैरात कर दो।[2]

मर्ज़ में इश्तिदाद और तख़फ़ीफ़ होती रहती थी, जिस दिन वफ़ात हुई (यअ़नी दो शंबा के रोज़) बज़ाहिर तबीअ़त को सुकून था, हुज्रए मुबारक मस्जिद से मिला हुआ था, आप सल्ल० ने (सुब्ह के वक़्त) पर्दा उठाकर देखा तो लोग (फ़ज्र की) नमाज़ में मशगूल थे, देखकर मुसर्रत से हंस पड़े, लोगों ने आहट पाकर ख़्याल किया कि आप सल्ल० बाहर आना चाहते हैं, फ़र्ते मुसर्रत से तमाम लोग बेक़ाबू हो गए और क़रीब था कि नमाज़ टूट जाए, हज़रत अबू बक्र रज़ि० जो इमाम थे चाहा कि पीछे हट जाएं, आप सल्ल० ने इशारा से रोका और हुज्रए शरीफ़ में दाख़िल होकर पर्दे डाल दिये।[3]

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

(2) मुस्नद अ़हमद 6-49

(3) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

Maktab-e-Ashraf

यह सबसे आख़िरी मौक़ा था कि सहाबा रज़ि0 ने जमाले अक़्दस की ज़ियारत की, हज़रत अनस रज़ि0 बिन मालिक कहते हैं कि आप सल्ल0 का चेहरा यह मअ़लूम होता था कि मुस्हफ़ का कोई वरक़ है।[1] यअ़नी सफ़ेद हो गया था।

दिन जैसे जैसे चढ़ता जाता था, आप सल्ल0 पर ग़शी तारी होती थी और फिर इफ़ाक़ा हो जाता था, हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 यह देखकर बोलीं "वा कर्बा अबाह" (हाए मेरे बाप की बेचैनी,) आप सल्ल0 ने फ़रमाया तुम्हारा बाप आज के बाद बेचैन न होगा।[2] हज़रत आइशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि आप सल्ल0 जब तंदुरुस्त थे तो फ़रमाया करते थे कि पैग़म्बर को इख़्तियार दिया जाता है कि वह ख़्वाह मौत को क़बूल करें या हयाते दुन्या को तर्जीह दें, उस हालत में अक्सर आप सल्ल0 की ज़बाने मुबारक से यह अलफ़ाज़ अदा होते थेः

"مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ" "उन लोगों के साथ जिन पर खुदा ने इन्आ़म किया"

और कभी फ़रमातेः

"اللّٰهُمَّ فى الرَّفِيقِ الأعلىٰ" "खुदावंद बड़े रफ़ीक़ हैं।"

वह समझ गईं कि अब सिर्फ़ रिफ़ाक़ते इलाही मतलूब है।[3]

(1) सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब इस्तिख़्लाफ़ुल इमाम
(2) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल0 व वफ़ातुहू
(3) ऐज़न

वफ़ात से ज़रा पहले हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि० ख़िदमते अक़्दस में आए, आप सल्ल० हज़रत आइशा रज़ि० के सीना पर सर टेक कर लेटे थे, हज़रत अब्दुर्रहमान के हाथ में मिस्वाक थी, मिस्वाक की तरफ़ नज़र जमा कर देखा, हज़रत आइशा रज़ि० समझीं कि आप सल्ल० करना चाहते हैं, हज़रत अब्दुर्रहमान से मिस्वाक लेकर दांतों से नर्म की, और ख़िदमते अक़्दस में पेश की, आप सल्ल० ने बिल्कुल तंदुरुस्तों की तरह मिस्वाक की,(1) आप सल्ल० की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ रहा था, सेहपहर थी,(2) सीना में सांस की घर घराहट महसूस होती थी, इतने में लब मुबारक हिले तो यह अलफ़ाज़ सुने।(3)

"الصَّلٰوةَ وَمَا ملكتْ أيمانُكم" "नमाज़ और गुलाम"

पास पानी की लगन थी, उसमें बार बार हाथ डालते और चेहरा पर मलते, चादर कभी मुंह पर डाल लेते और कभी हटा देते थे, इतने में हाथ उठाकर फ़रमायाः اَللّٰهُمَّ الرفيق الأعلى "और अब वह बड़ा रफ़ीक़ दरकार है।"

यही कहते कहते रूहे पाक आलमे क़ुद्स में पहुंच गई।(4)

---

(1) ऐज़न (2) इब्ने इस्हाक़ ने सीरत में लिखा है कि वफ़ात दोपहर को हुई, लेकिन हज़रत अनस बिन मालिक से बुख़ारी व मुस्लिम में रिवायत है कि अग़लाम यअ़नी दो शंबा के आख़िर वक़्त वफ़ात फ़रमाई, हाफ़िज़ इब्ने हजर ने दो रिवायतों में इस तरह तत्बीक़ दी है कि दोपहर ढल चुकी थी। (3) मुस्तदरक हाकिम 3-59 (4) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्जुन्नबी सल्ल० व वफ़ातुहू

اللّٰهمّ صَلِّ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ صلوٰةً كَثِيْراً كَثِيْراً.

तज्हीज़ व तक्फ़ीन

अक़ीदतमंदों को यक़ीन नहीं आता था कि हुज़ूर सल्ल0 ने इस दुन्या को अलवदाअ् कहा, चुनांचे हज़रत उमर रज़ि0 ने तलवार खींच ली कि जो कहेगा कि आंहज़रत सल्ल0 ने वफ़ात पाई उसका सर उड़ा दूंगा।(1)

लेकिन हज़रत अबू बक्र रज़ि0 आए और उन्होंने तमाम सहाबा रज़ि0 के सामने खुत्बा दिया कि हुज़ूर सल्ल0 का इस जहां से तशरीफ़ ले जाना यक़ीनी था, और कुर्आन मजीद की आयतें पढ़ कर सुनाईं, तो लोगों की आंखें खुलीं और इस नागुज़ीर वाक़िआ का यक़ीन आया(2) तज्हीज़ व तक्फ़ीन का काम सेहशंबा को शुरू हुआ, यह ख़िदमते ख़ास अइज़्ज़ाअ् व अक़ारिब ने अंजाम दी, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि0, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 ने पर्दा किया, और हज़रत अली रज़ि0 ने गुस्ल दिया, हज़रत अब्बास रज़ि0 भी मौक़ा पर मौजूद थे।(3)

गुस्ल व कफ़न के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि आप सल्ल0 को दफ़्न कहां किया जाए? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा, नबी जिस मक़ाम पर वफ़ात पाता है, वहीं दफ़्न भी होता है, चुनांचे नअ्श मुबारक उठाकर और बिस्तर उलट कर हुज्रए आइशा रज़ि0 में उसी मक़ाम पर क़ब्र खोदना तज्वीज़ हुआ।(4)

(1) सीरत इब्ने हिशाम 2-655 (2) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (3) सीरत इब्ने हिशाम 2-662 (4) सुनन इब्ने माजा, किताबुल जनाइज़, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल0

हज़रत आइशा रज़ि0 कहती हैं कि आप सल्ल0 को किसी मैदान में इसलिये दफ़्न नहीं किया गया कि आख़िरी लम्हों में आप सल्ल0 को यह ख़्याल था कि लोग फ़र्ते अक़ीदत से मेरी क़ब्र को भी इबादत गाह न बना लें, मैदान में इसकी दार व गीर मुश्किल थी।(1)

हज़रत अबू तल्हा रज़ि0 ने मदीना के रिवाज के मुताबिक़ क़ब्र खोदी, जो लहदी बग़ली थी।(2)

जनाज़ा तैयार हो गया तो लोग नमाज़ के लिये टूटे, जनाज़ा हुज्रे के अंदर था, बारी बारी से लोग थोड़े थोड़े करके जाते थे, पहले मर्दों ने फिर औरतों ने फिर बच्चों ने नमाज़ पढ़ी, लेकिन कोई इमाम न था,(3)

जिस्म मुबारक को हज़रत अली रज़ि0, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि0, हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 ने क़ब्र में उतारा।(4)

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ صَلَاةً وَسَلَامًا دَائِمَيْنَ مُتَلَازِمَيْنِ اِلَىٰ يَوْمِ الدِّيْنِ وَعَلَىٰ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ أَجْمَعِيْنَ.

☆☆☆
☆☆

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल जज़ाइर, बाब वफ़ातुन्नबी सल्ल0
(2) सीरत इब्ने हिशाम 2-663
(3) सीरत इब्ने हिशाम 2-664
(4) अबू दाऊद, किताबुल जनाइज़

Maktabe-e-Ashraf

और अब उसके बाद यह सबसे ज़्यादा महबूब है।''[1]

इस्लाम और दीगर मज़ाहिब में एक दक़ीक़ फ़र्क़ यह है कि इस्लाम शरीअ़त के तमाम अहकाम का वाज़ेअ् और हाकिम बराहे रास्त खुदाए पाक को क़रार देता है, पैग़म्बर का सिर्फ़ इसी क़दर फ़र्ज़ है कि अहकामे इलाही को अपने क़ौल व अमल के ज़रीआ़ से बंदों तक पहुंचा दे, चूंकि दूसरे मज़ाहिब में यह ग़लत फ़हमी शिर्क व कुफ़्र तक हो चुकी थी, और उसके नताइज पेशे नज़र थे, इसलिये इर्शाद फ़रमायाः

''हलाल व हराम की निस्बत मेरी तरफ़ न की जाए, मैंने वही चीज़ हलाल की है जो खुदा ने अपनी किताब में हलाल की है और वही चीज़ हराम की है जो खुदा ने हराम की है।''

इंसान की जज़ा व सज़ा की बुन्याद खुद उसके ज़ाती अमल पर है, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

''ऐ पैग़म्बरे खुदा की बेटी फ़ातिमा! और ऐ पैग़म्बरे खुदा की फूफी सफ़ीया! खुदा के यहां के लिये कुछ कर लो मैं तुम्हें खुदा से नहीं बचा सकता।''

खुत्बा से फ़ारिग़ होकर आप सल्ल0 हुज्रए आइशा रज़ि0 में तशरीफ़ लाए, आप सल्ल0 को हज़रत फ़ातिमा ज़ोहरा रज़ि0 से बेहद मुहब्बत थी (अस्नाए अलालत) उनको

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब बअ्सु उसामा रज़ि0

जब लोगों ने छोड़ दिया तो हमने पनाह दी, आप (सल्ल0) मुफ़्लिस आए थे हमने हर तरह की मदद की।"

यह कहकर आप सल्ल0 ने फ़रमाया "तुम यह जवाब देते जाओ और मैं यह कहता जाऊंगा कि तुम सच कहते हो, लेकिन ऐ अंसार! क्या तुमको यह पसंद नहीं कि और लोग ऊंट और बकरियां ले जाएं और तुम मुहम्मद (सल्ल0) को अपने घर ले आओ।"

अंसार बेइख़्तियार चीख़ उठे कि "हमको सिर्फ़ मुहम्मद सल्ल0 दरकार हैं" अक्सरों का यह हाल हुआ कि रोते रोते दाढ़ियां तर हो गईं, आप सल्ल0 ने अंसार को समझाया कि मक्का के लोग जदीदुल इस्लाम हैं, मैंने इनको जो कुछ दिया हक़ की बिना पर नहीं, बल्कि तालीफ़े क़ल्ब के लिये दिया।[1]

हुनैन के असीराने जंग अब तक जिइर्राना में महफ़ूज़ थे, एक मुअ़ज़्ज़ज़ सफ़ारत आंहज़रत सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई कि असीराने जंग रिहा कर दिये जाएं, यह क़बीला वह था कि आप सल्ल0 की रज़ाई वालिदा हज़रत हलीमा उसी क़बीला की थीं, रईसे क़बीला ने तक़रीर की और आप सल्ल0 की तरफ़ मुख़ातब होकर कहा "जो औरतें छप्परों में महबूस हैं उन्हीं में आप सल्ल0 की फूफियां और आप सल्ल0 की ख़ालाएं हैं, खुदा की क़सम सलातीने अरब में से किसी ने हमारे ख़ानदान का दूध पिया होता तो उनसे बहुत कुछ उम्मीदें होतीं और आप से तो और भी ज़्यादा

(1) सहीहुल बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वतुत्तवाइफ़ व किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबुल अंसार